सच्चिदानन्द-स्वरूप

द्वारा
श्री ओम्प्रकाश भगत
जयपुर

कीमत : बीस रुपया

प्रकाशक
श्री निजानन्द आश्रम ट्रस्ट
रतनपुरी, जिला मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

Nijanand App

प्राक्कथन

ब्रह्म जिज्ञासा स्वाभाविक है। धामवासी श्री ओम प्रकाश भगत द्वारा इस विषय में किया गया प्रयास सराहनीय है। विद्वान् एवं मनीषी पाठकों से अपेक्षा है कि वे इसका अध्ययन कर इसमें यदि कोई त्रुटि हो तो उसे सुधार लें ओर ऐसी भूल जो क्षम्य न लगे, वह प्रकाशक को लिखकर भेजने का अनुग्रह करें।

निजानन्द आश्रम ट्रस्ट
रतनपुरी, जि. मुजफ्फरनगर।

सच्चिदानन्द-स्वरूप

आज इस संसार में जो वातावरण बना हुआ है उससे कोई मनुष्य सन्तुष्ट दिखाई नहीं देता। हमारे इस ब्रह्माण्ड में रहने वाले सभी लोग अशान्त हैं। तरह-तरह के धर्मों में आस्था रखने वाले लोग शान्ति की खोज में निरन्तर प्रयत्नशील हैं। हर ओर जहाँ भी दृष्टि डालें वहीं एक स्वर सुनाई दे रहा है कि हमें शान्तिपूर्वक रहना चाहिए। परन्तु जब सभी लोग शान्ति चाहते हैं तो बड़ा आश्चर्य होता है कि शान्ति मिलती क्यों नहीं ? किसी भी कार्य को जब सभी लोग करना चाहें और वह न हो, क्या ऐसा सम्भव है? कदापि नहीं। सारे विश्व के लोग चाहते हैं कि शान्ति मिले। परन्तु विश्व का हर समाज, हर धर्म यही चाहता है कि जो कुछ वह कहे सभी लोग उसे मानें। साथ-साथ उसका यह भी कहना है कि जो कुछ वह कह रहा है वही सत्य है और सभी लोग उसी के बताये रास्ते पर चलकर ही शान्ति पा सकते हैं। बस यही एक बात अशान्ति की जड़ है। वातावरण कभी भी अशान्त नहीं रहा। वह तो सदा शान्त रहता है, परन्तु जब हम अपने विचारों को ही श्रेष्ठ मानकर सबको उसमें बाँधना चाहते हैं तभी हम स्वयं और हमारा वातावरण अशान्त हो जाता है। अपनी बात को मनवाने के लिए हम कटाक्ष की नीति अपनाते हैं। इस कारण हमारा आपस में विरोध शुरू हो जाता है और इस चक्कर में सारा वातावरण दूषित होकर मानसिक अशान्ति का कारण बनता है।

इस तरह सभी लोग अपने विचारों को श्रेष्ठ साबित करने की होड़ में एक-दूसरे से दूर होते चले जाते हैं। हमारा आपस का मेल-जोल और भाईचारा नफरत का शिकार होकर दलों में बँट जाता है। तरह-तरह की गुटबन्दियाँ विरोधी वातावरण पैदा करके हमें एक-दूसरे का दुश्मन बना देती हैं। जब दुश्मनियाँ आपस में बढ़ती हैं तो जंग का रूप ले लेती हैं। हम इन्सान होकर भी जानवरों की तरह जंग करके एक-दूसरे को मार डालते हैं। यही नफरत जब चारों ओर फैलती है तो हर व्यक्ति यह चाहते हुए भी कि हम सब एक हैं, हमें एक होकर रहना चाहिए, नहीं रह पाता और परिस्थितियों के वश में होकर सदा अशान्ति

Nijanand App

की गोद में सो जाता है और फिर उत्पन्न होता है कोई महामानव या महान् तत्त्वज्ञ, जो होता तो हममें से ही है, परन्तु वह उद्यम करता है सबको सही रास्ता दिखाने का, साहस करके खुद को मिटा डालता है और स्वयं तो सूली पर चढ़ जाता है परन्तु पीछे लोगों के लिए एक आदर्श छोड़ जाता है।

प्रश्न उठता है कि क्या सभी लोग उसके आदर्शों को मानते या उस पर अमल करते हैं या नहीं ? यहाँ फिर वही कारण उत्पन्न होता है कि वह मनुष्य जिस भी गुट या जाति का हुआ सिर्फ वही लोग उसे अपना समझ कर उसके विचारों को अपनाते हैं और उस पर केवल अपना अधिकार जमाकर एक धर्म की शिला रख देते हैं। जब यह विचार धर्म के बन्धनों में फँस कर सीमित हो जाते हैं तो फिर दूसरे लोग उन विचारों पर चलना तो दूर की बात, उन्हें पढ़ना भी उचित नहीं समझते। वह विचार जो सबके लिए थे केवल एक गुट या एक जाति या धर्म के विचार बनकर सीमित हो जाते हैं। इस तरह जन्म लेते हैं हमारे धर्म। आज यह मुख्यतः चार नामों से सम्बोधित किये जाते हैं जिसे हम हिन्दू, मुसलमान, सिख और ईसाई के नामों से जानते हैं। इससे भी जब लोगों को शान्ति नहीं मिलती तब पुनः हर धर्म में कई-कई पन्थ बनाकर अपने नये विचार बना लेते हैं। कोई भी मनुष्य इस बात पर विचार नहीं करता कि यदि हम मुसलमान हैं और हमारे हजरत मुहम्मद साहब ने जिन बातों का जिक्र किया है या जिस अल्लाह-तआला के बारे में बताया है वही बात कहीं हिन्दुओं के महापुरुषों ने तो नहीं कही। उसी अल्लाह-तआला का वर्णन कहीं अपनी भाषा में तो नहीं किया या वही बात ईसामसीह ने अपने मानने वालों से तो नहीं कही या उसने भी उसी अल्लाह- तआला का जिक्र तो नहीं किया या सिख धर्म के मानने वालों के गुरू नानक देव ने भी वही बात तो नहीं कही या कहीं उन्होंने भी उसी अल्लाह-तआला का जिक्र तो नहीं किया है। यह विचारने या समझने की कोई भी चेष्टा नहीं करता। इसी तरह न तो कोई हिन्दू कुराने-पाक को जानना चाहता है और न ही कोई ईसाई धर्म के ग्रन्थों या सिखों की गुरुवाणी को ही लेना चाहता है। यही कारण है जो आज सारे विश्व का मानव एक होते हुए भी अलग-अलग है।

सारा वातावरण दूषित हो गया है। आपसी झगड़ों में उलझा मनुष्य अशान्ति का शिकार बनकर एक-दूसरे को लूटने, मारने में जुटा हुआ है। हर ओर अशान्ति ही अशान्ति फैली नजर आती है। यदि किसी भी कौम ने या किसी भी समाज ने यह जान लिया होता कि जो बात कुराने-पाक कह रहा है, वही बात हिन्दुओं

की गीता, भागवत् कह रही है, और जो बात गीता भागवत् कह रही है वही बात बाईबल कह रही है, या जो बात बाईबल कह रही है वही बात गुरुवाणी कह रही है और यदि सब ग्रन्थ एक ही बात कह रहे हैं तो फिर हम सब एक होते और पारस्परिक द्वेष, कलह एवं अशान्ति न होती।

जब हम सब एक हुए तो झगड़े खत्म हो जायेंगे और जब झगड़े खत्म हो जायेंगे तब मानव मानव से प्रेम करने लगेगा। जब मानव का मानव से प्रेम हो जायेगा तब वातावरण स्वतः ही शान्त हो जायेगा और हर ओर हमें शान्ति ही शान्ति प्रतीत होगी। हर मनुष्य अपने मन व मस्तिष्क में शान्ति ही शान्ति महसूस करेगा।

अब प्रश्न यह उठता है कि वास्तव में सभी धर्म ग्रन्थ क्या एक ही बात कह रहे हैं ? आइये ! विचार करें कि क्या सभी धर्म ग्रन्थ उसी एक ही परमात्मा का रास्ता बताते हैं या कि अलग-अलग। तो सबसे पहले कुराने-पाक पर विचार करेंगे।

दीन-ए-इस्लाम मुसलमानों के वैसे तो कई ग्रन्थ हैं। मुख्य रूप से कुराने-पाक ही है जिसे रब्बानी कलाम कहा गया है और कुराने-पाक में फरमाये गये उसूलों को सभी मुसलमान मानते हैं। दीन-ए-इस्लाम का कहना है कि जो कुराने-पाक के कलामों को नहीं मानता है वह काफिर है। और जो इन कलामों को मानकर उन पर अमल करता है वही मोमिन अथवा सच्चा मुसलमान है। इसलिए हम कुराने-पाक में लिखी बातों को ही मुसलमानी धर्म का आधार मानकर कुराने-पाक में कही हुई रब्बानी कलाम याने खुदा की कही हुई बातों पर ही विचार करेंगे, तो हमें तीन पुरुषों का विवरण उसमें मिलेगा, जिसे कलमा कहा गया है।

"ला इलाह इलिल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि "

अर्थात् ला-इलाह-अल्लाह यह तीन शब्द हैं जो तीन पुरुषों का विवरण हमें बताते हैं। सर्वप्रथम "ला" कहा है। इसका शब्दार्थ हम लें तो "ला" का अर्थ फना हो जाने वाला अर्थात् 'नाशवान' है। इसके बाद आता है "इलाह" जिसका अर्थ है "सत्य या अखण्ड"। इसके बाद कहा है "अल्लाह" अर्थात् 'खुदा', 'हक' या 'परमात्मा'। इस अल्लाह शब्द को मुहम्मद साहब से जोड़ा गया है और कहा गया है कि अल्लाह-तआला के रसूल बनकर मुहम्मद साहब इस फानी दुनिया में आये और रब्बानी कलाम अर्थात् खुदा की कही हुई बातें उन्होंने कहीं जिसे कुराने-पाक कहा गया है।

Nijanand App

"ला" के अन्दर तीन पुरुष हैं जिसको मैकाइल, अजराइल और अजाजील कहा गया है। इन तीनों को फरिश्ते कहा गया है। यह इस फानी दुनिया को चलाने वाले हैं। यही तीनों फरिश्ते इस नाशवान् जगत याने फानी दुनिया के मालिक कहे गये हैं। इसके अधीन 14 तबक अर्थात् चौदह लोक और एक आसमान आता है। इस "ला" के बाद आता है इलाह जिसे नूर जलाल भी लिखा है, जो अक्षरधाम में रहता है और इस तरह की करोड़ों फानी दुनियाओं को बनाने और मिटाने का कार्य करता रहता है। इसी के हुक्म से हमारे जैसे करोड़ों संसार बनते और मिटते हैं। इसके बाद आता है "अल्लाह" जिसे नूर जमाल भी कहा गया है। यह सबका मालिक है, खाविन्द है और अर्शे अजीम में रहता है। इनके साथ उनकी रूहें भी रहती हैं। सबसे बड़ी रूह को रूह-अल्लाह कहा गया है।

कुराने-पाक के अनुसार चार आसमान हैं। इन्हें नासूत का आसमान, मलकूत का आसमान, जबरूत का आसमान और लाहूत का आसमान कहा गया है। आसमान का अर्थ है जगत जो इस फानी दुनियाँ से शुरू होकर खुदा के घर तक कहा गया है। सबसे पहले है "नासूत", जिसका अर्थ है मृत्यु लोक। दूसरा है "मलकूत" जिसका अर्थ है "बैकुण्ठ"। तीसरा है "जबरूत" जिसे अक्षरधाम या नूर जलाल का ठिकाना कहा गया है। चौथा है "लाहूत" जिसे अर्शे अजीम या परमधाम कहा गया है।

मुहम्मद साहब जब इस फानी दुनिया में आये तो उनको मेयराज हुआ अर्थात् खुदा के दर्शन हुए। तब खुद खुदा ने उनसे नब्बे हजार "हर्फ" कहे जिसमें तीस हजार को जाहिर करने का हुक्म हुआ। तीस हजार को जाहिर करने का अख्तियार दिया कि यह तीस हजार यदि तुम चाहो तो जाहिर करो और तीस हजार को छुपा कर रखने का हुक्म हुआ। खुदा ने फरमाया कि इन तीस हजार को हम खुद आकर जाहिर करेंगे। ठीक वैसे ही मुहम्मद साहब ने तीस हजार हर्फ जाहिर किये। इस पर चलने का सब मुसलमानों को हुक्म हुआ। वह थे शरीअत के शब्द जिनमें सभी मुसलमानों को पाँच वक्त का नमाज, रोजा, जकात, इत्यादि बातों से ईमान की राह पर चलना बताया जो सबके लिए लाजमी रखा। उन्होंने कहा कि बाकी के तीस हजार शब्द जब खुद खुदा आयेगा और मैं भी उनके साथ आऊँगा तब जाहिर करेंगे। यह शब्द थे खुदा की सूरत क्या है? वह अर्शे अजीम कहाँ है? जोय नदी क्या है? हौज कौसर क्या है? जब "नूह-नबी" के घर तूफान आया और वह अपनी उम्मत को कश्ती में बिठाकर एक बाग में

ले गये, वह बाग कौन सा है? जब मुहम्मद साहब के फरमाया कि खुदा खुद आयेगा और मैं भी उनके साथ आऊँगा तब उनके यारों में से अली अबूबकर और जैद ने पूछा था कि ए-हजरत साहब, आप कब आयेंगे? आने के समय में कुछ खास निशान बताएँ ताकि लोग आपको और खुदा को पहचान लें।

हजरत मुहम्मद साहब ने फरमाया था कि अल्लाह-तआला इमाम-मेंहदी के रूप में, फर्दारोज को आयेंगे। सात निशान भी बताये कि धरती पर आजूज-माजूज जाहिर होंगे, काना दज्जाल पैदा होगा, कब्रों से मुर्दे उठेंगे, सूरज मशरिक की बजाय मगरिब से उदय होगा तब समझ लेना कि मैं और खुदा आ चुके। तब उन्होंने पूछा था कि फर्दारोज कब होगा? (फर्दारोज का अर्थ है कल का दिन) तब हजरत ने फरमाया, जब दुनिया के साल हजार होंगे तब खुदा का दिन एक होगा और जब दुनिया के साल सौ होंगे तब खुदा की एक रात होगी याने ग्यारह सौ साल अर्थात् ग्यारहवीं सदी में आयेंगे और आकर कयामत करेंगे। तब जुमअः की नमाज पढ़ा कर सबको साथ ले जावेंगे। तब खुद खुदा काजी होकर बैठेगा। इस तरह की और भी बातें कहीं। कुराने-पाक का पहला पारः है "अलिफ लाम् मीम्" इसमें लिखा है कि इसका अर्थ जो भी आकर खोलेगा तुम उसे एक इन्सान न समझना वह खुद खुदा होगा।

हिन्दू धर्म—हिन्दुओं के ग्रन्थों में से सबसे पहले श्री कृष्ण भगवान द्वारा कही गयी गीता को लेते हैं। श्रीमदभगवद्गीता के पन्द्रहवें अध्याय में सोलहवाँ श्लोक है जिसमें श्रीकृष्ण अर्जुन को सम्बोधित करते हुए कहते हैं, हे अर्जुन ! मैं परमात्मा नहीं हूँ।

"द्वाविमौ पुरुषौ लोके, क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि, कूटस्थोऽक्षर उच्यते॥"
"उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।"

सर्वप्रथम है क्षर पुरुष, जो सदा बनता और मिटता है। दूसरा है अक्षर पुरुष जो अखण्ड अनादि है और हमारे आप जैसे करोड़ों ब्रह्माण्डों को बनाता और मिटाता है। तीसरा पुरुष है "उत्तम पुरुष", केवल उसी को ही परमात्मा कहा जा सकता है।

गीता के इस श्लोक से हमें पता चला कि जिस तरह कुराने-पाक में तीन पुरुषों का वर्णन आया है "ला", "इलाह" और "अल्लाह", इसी तरह हिन्दुओं के ग्रन्थ गीता में भी तीन पुरुषों का वर्णन क्षर पुरुष, अक्षर पुरुष, उत्तम पुरुष है। जिस तरह "ला" का अर्थ है मिट जाने वाला, इसी तरह "क्षर" का अर्थ मिट

Nijanand App

जाने वाला। दूसरा पुरुष है "इलाह" जिसका अर्थ है सत्य या अखण्ड जिसे "अक्षर" कहते हैं। अल्लाह जिसे खुदा, हक या परमात्मा कहा गया है को ही "उत्तम पुरुष" कहा गया है।

क्षर पुरुष के अन्दर हिन्दुओं के ग्रन्थ तीन ही पुरुषों का वर्णन करते हैं, ब्रह्मा, विष्णु और महेश। ठीक यही तीनों नाम कुराने-पाक में भी आए हैं—मैकाइल, अजराइल और अजाजील। इन्हें फरिश्ते कहा है और हिन्दुओं में देव कहा है। इसका तात्पर्य यह निकला कि केवल भाषा बदली हुई है। बात दोनों ने एक ही कही है।

अब देखना है कि जिस तरह हजरत मुहम्मद साहब ने अल्लाह के इमाम-मेंहदी बनकर इस धरती पर आने के निशान दिये हैं क्या हिन्दुओं के ग्रन्थों में भी यही लिखा है कि नहीं। इस विषय पर हम हिन्दुओं के ग्रन्थ 'भविष्य पुराण' को लेंगें। भगवान शिव सदा ध्यान में लीन रहते हैं और उमा जो उनकी धर्म पत्नी हैं वे सदा उनके पास बैठी उनकी सेवा करती हैं। एक दिन उमा के मन में आया कि भगवान शिव सदा समाधि में लीन रहते हैं और मैं खाली बैठी रहती हूँ सो इस बार जब भगवान शिव समाधि को तोड़ेंगे तब मैं उनसे पूछूँगी कि आप किसका ध्यान करते हैं कृपया मुझे भी बताइए ताकि मैं भी उनका ध्यान धर कर आवागमन के चक्कर से छूट जाऊँ। जब से यह सृष्टि बनती है और जब तक लय नहीं हो जाती भगवान शिव को कभी जन्म नहीं लेना पड़ता और मुझे भगवान शिव की पत्नी बने रहने के लिए कई बार जन्म लेना पड़ता है। अब यदि भगवान शिव मुझे वह नाम बता देवें जिसकी अराधना करते हैं तो मैं भी उन्हें ध्यान कर सदा जब तक भगवान शिव बने रहते हैं, बनी रहूँ। मुझे इनके लिए कई जन्म न लेने पड़ें। इस बार भगवान शिव ने जब अपनी समाधि को भंग किया तो उमा ने यही बात भगवान शिव से कही, हे नाथ! मैंने आज तक आपसे कभी कुछ नही माँगा परन्तु इस बार मैं यह माँगती हूँ कि आप मुझे भी उनका नाम व स्थान बता देवें जिनकी आप आराधना करते हैं, ताकि मैं भी उसे ध्यान कर आपकी तरह आवागमन से मुक्त होकर सदा आपके साथ रहूँ। इसके उत्तर में भगवान शिव ने उमा से कहा, हे उमा! मैं अपनी परआतम के स्वप्न के स्वरूप से उत्पन्न होता हूँ और जब यह ब्रह्माण्ड अपनी आयु पूरी कर लय हो जाते हैं तो मैं स्वप्न से जागकर अपनी परआतम में वापस चला जाता हूँ। परन्तु तुम्हारा जन्म प्रकृति के आधीन होता है और तुम्हारी अपनी कोई परआतम नहीं है। केवल तुम स्वप्न के ब्रह्माण्ड में बनती हो और मिट जाती हो। तुम्हें सदा प्रकृति के हिसाब से आयु

समाप्त कर मिटना पड़ता है। तुम्हारा पुनः जन्म होने पर मैं तुमको फिर से अपना लेता हूँ। तुम्हारा जन्म नींद का होने के कारण तुम न तो वह ज्ञान सुन सकोगी और न उसका नाम व स्थान जान सकोगी। इसलिए तुम इस बात की जिद मत करो। परन्तु उमा ने इस बात को न मानकर पुनः प्रार्थना की। तब भगवान शिव उस पारब्रह्म का ज्ञान सुनाने को तैयार हो गये जिसे शास्त्रों में "अमर-कथा" का नाम दिया है।

भगवान शिव उमा को ज्ञान सुनाने के लिए घने जंगल में ले गये। वहाँ जाकर उन्होंने अपनी शक्ति द्वारा जंगल में रहने वाले पशु-पक्षी तथा सभी प्रकार के जीवों को वहाँ से हटा दिया। पारब्रह्म का ज्ञान कोई अन्य जीव न सुने और सिर्फ उमा ही उसे सुने, इसलिए उन्होंने ऐसा किया था। जब सब प्रकार के जीवों को जंगल से हटा दिया तब वह उमा से बोले, हे उमा! अब मैं तुमको वह पारब्रह्म का ज्ञान सुनाने जा रहा हूँ जिसे ब्रह्माण्ड में आज तक किसी ने भी नहीं सुना। यदि इस ज्ञान को कोई भी पशु-पक्षी सुन ले तो वह भी इस क्षर के ब्रह्माण्ड को पार करके अखण्ड में चला जावेगा। इसलिए मैंने यहाँ से सभी जीवों को अपनी शक्ति द्वारा हटा दिया है। अब मैं अपने ध्यान द्वारा पार का वर्णन करूँगा। चूँकि मेरी आँखें बन्द होंगी और ध्यान परा-शक्ति में होगा इसलिए तुम 'हाँ' करती रहना ताकि मुझे तुम्हारी 'हाँ' की आवाज सुनाई देती रहे जिससे मैं समझूँ कि तुम सो नहीं गयी हो। हो सकता है कि जब मैं इस संसार के ज्ञान का वर्णन करने के बाद पार पहुँचूँ और वहाँ का ज्ञान सुनाना शुरू करूँ तो तुम्हारे जीव में उसे सुनने की ताकत न होने के कारण तुमको नींद आ जावे। तुम्हें नींद आने पर तुम्हारी 'हाँ' मुझे सुनाई नहीं देगी, तब मैं ज्ञान सुनाना बन्द कर दूँगा। इस पर उमा ने कहा कि मैं आपकी आज्ञा का पालन करके 'हाँ' बोलती रहूँगी।

भगवान शिव ने अमर कथा सुनानी शुरू की। कुछ ऐसा हुआ कि जंगल में जिस पेड़ के नीचे बैठकर भगवान शिव उमा को अमर-कथा सुना रहे थे उसी पेड़ पर एक तोते का घोंसला था। उस घोंसले में एक तोते का बच्चा मरणासन्न अवस्था में बेहोश पड़ा था। वह भगवान शिव की शक्ति की आवाज से भी न जागा और उसी घोंसले में पड़ा रह गया। जिस समय भगवान शिव समाधि में लीन हुए और अमर-कथा सुनानी प्रारम्भ की तो उमा ने "हाँ" की आवाज देनी प्रारम्भ कर दी। जब तक भगवान शिव नश्वर जगत के ज्ञान का वर्णन करते रहे, तब तक उमा सुनती रहीं और आवाज देती रहीं, परन्तु जब परे का ज्ञान सुनाना शुरू किया, तब उमा सो गयीं। जिस समय भगवान शिव ने उमा से बातें करनी शुरू की थीं

Nijanand App

उसी समय वह मरणासन्न अवस्था में पड़ा तोता जाग गया और जैसे-जैसे बात आगे बढ़ी वह तोता भी उसे सुनकर स्वस्थ होता चला गया। सारा नाशवान जगत का ज्ञान सुनने के बाद जब तोते ने देखा कि माता उमा को अब नींद आ गयी है, तब वह उमा के स्थान पर 'हाँ' की आवाज करने लगा। भगवान शिव पार का सारा ज्ञान सुनाते रहे। ज्ञान सुनाने की समाप्ति पर उन्होंने अपनी समाधि को भंग किया और देखा कि उमा सो रही हैं। उसी समय उमा को जगाया। उमा ने क्षमा माँगते हुए कहा कि नाथ ! जब आप नाशवान जगत के ज्ञान को पूरा कर चुके थे उसी समय मुझे नींद आ गयी थी। इसलिए मैं पार के ज्ञान को नहीं सुन सकी। अतः कृपया उसे मुझे अब सुनाओ, अब मैं पूरी तरह जाग्रत हूँ। इस पर भगवान शिव ने कहा कि यदि तुम सो गयी थीं तो फिर हुँकार किसने भरी थी। मैंने तो हुँकार सुनकर पार का ज्ञान सुना दिया है वह दुबारा किसी कीमत पर नहीं सुनाया जा सकता है। लेकिन पहले मुझे यह देखना है कि हुँकार किसने भरी।

भगवान शिव को एक तोता पेड़ पर से उड़ता हुआ दिखाई दिया। वह समझ गये कि हुँकार इसी तोते ने दी थी। उसी समय वह उसके पीछे दौड़ पड़े। तोता उड़ता-उड़ता एक बस्ती में चला गया और पारब्रह्म के ज्ञान के बल से उसने वहीं गाँव में अपने तोते का शरीर छोड़ा और अपने जीव को गाँव की एक महिला के उदर में समा लिया। भगवान शिव ने सोचा कि इस ज्ञान को सुनने वाले को इस संसार में नहीं रहने दूँगा। इस कारण वह उसी गाँव में उस महिला के मकान के सामने एक पेड़ के नीचे बैठ गये। साथ ही उमा भी वहीं पर बैठ गयीं। कहते हैं कि भगवान शिव बारह साल तक बैठे रहे। उधर तोते के जीव ने बारह साल तक महिला के उदर से जन्म ही नहीं लिया। अन्ततः तंग आकर भगवान शिव बारह साल बाद वहाँ से चले गये। तब तोते के जीव ने उस महिला के उदर से उत्पन्न होकर तत्काल जंगल की राह ली। संस्कृत भाषा में तोते को शुक कहते हैं। इस तरह वह शुक के जीव ने जन्म लेकर शुकदेव मुनि की पदवी प्राप्त की। यह भविष्य पुराण में लिखा है। इसमें इस कलियुग के अन्दर बुद्ध निष्कलंक अवतार होने की सारी बातें लिखी हैं। इसमें लिखा है कि जब उमा भगवान शिव के साथ बारह साल बाद वहाँ से लौटकर अपने स्थान पर वापस आयीं, तब पुनः रो-रोकर भगवान से उसी ज्ञान को जानने के लिए प्रार्थना करने लगीं। तब भगवान शिव ने उमा से कहा, हे उमा! तू चिन्ता न कर जिनके ज्ञान को तू सुनना चाहती है वह स्वयं अपनी आत्माओं के साथ नश्वर जगत में आ रहे हैं। तब तुम उनके

ज्ञान के साथ-साथ उनके दर्शन करके भव सागर से पार हो जाना। वह इस संसार में आकर स्वयं अपना ज्ञान सुनायेंगे। उसे सुनकर इस नश्वर जगत में रहने वाले जीव, जो कभी मुक्त नहीं होते, वह भी मुक्ति प्राप्त कर अखण्ड में चले जायेंगे।

'भविष्य पुराण' में सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग इन चार युगों का वर्णन किया गया है। सतयुग में कृत, कृतदत्त, अन्त, मुचुकुन्द, भैरवानन्द, कम्भो, आदि, हिरणाकश्यप, प्रह्लाद, वलिलोचन, वलिभुगत, लोचनवलि, वाणासुर, कपिलाक्ष, कपिलभद्र, जरासरी, धूम्रऋषि ।7: त्रेतायुग में ब्रह्मा, मारीच, कश्यप, सूरज, तवक्षत्र, अक्षयभा, अरण्यभा, विश्वामित्र, महामन्त्र, चिमन, भद्र-उदवन, त्रिशंकु, हरिश्चन्द्र, रोहिताश्व, मान्धाता, सगर, आशामित्र, भगीरथ, दिलीप, रघु, अज, दशरथ, रामचन्द्र, लव, अन्तभान, कयलरवी, वभ्रुवाहन, सुदर्शन, अग्निवर्ण 29 उल्लेखनीय राजा हुए। द्वापर युग में इन्द्र, चन्द्रमा, पुरुरवा, अय, निर्मोक्ष, शान्तनु, चित्र, विचित्रवीर्य, व्यास, पाण्डु, अर्जुन, अहिवर्ण कुमार, सेत्रनख, शान्तनु, वलीवान, निरवान, वलीचक्षु, परीक्षित, जनमेजय ।9 राजा हुए। उसके बाद कलियुग का आगमन हुआ। कलियुग में यदु, अजयपाल, महिपाल, गन्धर्वसेन, विक्रमादित्य, विक्रमाचक्र, भोज, मोहम्मद गोरी, अलाउद्दीन, नसीरुद्दीन, लोढ़ा महमूद, महमूद, शेरशाह सूरी, तैमूरलंग, बाबर, हुमायूँ, अकबर, सलीमशाह, शाहजहाँ के उपरान्त औरंगजेब राजा होगा और औरंगजेब के समय ही महर्षि वेद व्यास के अनुसार जैसा भविष्य पुराण में उल्लेख है, निष्कलंक बुद्ध-कल्कि अवतार होगा। इसी समय पूर्ण परात्पर परब्रह्म अपनी रूहों अर्थात् आत्माओं के साथ आयेंगे। आगमन के प्रमाण में यह कहा गया है कि स्वयं को प्रकट करने के वर्ष में ।। माह का वर्ष होगा तथा रात्रि को घूमकेतु का उदय होगा।

हरिवंश पुराण में सच्चिदानन्द पूर्ण ब्रह्म के आने तथा समय के विषय में निम्न कहा गया है :

अभाविनो भविष्यन्ति मुनयो ब्रह्मरूपिणः।
उत्पन्ना ये कृतयुगे (कलियुगे) प्रधानपुरुषाऽऽश्रयाः।
कथायोगेन तान्सर्वान् पूजयिष्यन्ति मानवाः।
यस्य पूजा प्रभावेन जीवसृष्टि समुद्धरः।। भविष्य पर्व अ. 4

जो कभी इस विश्व में उत्पन्न नहीं होते, ब्रह्मस्वरूप व अनेकस्वरूप मुनिजन कलियुग में उत्पन्न होंगे जो प्रधान पुरुष परमात्मा के आश्रय में थे।

'भविष्य दीपिका' में गुरु बशिष्ठ भी श्री राम से कहते हैं :

Nijanand App

दश सहस्त्र वर्षाणि पन्च सूर्येन्दु पर्वणि।
कलिक्षयः भविष्यन्ति सप्ततारैक स्वगृही।।
शालिवाहनशाकात् तु गतम् षोडशक्रम शतम्।
जीवोद्धाराय ब्रह्माण्डे कल्किः प्रादुर्भविष्यति।। अ. 603।।

अर्थात् कलियुग की आयु जब सूर्य एवं चन्द्र-ग्रहण लगने आदि से क्रमशः क्षीण हो जायेगी और शालिवाहन शाका के सोलह सौ वर्ष व्यतीत हो जायेंगे, तो जीव-उद्धार के लिए कल्कि अवतार अथवा प्रादुर्भाव होगा।

इस तरह जब हिन्दुओं के ग्रन्थों को देखा जाता है तो वही बात पायी जाती है जो हजरत मुहम्मद साहब ने फरमाया था कि ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहदी साहब के स्वरूप में अल्लाह (पूर्ण ब्रह्म) आयेंगे। औरंगजेब बादशाह के समय ग्यारहवीं सदी थी। इस प्रकार कुराने-पाक की मुसलमानों की बातें और हिन्दुओं के ग्रन्थों की बातें बिल्कुल मिल गयीं। जो बात मुसलमानों ने कही, वही बात हिन्दुओं ने कही। इस तरह केवल भाषा का फर्क है। हिन्दू और मुसलमानों में कोई फर्क दिखाई नहीं देता।

ईसाई धर्म के मानने वालों के पास मुख्य रूप से पवित्र "बाईबल ग्रन्थ" है। देखना है कि क्या "बाईबल" भी यही बात कर रही है अथवा नहीं? यदि यही बात बाईबल भी कह रही है तो फिर इनमें और हिन्दू या मुसलमानों में अन्तर केवल भाषा का ही कह सकते हैं। आइये अब बाईबल पर विचार करें :

ईसाई धर्म—जिस प्रकार हिन्दू धर्म के मुख्य ग्रन्थ चार वेद हैं, इसी तरह पाश्चात्य धर्मों के चार कतेब हैं जिन्हें अंजील, जबूर, तौरेत और फुरकान (कुरान) कहा है। इसमें कुराने-पाक इस्लाम धर्म का है। अंजील-जम्बूर-तौरेत का वर्णन बाईबल में किया गया है। जिस तरह कुराने-पाक में तीन पुरुषों का जिक्र है—ला, इलाह और अल्लाह, उसी तरह हिन्दुओं के ग्रन्थों में भी तीन पुरुषों का वर्णन है—क्षर, अक्षर और उत्तम पुरुष। ठीक इसी तरह बाईबल में भी तीन ही पुरुषों का वर्णन है GOD, CREATOR, SUPREME TRUTH GOD। प्रथम है 'GOD' यह तीन अक्षरों से मिलकर बना है। पहला 'G' है जिसका अर्थ है 'Generator' अर्थात् पैदा करने वाला। दूसरा है 'O' जिसका अर्थ है 'Operator' अर्थात् चलाने वाला या पालन-पोषण करने वाला। तीसरा अक्षर 'D' जिसका अर्थ है 'Destroyer' या Destructor अर्थात् मारने वाला या नाश करने वाला। हिन्दू और इस्लाम ग्रन्थों में 'क्षर पुरुष' तीन कहे गये हैं। "कुराने-पाक" के अनुसार "मैकाइल" एवं हिन्दुओं के अनुसार "ब्रह्मा" बनाने का कार्य करते हैं। दूसरे "अजाजील" हिन्दुओं

के अनुसार 'विष्णु" हैं जो पालन-पोषण का कार्य करते हैं। तीसरे हैं अजराइल या महेश अथवा शिव जो नाश करने या मिटाने का कार्य करते हैं। इस तरह बाईबल के 'God' का अर्थ हुआ "क्षर" पुरुष जिसमें तीनों का विस्तार छिपा है—"जेनरेटर", "आपरेटर", "डिस्ट्रायर" का। हिन्दुओं ने इन्हें "क्षर पुरुष" और मुसलमानों ने "ला" पुरुष कहा और बाईबल ने इसे "गॉड" कहा। तीनों धर्मों में एक ही बात कही गयी। तीनों ने पहले पुरुष के एक जैसे कार्य बताये हैं।

दूसरे पुरुष को बाईबल ने CREATOR या TRUTH कहा। इसका अर्थ है सत्य पुरुष अथवा पहले के पुरुषों को उत्पन्न करने वाला। कुराने-पाक में इन्हें ही "इलाह" अथवा "नूरजलाल" कहा गया। हिन्दुओं के ग्रन्थ कह रहे हैं कि अक्षर अथवा सत्य या अखण्ड पुरुष इस फानी दुनिया अर्थात् नाशवान् जगत के चलाने वाले पुरुषों को बनाता और मिटाता है। तीसरा पुरुष बाईबल में SUPREME TRUTH GOD कहा गया है जो GOD पुरुष और TRUTH पुरुष से आगे यानी इन दोनों से SUPREME है। वही "परमात्मा" है। कुराने-पाक के अनुसार मुसलमानों ने, धर्म ग्रन्थों के अनुसार हिन्दुओं ने, बाईबल के अनुसार इसाइयों ने तीन पुरुषों का ही वर्णन किया। अन्तर केवल भाषा का ही नजर आता है। हिन्दुओं ने संस्कृत भाषा का प्रयोग करके बात कही, मुसलमानों ने अरबी भाषा का प्रयोग करके वही बात कही और इसाइयों ने अंग्रेजी या हिब्रू भाषा का प्रयोग करके वही बात कही।

इस प्रकार पहली बात जो "परमात्मा" के विषय में कही गयी है वह तो मिल गयी। अब देखें जो बात कुराने-पाक ने इमाम-मेंहदी के आने के बारे में कही और जो बात हिन्दू ग्रन्थों ने बुद्ध निष्कलंक अवतार के रूप में सच्चिदानन्द पूर्ण-ब्रह्म के आने के विषय में कही है, क्या यही बात बाईबल में भी कही गयी है या नहीं? इस पर बाईबल में क्या लिखा है वह देखें—बाईबल भी बुद्ध निष्कलंक अवतार और इमाम-मेंहदी की तरह ईसा-मसीह के दुबारा अपने माता पिता की महिमा सहित आने के संकेत देती है :

Thus said the Lord: 'Behold ! I myself will seek my sheep and will visit them out of all the places, where they have been scattared in the cloudy and dark day. And I will bring them out from the peoples and will gather them out of the countries and will bring them to their own Land' (Chapter 34 : 1)

Note : Here 'Sheep' means the chosen people of God, Who are meek and innocent like sheep.

Nijanand App

In connection with 'Own Land' or Heaven, the Proclamation made by Christ are note-worthy.

(1) "You are from below; I am from above. You are of this world, I am not of this world." (JOHN 8 : 25, page 1207)

(2) "One who has descended from Heaven will ascend to Heaven. How will you believe of the Heavenly things when I speak of that? We speak of what we know and we bear witness to what we have seen."

(3) "In my Father's House there are many rooms; if it were not so, I would have told you. I am going there to prepare a place for you. And if I go and prepare a place for you, I will come back and take you to be with me that you also may be where I am."

(JOHN 14 : 2, 3, page 1217)

The second coming of Christ according to the New Testament and Imam-Menhdi according to Quran and Budh Kalki according to Vedas are the names of one and only one power/Incarnation of God in different names. He is to appear publicly between 10th & 14th Century of Prophet Mohammad & 16th to 20th century of Christ. It has been so determined on the communions of Arch-angel Gabrial to Prophet Mohammed when he said, "He has to cover the distance of five hundred years in one step."

In this way the power/incarnation, who appears on the day, destined by God Himself, will bring East and West under the spiritual control, uprooting the external worship (कर्मकाण्ड अथवा शरीयत) which is the bone of contention amongst the followers of different faiths. He will overpower the devil and persuade to preserve the worship of trure God. Being a **Spiritual Warrior**, he has been addressed as **Budh-Kalki** in Scriptures. Kalki stands for horse and **Budh** (Intellect of Imperishable one) as a rider, He will strike the earth with the rod of his mouth and with the breath of his lips. He will slay the wicked. This description of Hindu Philosophy has been very beautifully recorded in the latter part of the Bible in the book 'Revelation' as follows—

"I saw heaven standing open and there before me was a white horse, whose rider is called Faithful and True. With justice he judges and makes war. His eyes are like blazing fire, and on his head are many crowns. Out of his mouth comes a sharp sword (ज्ञान रूपी तलवार) with which to strike down the notions. He has a name written on him that no one but he himself knows. He is dressed in a robe dipped in blood, and his name is the Word of God.

(Revelation 19 : 11-15, page 1393-1394)

"And this gospel of the kingdom will be preached in the whole world as a Testimony to all nations, and then the end will come."

(MATTHEW 24 : 14, page 1118)

नोट—यह उद्धरण श्री गुजारी लाल सिडाना द्वारा लिखित पुस्तक 'अवतार शिरोमणि बुद्ध कल्कि' से लिये गये हैं।

ईसा ने अपने दुबारा आने की और बातें भी बाईबल में लिखी हैं। मार्क अध्याय 8 : 38 में कहा है कि "जो कोई इस व्यभिचारी और पापी जाति के बीच मुझसे और मेरी बातों से लजायेगा, मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित आयेगा, तब उससे भी लजायेगा।

"If anyone is ashamed of me and my words in this adulterous and sinful generation, the Son of Man will be ashamed of him when he comes in his father's glory with the holy angels." (MARK 8 : 38, page 1139)

इन बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि बाईबल में भी वही बातें लिखी हैं, जो कुराने-पाक में इस्लाम धर्म की व हिन्दुओं के शास्त्रों में हिन्दुओं की। इन सब बातों का अवलोकन कर हम पूर्ण रूप से कह सकते हैं कि हिन्दू, मुसलमान और ईसाई में कोई भी ऊँचा या नीचा नहीं। सभी एक ही परमात्मा को मानकर उनकी बातें अपनी भाषा में कह रहे हैं।

अब सिख धर्म बचा है। तो आइए, देखते हैं कि 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' में क्या कहा गया है। यदि वह भी यह बात कर रहे हैं तो फिर चारों सिर्फ कहने को ही नहीं, वरन् अपनी-अपनी वाणियों, सिद्धान्तों व परमात्मा के रूपों से भी एक हुए। जब सभी एक हुए, तो फिर किसी को किसी से विरोध किस बात पर है।

सिक्ख धर्म—श्री गुरुवाणी 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' में श्री गुरु नानक देव लिखते हैं—

"क्षर से परे अक्षर से पारा, वाहि पुरुष का करो विचारा"।।

"नानक एकौ सिमरिए, जनम मरन दुख जाए।
दूजा काहे सिमरिए, जन्मिये और मर जाए।।"

"परम पुरुष का हूँ मैं दासा, देखन आयो जगत् तमासा"

(गुरू गोविन्द सिंह जी, दसवें गुरू)

उपरोक्त गुरुवाणी की चौपाइयाँ भी तीन ही पुरुषों का बोध कराती हैं। यह तीन पुरुष जो नानक जी की वाणी में आये हैं वह हैं—क्षर, अक्षर तथा पार पुरुख। यहाँ भी क्षर पुरुष कहा है जिसका अर्थ है मिट जाने वाला। दूसरा अक्षर पुरुष कहा है जो सत्य या अखण्ड है। तीसरा पार पुरुख कहा है—जिसको वह परमात्मा का रूप कहते हुए कह रहे हैं कि केवल यही परमात्मा है जिसके ध्यान

Nijanand App

से मनुष्य आवागमन से मुक्त हो सकता है। यदि इसके सिवाय किसी और की पूजा अथवा ध्यान किया जाता है तो मनुष्य सदा जन्मता और मरता रहेगा। इसका तात्पर्य यह हुआ कि जिस प्रकार बाईबल, कुराने-पाक और हिन्दुओं के शास्त्रों में तीन पुरुषों का वर्णन है उसी प्रकार श्री गुरुवाणी में भी तीन ही पुरुषों का वर्णन है और ठीक उसी प्रकार तीसरे पुरुष को ही परमात्मा कहा गया है जिस तरह हिन्दू, मुसलमानों और ईसाइयों के ग्रन्थ तीसरे पुरुष को ही परमात्मा कह रहे हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि केवल अपनी-अपनी भाषा लेकर संसार के सभी धर्म एक ही परमात्मा को मान रहे हैं। अन्तर केवल भाषा का है। यह वही बात हुई कि एक जगह एक बाल्टी भर कर एक द्रव्य रख दिया गया और हिन्दू ने आकर कहा कि मुझे एक गिलास 'जल'' दो। मुसलमान ने कहा मुझे 'आब' दो। ईसाई ने आकर कहा मुझे वाटर (Water) दो और सिख ने कहा मुझे 'पानी' दो। ले तो सभी एक ही वस्तु गये, परन्तु उसका नाम अपनी भाषा में रखकर अपनी ही बात को बड़ा बताने लगे। हिन्दू कहने लगा मेरा जल सबसे उत्तम है, जब तक तुम जल नहीं लोगे तुम्हारी प्यास नहीं बुझ सकती। ईसाई ने कहा गलत कह रहे हो, जब तक तुम वाटर (Water) नहीं पियोगे, तुम्हारी प्यास नहीं बुझ सकती। मुसलमान ने कहा तुम दोनों गलत कह रहे हो, जब तक तुम आब नहीं लोगे, तुम्हारी प्यास नहीं बुझ सकती। इन सबको सिख भाई ने आकर ललकारा कि तुम तीनों ही गलत कह रहे हो, जब तक तुम पानी नहीं पियोगे, तुम सब प्यासे रहोगे। इस प्रकार सभी लोग अपनी भाषा को बड़ा मानकर एक-दूसरे पर थोपना चाहते हैं। यह कोई नहीं सोचता कि हो सकता है कि सभी लोग वही बात कह रहे हों जो वह कह रहे हैं और फर्क केवल भाषा का हो। यदि किसी ने भी यह विचार कर लिया होता, तो आज इस नाशवान जगत का रहने वाला मानव "हिन्दू-मुस्लिम, सिक्ख-ईसाई आपस में हैं भाई-भाई" बोलता ही नहीं, अपितु सिर्फ कहने के बजाय उसे वास्तविक रूप से ग्रहण करके आज भाई-भाई ही होता। सारा विश्व सामाजिक रूप में भी आपस में बँधकर मानव मात्र से प्रेम करता और एक रस होकर सदा शान्ति के साथ जीवन व्यतीत करता।

यह बात तो चार मुख्य धर्मों से मिल गयी कि परमात्मा एक है। सभी उसी का पूजन करते हैं। हिन्दू कहते हैं 'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति' ईसाई कहते हैं 'SUPREME TRUTH GOD IS ONLY ONE': मुसलमान कहते हैं कि "कुल-हू अल्ला अहद" और सिख कहते हैं "नानक एकौ सुमरिये"।

परमात्मा के आने के विषय में जो तीनों धर्म कह रहे हैं सिखों के धर्म ग्रन्थ भी वही कह रहे हैं। श्री गुरुवाणी में लिखा है—

"बीतेगा उन्नतालिसा, लगेगा चालीसा
होएगा कोई मर्द मर्द दा चेला
नानक कहे दिखावी, मुझे सत्त-सत्त दी बेला"

इस संकेत को दसवें गुरु श्री गोविन्द सिंह जी ने अपनी वाणी में विस्तारपूर्वक उस बुद्ध निष्कलंक अवतार के होने की सारी बातें लिखी हैं—

उठ गई सभा मलेछ दी कर कूडा परसार

इस विषय में नानक जी कहते हैं कि इस संसार में जब सम्वत् सतरह सौ उन्तालीस बीतेगा और चालीस लगेगा उस समय ऐसे ब्रह्म ज्ञानी आयेंगे, जो सत् की वास्तविकता को बतायेंगे। सतरह सौ चालीस में उस ब्रह्म ज्ञानी का चेला होगा, जो उस ब्रह्म ज्ञानी की शोभा को जाहिर करेगा।

श्री गुरुवाणी—

ब्रह्मगिआनी ब्रह्म का बेता। ब्रह्मगिआनी एक संगि हेता।... ब्रह्मगिआनी कउ खोजहि महेसुर। नानक ब्रह्मगिआनी आपि परमेसुर ॥६॥ पृष्ठ ७७२। ब्रह्मगिआनी की कीमत नाहि। ब्रह्मगिआनी के सगल मन माहि।...ब्रह्मगिआनी का अंत न पारू। नानक ब्रह्मगिआनी कउ सदा नमसकारू। पृष्ठ ॥७॥ ७७२...ब्रह्मगिआनी मुकति जुगति जीअ दाता। ब्रह्मगिआनी पूरन पुरखु विधाता।....

ब्रह्मगिआनी की शोभा ब्रह्मगिआनी वनी। नानक ब्रह्मगिआनी सरब का धनी ॥८॥ पृष्ठ ७७२ तथा ७७३।

इस तरह ब्रह्मज्ञानी का कोई मनुष्य पुरुष/ब्रह्मज्ञानी शिष्य होगा और ब्रह्मज्ञानी जो सबका धनी होगा उसकी शोभा अर्थात् महिमा को जाहिर करेगा।

उपरोक्त से स्पष्ट हो गया कि सभी धर्मों के ग्रन्थों में उनके आने के संकेत अलग-अलग भाषा में लिखे हैं। पर पारब्रह्म सच्चिदानन्द, पार पुरुख, आखिरी ईसा, आखरउलजमा इमाम-मेंहदी वने और वन कर मिट गये अनगिनत ब्रह्माण्डों में कभी नहीं आये, परन्तु इस ब्रह्माण्ड के इस कलियुग में उनके आने के लिए सभी कह रहे हैं। जब सारे संसार के ग्रन्थ उस सच्चिदानन्द के आने के बारे में कह रहे हैं तो वह आयेगा। अवश्य आयेगा। अब देखना है कि वह जो आज तक नहीं आया, अब क्यों आ रहा है। क्या वह आ गया या अभी आयेगा—इस बात पर विचार करना है।

Nijanand App

संसार में जितने भी धर्म ग्रन्थ हैं सभी ने उस परमात्मा के विषय में यह तो लिखा है कि वह एक है, जो सबका परमात्मा है परन्तु यह बातें किसी ने भी नहीं बतायीं कि उनका नाम क्या है, उसका स्वरूप क्या है, उसकी लीलाएँ क्या हैं और वह रहता कहाँ है? सभी ने अनुमान से उसका नाम बताया है, परन्तु बाकी बातों पर सभी पूर्णतया मौन हैं।

एक बार मेरे धर्म गुरु श्री जगदीश चन्द्र जी आहूजा का इलाहाबाद विश्वविद्यालय में जाना हुआ। वह अपने एक मित्र से मिलने गये थे। वहाँ पर जब प्रधानाचार्य को यह पता चला कि श्री आहूजा धर्म के पूर्ण जानकार हैं, तो वहाँ के विद्यार्थियों से उन्होंने श्री जगदीश चन्द्र जी से धर्म के विषय में कुछ पूछने को कहा। इस पर विद्यार्थियों ने एक प्रश्न किया "परमात्मा क्या है" इस प्रश्न का उत्तर बिना किसी धर्म के ग्रन्थों के उद्धरण के चाहिए। यदि बिना उद्धरण के बता सकते हैं तब तो उत्तर दीजिएगा, अन्यथा नहीं। धर्म ग्रन्थों के बारे में हम सुनते-सुनते थक गये हैं, पर हमारे पल्ले कुछ नहीं पड़ा है। इन बातों को सुनकर पूज्य श्री जगदीश चन्द्र जी थोड़ा देर तक तो सोचते रहे, तत्पश्चात् उन्होंने वहाँ के विद्यार्थियों से एक बात पूछी कि क्या वह यह बात मानते हैं कि परमात्मा चाहे जो कुछ भी है, सत्य है। यदि वह यह बात मानते हैं तो फिर बिना किसी शास्त्र के उद्धरण के बताया जा सकता है कि परमात्मा क्या है। इसके उत्तर में सभी विद्यार्थियों ने कहा कि यह तो हम सभी मानते हैं वह जो कुछ है सत्य है। तब उन्होंने विद्यार्थियों से पूछा कि जो वस्तु सत्य होगी वह चेतन होगी या जड़। इस पर उन विद्यार्थियों ने कहा कि सत्य वस्तु कभी जड़ नहीं हो सकती। वह चेतन होगी। श्री जगदीश जी ने उनसे पूछा कि अब बताइए, जो वस्तु चेतन होगी वह कुछ न कुछ करती रहेगी या चुप-चाप बैठी रहेगी। इस पर उन लोगों ने कहा कि चेतन वस्तु शान्त नहीं बैठ सकती, वह कोई न कोई लीला अवश्य करती रहेगी। तब श्री जगदीश जी ने पूछा कि सत्य वस्तु में दुःख की लीला होगी या आनन्द की। तब सभी विद्यार्थियों ने उत्तर दिया कि सत्य वस्तु में आनन्द की लीला हो सकती है दुःख की नहीं, क्योंकि दुःख तो जड़ वस्तु से होता है। तब श्री जगदीश जी ने कहा कि अब आप स्वयं मिला लो, यही परमात्मा है। सत + चित् + आनन्द अर्थात् सच्चिदानन्द ही परमात्मा है। सभी ने इस बात को स्वीकार कर श्री जगदीश जी का धन्यवाद किया।

पिछले अंश में आपको सारे ग्रन्थों का सार बताया गया है कि शास्त्रों के अनुसार तीन पुरुष हैं 'क्षर-अक्षर-अक्षरातीत' अर्थात् अक्षर से परे इसी पुरुष को

सभी ने परमात्मा कहा है। तीन ही इनके ब्रह्माण्ड कहे गये हैं। क्षर पुरुष का ब्रह्माण्ड, अक्षर पुरुष का ब्रह्माण्ड और अक्षरातीत पुरुष का ब्रह्माण्ड। शास्त्रों में तीन ही प्रकार की सृष्टि कही गयी है। हिन्दुओं के अनुसार—विषयी, मुमुक्षु, नित्य मुक्त मुसलमानों के अनुसार-आम, खास और खासुलखास; ईसाइयों के अनुसार—शरीर से, जल से, आत्मा से; सिखों के अनुसार—जीव, ईश्वरी, ब्रह्म। यह तीन ही सृष्टि एक क्षर पुरुष की जीव, दूसरी अक्षर पुरुष की ईश्वरी, तीसरी अक्षरातीत पुरुष की ब्रह्म सृष्टि या आत्मा कही गयी है। अक्षरातीत पुरुष जो सच्चिदानन्द हैं, के ब्रह्माण्ड को परमधाम, दिव्य ब्रह्मपुर धाम या अर्श-अजीम कहा गया है।

परमधाम के सच्चिदानन्द और उसकी ब्रह्म-सृष्टि/आत्माओं के विषय में इस बात पर विचार करना है कि वह अक्षरातीत और उसकी ब्रह्म अंगनाएँ इस नश्वर जगत में क्यों आई हैं? 'सच्चिदानन्द' पुरुष परमधाम में रहता है। उस सच्चिदानन्द पुरुष में तीन शक्तियाँ विद्यमान हैं। पहली है सत, दूसरी चिद्घन और तीसरी आनन्द। अनादि परब्रह्म का परमधाम भी अनादि है। उसकी सत्ता का स्वरूप अक्षर ब्रह्म तथा आनन्द अंग श्यामा जी एवं सभी आत्माएँ भी अनादि ही हैं। इनका निर्माण कभी भी नहीं हुआ। क्योंकि परमधाम में कोई वस्तु बनायी नहीं जा सकती है। परमधाम के लीला रूप सभी पदार्थ भी अनादि ही हैं। अक्षर ब्रह्म तथा उसका अक्षरधाम भी कभी बने नहीं अपितु परमधाम के पाँचों स्वरूप श्री राज जी, श्यामा जी, रूहें, अक्षर तथा महालक्ष्मी सदा ही अनादिकाल से है और अनन्त काल तक रहेगा।

आनन्द अंग श्यामा जी तथा सखियाँ केवल एक शक्ति आनन्द की होने के कारण श्री राज जी को ही जानती थीं और दूसरे सत्ता के स्वरूप 'अक्षर ब्रह्म' का उनको कोई पता नहीं था। श्री राज जी के अतिरिक्त कोई और पुरुष भी है इसकी जानकारी उन्हें नहीं थी। अक्षर ब्रह्म भी केवल सत्ता (सत्) की शक्ति होने के कारण सिर्फ राज जी को ही जानते थे। उनको आनन्द अंग श्री श्यामा जी का कोई पता नहीं था। अक्षर ब्रह्म अपने अक्षरधाम में श्री महालक्ष्मी के साथ रहते हैं और उनका स्वभाव आनन्द न होकर सत्ता का होने से वह बाल-स्वभाव के कहे जाते हैं। अक्षर ब्रह्म के सत्ता की अखण्ड लीला योगमाया के ब्रह्माण्ड (बेहद भूमि) में होती है। यह योग माया का ब्रह्माण्ड भी कभी बना नहीं अपितु अनादि ही है। इसके चार पाद हैं :

1. सत्स्वरूप, 2. केवल, 3. सबलिक, 4. अव्याकृत।

Nijanand App

केवल का सम्बन्ध बुद्धि से है, सबलिक का सम्बन्ध चित्त से और अव्याकृत का सम्बन्ध मन से होने के कारण इसी क्रम से यहाँ की शक्तियाँ कार्य करती हैं।

अब वह कारण देखिए जिसके लिए उस पारब्रह्म सच्चिदानन्द को अपने ब्रह्म अंगनाओं के साथ इस नश्वर जगत में आना पड़ा। ब्रह्मात्माएँ कैसे इस ब्रह्माण्ड में आयीं। यह ब्रह्माण्ड या ऐसे और क्षर के ब्रह्माण्ड कैसे बनते हैं और जब महाप्रलय होती है, तो वह कहाँ समा जाते हैं। इसका सारा वृत्तान्त आप को उदाहरणों के साथ बताकर पुनः वह इस नश्वर जगत में आये हैं–का विस्तारपूर्वक वर्णन करूँगा। सर्वप्रथम इस पर विचार करते हैं कि वह यहाँ क्यों आये हैं?

परमधाम के अन्दर हर वस्तु अखण्ड है। वहाँ पर किसी भी वस्तु में कभी घट-बढ़ नहीं होती। आप यदि वहाँ बाग से पुष्प लेवें, तो वहाँ तुरन्त नया पुष्प बन जाता है। जैसे हमारे यहाँ पाँच तत्व हैं–पृथ्वी, वायु, जल, तेज तथा आकाश, वहाँ एक ही तत्व है जिसे "नूर" कहा गया है। जिस प्रकार यहाँ तीन गुण–रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण हैं, उसी तरह वहाँ पर पाँच गुण हैं–चेतनता, कोमलता, सुगन्धि, तेज और अखण्डता। यहाँ सदा द्वैत की लीला होती है। जैसे–सुख-दुःख, जीवन-मृत्यु, सच्चा-झूठा, अच्छा-बुरा आदि। परन्तु वहाँ पर सदा एक ही लीला होती है, जैसे–सुख, आनन्द, सत्य, चेतन आदि। द्वैत की लीला होने के कारण हमारा ब्रह्माण्ड असत्य, दुःख से परिपूर्ण और जड़ है पर अद्वैत लीला होने के कारण परमधाम अखण्ड या अविनाशी, सुख अथवा आनन्द से युक्त चेतन है। वहाँ की हर वस्तु बोलती है। एक लीला होने से वहाँ सदा हर वस्तु में एक-दिली है और एक-दिली होने से वहाँ सदा प्रेम की लीला होती है। वहाँ पर किसी को किसी प्रकार की ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, कुण्ठा नहीं है। इस कारण वहाँ की हर वस्तु आनन्द व इश्कमयी है। वहाँ की रहने वाली ब्रह्म अंगनाएँ दुःख को जानती ही नहीं थीं। परमधाम में कोई छोटा-बड़ा नहीं है। ब्रह्म अंगनाएँ श्री राज जी चिदघन-स्वरूप को ही जानती थीं।

एक दिन श्री राज जी ने सोचा कि यह अंगनाएँ मेरा एक ही स्वरूप जानती हैं। यहाँ पर कोई छोटा-बड़ा नहीं, इस कारण यह मेरी साहिबी, सत्ता तथा महत्ता को भी नहीं जानतीं। यदि मैं इनको अपनी सत्ता का स्वरूप व उसकी लीला दिखा दूँ, तो इनको अपनी व मेरी साहिबी का पता चल जायेगा। ऐसा मन में सोचकर श्री राज जी ने एक दिन वन-विहार की लीला करते समय सखियों से कहा, ऐ मेरी ब्रह्म अंगनाओ! मैं तुम लोगों से इतना प्यार करता हूँ जिसकी कोई सीमा

नहीं। इस कारण मेरा इश्क तुम सब सखियों से बड़ा है। इस पर श्यामा जी व अन्य सखियों ने उत्तर दिया–हे धाम के धनी ! हम यह बात तो मानते हैं कि आप इस परमधान के धनी हो, परन्तु आप का प्यार अकेले का है और हम श्यामा जी व बारह हजार सखियाँ आपसे अपूर्व इश्क करती हैं, इसलिए हमारा इश्क आप से हजारों गुना ज्यादा होने से हजारों गुना बड़ा है। आप इस भ्रम में न रहें कि आपका एक इश्क हमारे हजारों के इश्क से बड़ा है। इस पर श्री राज जी ने कहा–इस परमधाम के अन्दर एक-दिली होने के कारण इस बात का फैसला नहीं हो सकता कि किसका इश्क बड़ा है। इसलिए मैं किसी दिन तुमको अपनी सत्ता की शक्ति के माया के ब्रह्माण्ड में चल कर दिखाऊँगा कि किसका इश्क बड़ा है। तब सखियों ने उत्तर दिया–हे प्राणनाथ जी! जब आपकी इच्छा हो हमको एक बार नहीं सौ बार आजमा लेना कि हमारा इश्क बड़ा है और हम आपको आपसे हजारों गुना ज्यादा इश्क (प्यार) करती हैं। ऐसा सुनकर श्री राज जी ने कहा–किसी दिन इस बात को जरूर आजमायेंगे।

मैं आपको पहले ही स्पष्ट कर चुका हूँ कि परमधाम के एक भाग में अक्षर धाम है जिसमें श्री राज जी का सत्ता का स्वरूप अक्षर ब्रह्म रहता है और वह अक्षर ब्रह्म रोज प्रातः श्री राज जी के दर्शन करने आता है। जब सुबह श्री राज जी स्नान आदि की लीला से निवृत्त होकर परमधाम के अपने रंग महल की तीसरी भोम (मंजिल) के एक झरोखे के सामने बैठते हैं, तब अक्षर ब्रह्म दर्शन को आते हैं और श्री राज जी उस झरोखे से अपना मुख थोड़ा सा तिरछा कर देते हैं जिससे अक्षर ब्रह्म आधे मुख के दर्शन करके वापस चले जाते हैं। केवल थोड़ा सा मुख घुमा देने से सखियों को कोई आभास नहीं होता था कि वह क्या कर रहे हैं। जिस दिन सखियों से इश्क पर वार्तालाप हुआ, उसके दूसरे दिन जब अक्षर ब्रह्म दर्शन करने आये तो श्री राज जी ने झरोखे से अपना पूरा मुख घुमा कर दर्शन दिये। जब श्री राज जी ने अपना पूरा मुख घुमाकर झरोखे से देखा तो सखियों ने तुरन्त विचारा कि श्री राज जी किसी को देख रहे हैं। उत्सुकतावश सखियाँ भी झरोखे से झाँकने लगीं। सखियों ने अक्षर ब्रह्म को देखा और अक्षर ब्रह्म ने सखियों को देखा। तब अक्षर ब्रह्म सोचने लगे कि श्री राज जी के अतिरिक्त भी यह सखियाँ उनके साथ रहती हैं। मैं आज तक इनको नहीं जानता था। यह सखियाँ श्री राज जी के साथ क्या करती हैं? मैं धनी से अर्जी करूँगा कि वह जो लीला इन सखियों के साथ करते हैं, कृपया मुझे भी दिखा दें। ऐसा विचार कर वह दर्शन के बाद वहाँ से चले गये।

Nijanand App

सखियों ने उस पुरुष को देखा तो श्री राज जी से पूछने लगीं – हे धाम के धनी! हम तो आज तक यही जानती थीं कि इस परमधाम में हमारे और आपके सिवा कोई नहीं रहता। परन्तु आज पता लगा कि यहाँ और भी कोई रहता है। कृपया बताइए कि यह पुरुष कौन है? तब सखियों से श्री राज जी ने कहा कि यह मेरा सत्ता का स्वरूप अक्षर ब्रह्म है जो सदा माया के खेल बनाता और मिटाता रहता है। इस पर सखियों ने माया के विषय में पूछा कि माया क्या होती है? तब श्री राज जी ने उत्तर दिया – हे सखियो! माया बड़ी दुःखदायी है। माया भ्रम-मात्र है। जहाँ माया रहती है वहाँ का ब्रह्माण्ड दुःख ही दुःख का है। वहाँ भ्रम ही भ्रम होने से सदा लीला असत्य की होती है। माया भ्रम होने से वहाँ के रहने वाले जन्मते और मरते रहते हैं। वहाँ पर मैथुन सृष्टि वास करती है। यह स्त्री और पुरुष के मिलन से उत्पन्न होकर अपनी आयु पूरी करने के उपरान्त लय हो जाती है। हमारे परमधाम में प्रकृति हमारी इच्छा से चलती है, परन्तु वहाँ के रहने वालों को प्रकृति के आधीन रहना पड़ता है। वहाँ पर तरह-तरह की बीमारियों के रूप में मनुष्य सदा दुःख की लीला का भोग करता है। वह दुनिया जिसे माया कहते हैं, बड़ी ही दुःखदायी और न देखने और न सह पाने योग्य है। इतनी बातें सुनकर ब्रह्म अंगनाओं ने कहा – हे धनी! आप जो कुछ भी वर्णन कर रहे हैं हम उसको नहीं समझ पा रहे हैं। इस वास्ते कृपा करके वह अक्षर ब्रह्म की माया की दुनिया हमें दिखाओ। हम वह देखना चाहती हैं। तब श्री राज जी ने सखियों से कहा, तुम उस माया की दुनिया को मत देखो। वह तुमसे देखी नहीं जायेगी। वहाँ पर सभी बातें अपने परमधाम से बिल्कुल उल्टी हैं। यहाँ पर हम सदा आनन्द की लीला करते हैं और वहाँ पर आनन्द का नामो-निशान भी तुम्हें कहीं नहीं मिलेगा। वहाँ सर्वत्र दुःख ही दुःख होगा। यहाँ की हर वस्तु इश्क अथवा प्रेममयी है, वहाँ पर केवल नफरत ही नफरत है। उस माया की दुनिया में मुझे और तुम्हें कोई नहीं जानता। वहाँ के रहने वाले वहाँ के भ्रम के देवों को ही परमात्मा मान कर उसी की पूजा करते हैं। वहाँ की सारी सृष्टि कर्म के अधीन है। जो जैसे वहाँ करता है उसको उसी प्रकार भोगना पड़ता है। इसलिए तुम लोग उसको देखने की जिद मत करो। श्री राज जी की बातें सुनकर सभी सखियों ने माया के ब्रह्माण्ड को देखने की जिद की। तब पुनः श्री राज जी ने कहा –हे सखियो! तुम वहाँ जाकर मुझे भूल जाओगी। तुम लोगों के मेरे अंग स्वरूप होने के कारण मैं तुम लोगों से एक क्षण भी दूर नहीं रह सकता हूँ। जब तुम वहाँ खेल देखने जाओगी तो तुम्हारे कारण मुझे भी उस माया के ब्रह्माण्ड में जाना पड़ेगा। वहाँ

जाकर तुम भ्रम का रूप लोगी और भ्रम में लीन हो जाओगी। तुम्हारे लिए मैं भी जाऊँगा तो मुझे भी भ्रम का रूप धारण करना पड़ेगा और जब वहाँ मुझे तुम अपने जैसे देखोगी तो मुझे भी न पहचान सकोगी। मेरे बताने पर भी कि तुम कहाँ की रहने वाली हो, कहाँ से आयी हो, नहीं मानोगी और तुम मेरी बात पर विश्वास नहीं करोगी।

श्री राज जी ने कहा परमधाम के अन्दर सदा इश्क की लीला होने के कारण जब तक तुम वहाँ पर इश्क रूपी बन्दगी नहीं करोगी, वहाँ के भ्रम के जाल से तब तक निकल नहीं सकोगी। इसलिए तुम वहाँ जाने या उसे देखने की जिद मत करो। परन्तु उस समय किसी भी सखी ने श्री राज जी की बात को नहीं माना। तब श्री राज जी ने कहा – हे सखियो! यदि तुम नहीं मानतीं, तो मैं तुमको वह खेल यहीं बैठे-बैठे दिखाता हूँ। मैं तुम्हारी सुरता को इस परमधाम से उस नश्वर जगत में आत्मा के रूप में प्रकट करूँगा। कारण यह है कि इस परमधाम से न तो कोई वस्तु बाहर ही जा सकती है और न ही कोई वस्तु बाहर की इस परमधाम के अन्दर आ सकती है। यहाँ की हर वस्तु नूर तत्व से बनी है और चेतन है। दुनिया की हर वस्तु पाँच तत्वों से बनी है और जड़ है। इस वास्ते यदि यहाँ की नूर तत्व से बनी एक रेत का कण भी वहाँ चला जाये तो वहाँ का ब्रह्माण्ड टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा। इस वास्ते मैं तुमको अपने चरणों में बिठाऊँगा और यहाँ से सुरता (waves) द्वारा तुम्हारी दृष्टि वहाँ के जीवों पर डालकर तुमको वहाँ का खेल दिखाऊँगा। परन्तु याद रखना मैंने जो बातें ऊपर कही हैं वही वहाँ पर होंगी और तुम वहाँ पर मेरी बात का विश्वास नहीं करोगी। परन्तु जब तक मेरी बात का विश्वास कर मेरे बताये रास्ते से अपनी दृष्टि वापस परमधाम पर नहीं डालोगी तब तक तुम वापस नहीं आ सकतीं। अब तुम जिद करके वहाँ जा रही हो तो वहाँ पर सदा "द्वि" अर्थात् द्वैत की लीला होती है, तो तुम्हारा प्यार वहाँ पर छोटा-बड़ा होगा। मैं भी वहाँ आऊँगा और मैं तुमको अपना इश्क बताऊँगा, फिर देख लेना कि तुम लोगों का इश्क ज्यादा है या कि मेरा। अब तुम सब तैयार हो जाओ।

ब्रह्म अंगनाओं से उपरोक्त वार्ता करने के बाद ही श्री राज जी ने अपने सत्स्वरूप अक्षर ब्रह्म को हुक्म दिया कि मेरी अंगनाएँ तुम्हारी माया का खेल देखना चाहती हैं। ऐसा खेल बना दो जो माया से परिपूर्ण हो। तब श्री राज जी की आज्ञा सुनकर अक्षर ब्रह्म ने अर्ज की–हे धाम धनी! कृपा करके आप भी मुझे अपनी सखियों का खेल दिखाओ कि वह परमधाम में आपके साथ रंगमहल में

Nijanand App

क्या खेल करती हैं। श्री राज जी ने कहा यदि तुम भी खेल देखना चाहते हो तो तुम वहाँ पर अपनी सुरता वहाँ के चलाने वाले विष्णु के जीव पर दृष्टि डाल लो। मैं उसमें अपनी जोश की शक्ति डाल कर तुमको भी सखियों का खेल दिखाऊँगा। परन्तु इसके लिए तुमको अपनी सुरता को वहाँ ले जाना पड़ेगा और जब तुम अपनी सुरता को वहाँ ले जाओगे, तो तुम खुद नींद के आवरण में हो जाओगे। इसलिए वहाँ के त्रिदेव में भगवान विष्णु के जन्म की आज्ञा देकर उनके जन्म लेने पर उस शरीर के ऊपर अपनी सुरता रूपी आत्मा को विठा देना और मैं अपनी जोश की शक्ति बैठाकर तुमको "रंगमहल" में सखियाँ जो खेल करती हैं, को दिखा दूँगा। श्री राज जी के इतना कहने की देर थी कि अक्षर ब्रह्म ने अपनी माया को स्थूल ब्रह्माण्ड बनाने का हुक्म दे दिया। यह कारण बना उस पार-ब्रह्म सच्चिदानन्द के इस दुनिया में आने का।

हमारा ब्रह्माण्ड क्षर का ब्रह्माण्ड कहलाता है। क्षर का अर्थ है मिट जाने वाला। जो भी वस्तु पैदा होती है उसे अवश्य लय हो जाना पड़ता है। यही कारण है कि इस ब्रह्माण्ड के अन्दर भगवान विष्णु ने कई अवतार लिये और शरीर को धारण किया तथा अपनी आयु समाप्त कर मिट गये। संसार के सारे ग्रन्थ परमात्मा के विषय में लिखते हैं कि वह सदा सत्य है, अखण्ड है, अविनाशी है। अब विचारने की बात है कि जब वह अविनाशी है और यदि वह इस संसार के कण-कण में समाया हुआ है, तो फिर इस ब्रह्माण्ड की हर वस्तु को अखण्ड और अविनाशी होना चाहिए। हम देखते हैं कि जब स्वयं जिनको शास्त्र भगवान् मानते हैं, वह भी इस संसार में आकर मिट जाता है तो फिर वह अविनाशी कैसे हुआ। शास्त्र कहते हैं कि भगवान् इस संसार में आंशिक शक्ति के रूप में आता है। इक्कीस अवतारों के लिए हम कह सकते हैं कि वह आंशिक थे परन्तु श्री कृष्ण का अवतार तो पूर्ण कहा गया है। वह सोलह कला सम्पूर्ण थे तो फिर वह क्यों मिट गये। इससे स्पष्ट है कि इस ब्रह्माण्ड के अन्दर कोई भी अखण्ड अथवा अविनाशी नहीं है। यही कारण है कि इसे क्षर का ब्रह्माण्ड कहा गया है।

शास्त्रों में लिखा है कि चार प्रकार की प्रलय होती है–नित्यप्रलय, नैमित्तिक प्रलय, प्राकृत प्रलय और महा प्रलय। नित्य प्रलय का अर्थ है जन्म लिए हुए जीव तथा मनुष्य का प्रतिदिन किसी न किसी कारण मृत्यु। नैमित्तिक प्रलय संसार के अन्दर भूकम्प या बाढ़ आने या किसी देश के दूसरे से लड़ने से जो सामूहिक रूप से हजारों लाखों की संख्या में जीव मृत्यु को प्राप्त होते हैं, को कहते हैं।

पुराणों में कहा गया है कि जब नारायण की नाभि-कमल से सबसे पहले ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई। वह नाभि से बाहर आकर उसने अपने अतिरिक्त और किसी को न पाकर फिर नाभि में वापिस चला गया यह देखने के लिए कि मेरे अतिरिक्त और भी कुछ है अथवा मैं अकेला ही हूँ। परन्तु जब वह वापस आया तो देखा कि दो पुरुष और आये हुए हैं। इन्हें महेश और विष्णु कहा गया है। पहले आने और एक बार वापस चले जाने के कारण महेश और विष्णु की आयु से ब्रह्मा की आयु आधी रह गयी थी। यह तीनों एक साथ अपनी आयु पूरी करके जब जाते हैं तो सारा ब्रह्माण्ड—पाँच तत्व और तीन गुण समाप्त हो जाते हैं। इस तरह जब ब्रह्मा अपनी एक बार आयु समाप्त करता है, तो इस ब्रह्माण्ड के अन्दर जम्बू द्वीप, सात पाताल, सहित दस लोक नष्ट हो जाते हैं। इसे प्राकृतिक प्रलय कहा गया है। जब महेश, विष्णु तथा ब्रह्मा की आयु दुबारा समाप्त होती है, तो महाप्रलय हो जाती है।

इस ब्रह्माण्ड के विषय में लिखा गया है कि जब महाप्रलय में सब समाप्त हो जाता है, तो सभी जगह पानी ही पानी हो जाता है। इसके बाद दो विचार मुझे शास्त्रों में मिले। एक में लिखा है कि जब पानी ही पानी हो जाता है तब एक पत्ते के ऊपर भगवान् अंगुष्ठ मात्र रूप में तैरते रहते हैं और इस ब्रह्माण्ड का पुनः निर्माण करते हैं। दूसरी विचारधारा के अनुसार जब पानी ही पानी हो जाता है, तब पुनः एक अण्डे के रूप में कोई वस्तु पानी पर तैरती है और समय पाकर वह अण्डा फूटता है। उससे नारायण की उत्पत्ति हो जाती है। नारायण मुख से उच्चारण करता है कि "एकोऽहं बहु स्याम्"। मैं एक से बहुत हो जाऊँ। तब उनकी शक्ति लक्ष्मी बन जाती है। फिर नाभि कमल से त्रिदेवों की उत्पत्ति हो जाती है और वह तीनों नश्वर जगत को बना देते हैं। इन दोनों ही बातों को मैंने भली-भाँति विचारा है। एक बात जो मुख्य रूप से सामने आयी है वह यह है कि जब महाप्रलय में सब मिट गया, पाँच तत्व, तीनों गुणों का नाश हो गया, ऐसा शास्त्र कहते हैं, तो फिर जल जो इन पाँचों तत्वों में से एक है, कैसे बाकी रह गया। अतः क्या शास्त्रों के लिखने में कुछ त्रुटि रह गयी जो उन्होंने पाँच तत्व लिख दिये। उन्हें चार तत्व लिखने चाहिए थे। या फिर उक्त दोनों ही विचारधाराएँ गलत हैं। शास्त्रों में लिखी गयी बात को गलत नहीं कहा जा सकता। ब्रह्मा की उत्पत्ति के समय यह चारों वेद उनके चारों मुखों से उच्चरित होते हैं। इसलिए जो दोनों बातें ब्रह्माण्ड के बनने की लिखी हैं उनका टीकाकारों ने अपनी बुद्धि के अनुसार विस्तार किया है। हमको यह बात वेदों की माननी पड़ेगी कि जो

Nijanand App

कुछ वेद कह रहे हैं, वह सत्य है। महाप्रलय में पाँच तत्व, तीन गुणों का नाश हो जाता है यही सत्य जान पड़ता है। फिर प्रश्न यह उठता है कि यह दुनिया दुबारा कैसे बनती है? सबसे पहले मैं आपको इस दुनिया से लेकर बेहद भूमि तक का वर्णन करूँगा। हर ब्रह्माण्ड में कौन-कौन से स्थान हैं और इनके मालिक और शक्तियाँ कौन-कौनसी हैं। फिर आपको बताऊँगा कि यह दुनिया या और भी हजारों क्षर अथवा नाशवान ब्रह्माण्ड कैसे बनते हैं और मिट कर इनके अन्दर रहने वाले जीव किसमें समा जाते हैं और पुनः कैसे बनते हैं। हमारे इस ब्रह्माण्ड के अन्दर जितने भी शास्त्र, वेद, पुराण, गीता, भागवत, कुरान, गुरुवाणी, बाईबल, कबीर-वाणी इत्यादि हैं, उनमें यह बताया गया है कि कोई शक्ति आगे है जो अखण्ड और सदा अविनाशी है। इस दुनिया वाले उसे जानते नहीं हैं और भूलवश नाशवान जगत के संचालक ब्रह्मा, विष्णु और महेश को ही परमात्मा मान कर उसी में सब कुछ अखण्ड मान बैठे हैं। यह जानते हुए भी कि महाप्रलय में स्वयं त्रिदेवों सहित चौदह लोक और इसके भी आगे कार्यरत शक्तियाँ नष्ट हो जाती हैं, तो फिर यह परमात्मा अथवा भगवान कैसे हुए? इन सब बातों का विवरण आगे दिया जा रहा है।

यह ब्रह्माण्ड जिसमें हम आप रहते हैं जम्बू द्वीप तथा मृत्युलोक कहलाता है। इसके नीचे 7 लोक अथवा स्थान हैं। इसमें दानव आदि रहते हैं। अतल लोक, इस लोक पर बाणासुर दानव राज्य करता है। दूसरा है वितल लोक, इसमें हटकेश्वर महादेव निवास करते हैं। इसके बाद है सुतल लोक, इसमें राजा बलि राज्य करते हैं। इसके नीचे तलातल लोक है, इसमें मायावी दानवों का राज्य है। इसके बाद रसातल लोक है। यह नाग लोक है। इसमें तक्षक जैसे बड़े-बड़े नाग रहते हैं। इसके बाद महातल लोक है, इसमें कवच इत्यादि राक्षस का राज्य है। सातवाँ और अन्तिम लोक है पाताल लोक, इसमें भी नाग आदि रहते हैं। इसकी तली में सहस्र शीर्ष सर्प पर भगवान नारायण अपनी कमला सहित निवास करते हैं। इसको गर्भोदक समुद्र भी कहा गया है।

मृत्यु लोक के ऊपरी तल पर छः लोक हैं, इसमें पहला है भुवलोक। इस जगह पर पितृगण निवास करते हैं। दूसरा लोक है स्वर्गलोक। इसे इन्द्रपुरी भी कहा गया है। यह सुखभोग का स्थान है। तीसरा लोक महर लोक है। यह धर्मराज की पुरी है। जहाँ पर गण निवास करते हैं। चौथा है जन लोक, यहाँ पर ब्रह्मा जी के मानसी पुत्र रहते हैं। पाँचवाँ है तप लोक, तपस्वी पुरुषों की यह योग भूमि है। छठा है सतलोक, यहाँ पर तीन पुरियाँ हैं। पहली है कैलाशपुरी, दूसरी है ब्रह्मा

की पुरी, तीसरी है विष्णुपुरी। यह बैकुण्ठ भी कहलाता है। यह सारा का सारा एक ब्रह्माण्ड है जिसके चौदह भाग कर दिये गये हैं।

हमारा द्वीप जम्बू तथा लोक मृत्युलोक कहलाता है। इस मृत्युलोक में ही केवल जन्मना और मरना है। जो जैसा करता है उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है। कर्मानुसार स्वर्ग भूमि में रहने के उपरान्त उसे पुनः मृत्युलोक में उतार दिया जाता है। इन चौदह लोकों के मालिक ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं जो स्वयं बैकुण्ठ अथवा सत लोक में रहकर ब्रह्माण्डों को नियमित करते हैं। इन तीनों की उत्पत्ति नारायण की नाभि कमल से हुई है। नारायण स्वयं तो शेष नाग पर सदा बिराजे रहते हैं परन्तु इनकी सारी शक्ति त्रिदेवों द्वारा कार्यशील रहती है। इन चौदह लोकों को चारों तरफ से आठ आवरण घेरे रहते हैं। प्रत्येक आवरण अपने पहले आवरण से दस गुना बड़ा होता है। आठों एक के बाद एक अलग-अलग भाग हैं। इन आठ आवरणों के बाद ज्योति स्वरूप है। इनके साथ दो शक्तियाँ कार्यशील हैं। एक है गायत्री, दूसरी है नाद बिन्दु। इनके ऊपर हैं सात शून्य। इसमें पाँच शक्तियाँ कार्यरत रहती हैं। पहली है वास्तवी, दूसरी है अनिर्वचनीया, तीसरी है उन्मुखी, चौथी है तुच्छा, और पाँचवीं है शिव कल्याणी। इनके नीचे हैं आदि नारायण या महा विष्णु। इनके ऊपर हैं अपर प्रणव ब्रह्म- अज्ञानमय कोष अर्थात् "ऊँ"। दूसरी है रोधनी शक्ति। इसके ऊपर है पर प्रणव ब्रह्म ज्ञानमय कोष। जीवों का यहीं मोक्ष स्थान है। इसके ऊपर हैं काल निरंजन। इनमें तीन शक्तियाँ कार्यरत हैं अध्यात्म, अधिदैव तथा अधिभूत। अध्यात्म में सुमना शक्ति के साथ चौबीस हजार शक्तियों के स्वभाव में इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति तथा क्रिया शक्ति कार्य करती हैं। अधिदैव में विद्या तथा ब्रह्म विद्या रूप में चौबीस हजार शक्ति स्वभाव के साथ आवरण, काल, विक्षेप के रूप में कार्यरत है। अधिभूत में दश महा विद्या की चौबीस हजार शक्ति स्वभाव के रूप में असत्, जड़-दुःख के रूप में कार्यरत हैं।

क्षर के ब्रह्माण्ड के आगे जो 'बेहद भूमि' है उसका वर्णन किया जा चुका है। उसमें चार स्थान मुख्य हैं। पहला अक्षर ब्रह्म के सत स्वरूप का स्थान। दूसरा केवल ब्रह्म। तीसरा सबलिक ब्रह्म और चौथा अव्याकृत ब्रह्म का स्थान। इस अव्याकृत ब्रह्म के स्थान से ही सारी क्षर की सृष्टि व ब्रह्माण्ड सम्बन्ध रखते हैं। इस क्षर के ब्रह्माण्ड की कार्यरत सारी शक्तियाँ स्वप्न का स्वरूप हैं। इन सब का असल ठिकाना अव्याकृत ब्रह्म ही है। सारा क्षर का ब्रह्माण्ड और उसमें कार्यरत शक्तियाँ सभी केवल सपना हैं। हम रात्रि को सोते हैं और सोते-सोते सपना देखते हैं। उस सपने में हम स्वयं को पहाड़ों, नदियों या किसी राजा के दरबार में पाते हैं और वहाँ

Nijanand App

पर हम जैसे और भी कई लोग हमें दिखाई देते हैं। कभी हम उनके साथ लड़ रहे होते हैं, कभी किसी के साथ आनन्द की क्रीड़ा कर रहे होते हैं। परन्तु वास्तव में हम तो सो रहे होते हैं और ठीक हमारे जैसा दूसरा एक शरीर बनकर कार्य करता है। इसी तरह अव्याकृत ब्रह्म की शक्तियों के ऊपर मोह अथवा नींद का आवरण होता है और उनका उन्हीं जैसा शरीर बनकर इसी क्षर के ब्रह्माण्ड में अपनी लीला करता है। जिस प्रकार हम जब स्वप्न से जागते हैं तो वहाँ पर किसी को भी नहीं पाते, सब कुछ भ्रम लगता है इसी तरह अव्याकृत की शक्तियाँ जब नींद के आवरण से मुक्त होती हैं, तब वह भी वहाँ पर कुछ नहीं देखतीं। जो देखा होता है सब मिट चुका होता है। इसलिए इसे नाशवान अर्थात् स्वप्न का ब्रह्माण्ड कहा जाता है, जिसकी वास्तविकता कुछ भी नहीं होती। उन पर से जब नींद का आवरण हट जाता है तो हमारा सारा का सारा ब्रह्माण्ड लय हो जाता है। फिर इसकी वास्तविकता कुछ भी नहीं रहती। इसी कारण इसे क्षर का ब्रह्माण्ड कहा गया है।

पिछले वर्णन में आपने उस पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द के विषय में जाना है कि वह सदा ही अखण्ड परमधाम में विराजमान रहते हैं। इस क्षर के ब्रह्माण्डों में वह कभी नहीं आये और जिस कारण वह इस नाशवान जगत में आये हैं उसका कारण भी लिख चुका हूँ। यह भी लिखा है कि उनके बारे में कोई भी क्षर के ब्रह्माण्ड में रहने वाला नहीं जानता। जिस प्रकार हम स्वप्न में होते हैं और हमारे स्वप्न के शरीर का कोई पता नहीं होता कि वह असल नहीं, असल तो कोई दूसरा है उसी प्रकार यहाँ इस ब्रह्माण्ड में नारायण जो शेष नाग पर कमला सहित विश्राम कर रहे हैं, वह आदि नारायण के स्वप्न के स्वरूप हैं तथा इस स्वप्न के स्वरूप नारायण को यह नहीं पता कि उनका सम्बन्ध आदि नारायण से है और जब उनको स्वयं की ही पहचान नहीं कि उनको किसने बनाया है और उनका मालिक कौन है, तब उन्हें पूर्ण ब्रह्म की क्या पहचान हो सकती है। इस कारण वह नारायण नहीं जानते कि उनके ऊपर भी कोई है। अतः वह स्वयं को ही ब्रह्म मानते हैं। नारायण को जिस बात का पता नहीं, वह बात उसके नाभि कमल से उत्पन्न त्रिदेवों को क्या पता होगी? त्रिदेवों की उत्पत्ति पर ब्रह्मा के मुख से वेद उच्चारित होते हैं। वेदों में लिखा है कि इन सब को बनाने वाला कोई है। परन्तु वेद कहते हैं कि वह कौन है इसकी खबर हमको नहीं आयी और न ही उसको जानने की हमारी शक्ति है। इसलिए वेदों की इन बातों का पता त्रिदेवों को है कि उनसे आगे भी कुछ है, परन्तु क्या है? यह वह नहीं जानते। त्रिदेवों

में भगवान विष्णु नारायण के मन के स्वरूप हैं। इस कारण जो बात नारायण सोचते हैं वही बात मन स्वरूप होने के कारण विष्णु सोचते हैं। यही कारण है कि नारायण अपने आप को ब्रह्म स्वरूप मानते हैं, और भगवान विष्णु भी स्वयं को ही ब्रह्म मानते हैं। उनको कोई पता नहीं कि मेरे आगे क्या है। लेकिन वेदों द्वारा ज्ञान होने के वजह से वह सदा सोचते हैं कि हमसे आगे भी कोई शक्ति है जिसने हमें बनाया है। इसलिए वह सदा उस आगे की शक्ति का ध्यान करते रहते हैं। परन्तु वह है कौन, यह नहीं जानते। तो फिर ध्यान किसका करते हैं और यह बात कैसे मान ली जावे कि वह नहीं जानते। इस बात का प्रमाण मैं आपको "देवी भागवत" के चौथे अध्याय में लक्ष्मी-विष्णु सम्वाद से देता हूँ। इसमें लिखा है कि भगवान विष्णु ने जन कल्याण का कार्य लक्ष्मी जी को सौंप रखा है। इसी कारण जगत के दुःखों का निवारण करने के लिए लक्ष्मी जी ने नौ अवतार लिये। इन्हें आप माँ के रूप में जानते हैं, जैसे—माँ काली, वैष्णों देवी आदि। श्री लक्ष्मी जी के यह अवतार माँ के रूप में हुए हैं। यह दुःखों का निवारण करती हैं। इसीलिए सुबह ही उठ कर श्री लक्ष्मी इस संसार में दुःखों का निवारण करने आती हैं और जब वह इस संसार में आ जाती हैं तब उनके पीछे से भगवान विष्णु आराधना करने को बैठ जाते हैं। जितने समय में लक्ष्मी जी संसार के कार्य को निपटा कर वापस जाती हैं, उतने समय तक ही भगवान विष्णु समाधि में लीन रहते हैं। जब श्री लक्ष्मी जी के वापस आने का समय होता है तो भगवान विष्णु उनके आने से पहले ही समाधि भंग कर देते हैं। इस कारण लक्ष्मी जी को कोई पता नहीं था कि भगवान विष्णु भी किसी की आराधना करते हैं।

एक दिन जब लक्ष्मी जी इस संसार में आयी हुई थीं तो उनकी भेंट नारद मुनि से हो गयी। उस समय नारद जी ने लक्ष्मी जी से कहा—हे माता! आप तो इस संसार के कार्य में लगी रहती हैं और उधर आपके पीछे विष्णु आराधना करने में लगे रहते हैं। क्या कभी उन्होंने आपको यह बताया कि वह किसकी आराधना करते हैं? इस पर लक्ष्मी जी ने नारद से कहा—नारद जी, आप मुझे नहीं बरगला सकते। मैं जानती हूँ कि भगवान विष्णु ही सबके मालिक और परमात्मा हैं, तब वह भला किसकी आराधना करेंगे। यदि उनके आगे कोई और होता तो यह मुझे अवश्य बताते। इसलिए आपकी कोई चाल मुझे उनसे नहीं लड़ा सकती। नारद जी ने कहा यदि वह उनकी बातों को झूट मानती हैं तो स्वयं जाकर देख लें कि वह ध्यान करते हैं अथवा नहीं। लक्ष्मी जी उस दिन जल्दी वापस चली गयीं। लौटकर देखा कि भगवान विष्णु ध्यान में लीन हैं। तब वह वहीं बैठकर भगवान

Nijanand App

विष्णु की समाधि भंग होने की प्रतीक्षा करने लगीं। जिस समय भगवान विष्णु ने समाधि समाप्त की तो देखा कि लक्ष्मी जी आज जल्दी वापस आ गयी हैं। अवश्य नारद जी ने अपनी कृपा कर दी। यह सोचकर वह बोले—हे प्रिय! आज आप जल्दी वापस आ गयीं, क्या बात है? तब लक्ष्मी जी ने नारद जी की बात बताते हुए कहा कि आप आज तक मुझसे झूठ बोलते रहे हैं कि आपके और मेरे सिवाय इस संसार में कोई और परमात्मा नहीं है। यदि यह सत्य है तो आप किसकी आराधना करते हैं? इसका अर्थ है कि आपके आगे और भी कोई है जिसकी आप आराधना करते हैं। अब आप कृपा करके मुझे भी उसके बारे में बताइए, ताकि मैं भी उनकी आराधना किया करूँ। इसके उत्तर में विष्णु जी ने कहा—हे लक्ष्मी! यह सत्य है कि इस ब्रह्माण्ड में मेरे और तुम्हारे सिवाय कोई और परमात्मा नहीं है। परन्तु मैंने यह कब कहा कि मेरे आगे कुछ भी नहीं है। मेरे ऊपर भी कोई शक्ति है। परन्तु वह कौन है, यह मैं नहीं जानता। इसलिए मैं तुमसे यह नहीं बता पाऊँगा कि जिनकी मैं आराधना करता हूँ, वह कौन है और कहाँ रहता है। परन्तु कोई शक्ति है अवश्य जिसने मुझे और इस सारे ब्रह्माण्ड को बनाया है। तब लक्ष्मी जी बोलीं—हे नाथ! आप मुझे बताना नहीं चाहते हैं। मैं यह जानना चाहती हूँ। कृपा करके बता दीजिए। मैंने आप से आज तक अपने लिए कुछ नहीं माँगा। तब विष्णु जी ने कहा—हे लक्ष्मी, जिद मत करो। मैं नहीं जानता इसलिए नहीं बता सकता। इस पर लक्ष्मी जी ने कहा—हे नाथ! यदि मैं आपकी पतिव्रता पत्नी हूँ, तो अपने तप के बल पर आपसे पूँछ लूँगी। इतना कहकर लक्ष्मी जी वहाँ से जंगल में तपस्या करने चली गयीं। लिखा है कि सात कल्पॉत छियासी युग तक अर्थात् अट्ठाईस सौ छियासी युग तक वह तपस्या करती रहीं। सभी देवी-देवता, ब्रह्माजी आदि बहुत घबरा गये। क्षीर सागर जिसकी लक्ष्मी जी पुत्री हैं स्वयं ब्रह्मा जी को लेकर भगवान विष्णु के पास गये और विनती की—हे भगवान! आप लक्ष्मी जी पर कृपा कर दीजिए। अन्यथा यह सारी सृष्टि उनकी तपस्या का भार न सह सकने के कारण लय हो जायेगी। इस पर श्री विष्णु जी ने कहा—हे देवो! जो बात लक्ष्मी जी जानना चाहती हैं वह मैं जानता ही नहीं। क्या लक्ष्मी जी से ज्यादा भी मुझे कोई प्रिय है। जो बात मैं नहीं जानता उनको कैसे बताऊँ? अभी कुछ समय पूर्व मुझे उस परमात्मा की ओर से आदेश मिला है कि वह स्वयं अपनी ब्रह्म-प्रियाओं के साथ हमारे इस ब्रह्माण्ड को देखने आ रहे हैं और वह मेरे तन पर अपनी शक्ति द्वारा उतरेंगे। वह इस संसार में लीला करेंगे। मैं इतना वचन दे सकता हूँ कि जब वह मुझ पर बैठकर

खेल (लीला) करके चले जायेंगे तो मैं लक्ष्मी जी को वह खेल करके दिखा दूँगा। मैं आप लोगों के साथ लक्ष्मी जी के पास चलता हूँ आप लोग उनको समझा देवें। यदि वह मान जायेंगी तो मैं उनको भी पृथ्वी पर साथ ले चलूँगा। इतना कहकर विष्णु जी उनके साथ लक्ष्मी जी के पास गये और उनसे तपस्या समाप्त करने का आग्रह किया। तब लक्ष्मी जी ने तपस्या समाप्त की। उनके पिता ने उनको सारी बात बतायी और कहा कि अब वह जिद न करें। भगवान विष्णु उनको संसार में ले जाकर सारी लीला करके दिखावेंगे। उस समय वह जान लेंगी कि वह किसकी आराधना करते हैं। अभी तक जो भगवान विष्णु कह रहे हैं वह सत्य है। अब उनके आराध्य स्वयं आ रहे हैं और भगवान विष्णु को शरीर धारण करने का हुक्म हुआ है। जब वह शक्ति स्वयं आ जायेगी और अपनी लीला इन्हीं के तन द्वारा करेगी तो विष्णु जी को उनकी सब जानकारी हो जायेगी। फिर वह तुमको उनके विषय में बता देंगे, विश्वास करो। लक्ष्मी जी ने अपनी तपस्या समाप्त कर इस संसार में भगवान विष्णु के साथ जन्म लेना स्वीकार किया। श्री लक्ष्मी जी ने इस संसार में रुक्मिणी के रूप में जन्म लिया।

यह पहले लिखा जा चुका है कि उस सच्चिदानन्द ने अपने सत्ता के स्वरूप को खेल दिखाने के लिए कहा था। उनके आदेश पर अक्षर ब्रह्म ने सबलिक तथा अव्याकृत को हुक्म दिया कि वह सपने का ब्रह्माण्ड बना देवे। अक्षर के चित्त सबलिक से आया हुआ जीव नींद के सागर में तैरने लगा। जिसे आदि नारायण कहा गया। आदि नारायण पर नींद का आवरण होने पर उनके अधीन रहने वाली सभी शक्तियों पर नींद आ गयी और वह नींद के स्वरूप में नारायण के साथ आयीं। इन शक्तियों में प्रकृति ने स्वप्न में कमला का रूप लेकर नारायण के साथ क्षीर सागर में शेष नाग पर विराजमान हुई। फिर नारायण ने अपने नाभि-कमल से त्रिदेवों की उत्पत्ति कर संसार का निर्माण करने की शक्ति देकर यह सारा ब्रह्माण्ड बना दिया। शास्त्रों में लिखा है कि जब महाप्रलय होती है तब सब जगह जल ही जल हो जाता है और उसमें एक अण्डा तैरता रहता है। समय पाकर वह अण्डा फूटता है और नारायण और कमला उसमें से निकल कर सृष्टि बनाते हैं। वह जल वास्तव में नींद का आवरण है। जब शास्त्रों में लिखा है कि महाप्रलय में पाँचों तत्व, तीनों गुणों और चौदह लोकों का नाश हो जाता है तो फिर जल भी उन पाँचों तत्वों में से एक है वह कैसे बच सकता है। इसलिए वह जल नहीं होता है बल्कि वह नींद का आवरण होता है। जिस तरह हम लोग जब सोते हैं तो सोते ही पूरी नींद नहीं आ जाती। कुछ समय बाद धीरे-धीरे गहरी नींद

Nijanand App

आती है। गहरी नींद से पहले नींद की खुमारी शुरू होती है इसके बाद गहरी नींद आती है। फिर गहरी नींद में हम लोग सपना देखना शुरू करते हैं। इस तरह यह सारा संसार आदि नारायण के स्वप्न में रहता है। उसको हुक्म होता है कि वह ब्रह्माण्ड को बनावें। परन्तु 'सच्चिदानन्द' अखण्ड से कहीं नहीं जा सकते। यदि वह स्वयं आवें तो वह जहाँ भी जायेंगे वहाँ की सब वस्तुएँ अखण्ड हो जायेंगी। उस अखण्ड प्रदेश में कोई भी पैदा नहीं हो सकता और न ही कोई मर सकता है। जैसे हम लोग सपने में बम्बई आदि नगरों में घूम रहे होते हैं और हमारे साथ हजारों लोग होते हैं, पर जब सपना टूट जाता है तो देखते हैं कि कुछ भी नहीं है। हम तो चारपाई पर सोये हुए थे, फिर हम बम्बई कैसे पहुँच गये। हम स्वयं बम्बई नहीं गये, बल्कि हमारे सपने का स्वरूप वहाँ गया। जब तक हमारी नींद नहीं टूटी, वह सपने का स्वरूप बना रहा और खेल करता रहा।

आदि नारायण पर नींद का आवरण आया। जब आदि नारायण को गहरी नींद आती है तब वह मन स्वरूप धारण करता है। इसलिए वह आदि नारायण की नींद का स्वरूप होने से नारायण कहलाता है। चूँकि सपने का स्वरूप केवल नींद से बना है इसलिए जब नींद टूटेगी तब स्वरूप भी मिट जाएगा। यह चौदह लोक, पाँच तत्व, तीन गुण सब नींद के हैं और इनमें जितनी भी शक्तियाँ कार्य कर रही हैं वह सारी की सारी नींद का स्वरूप हैं। इसलिए यह समय पाकर लय हो जाती हैं। इसलिए यह क्षर अथवा नाशवान जगत कहलाता है। इसमें जो भी पैदा होता है वह मिट जाता है। यह सारे क्षर के ब्रह्माण्ड इसी तरह खेल करते रहते हैं और समय पूरा होने पर लय हो जाते हैं। यही कारण है कि यहाँ कोई भी वस्तु अखण्ड नहीं है। नारायण से लेकर जीव तक सब स्वप्न के जीव के होने के कारण मिट जाते हैं। इस ब्रह्माण्ड में जो शक्तियाँ कार्य करती हैं वह अपने असल तन से जग जाती हैं और जीव लय हो जाता है। इस तरह यह ब्रह्माण्ड हुक्म द्वारा बना (श्री राज जी ने कहा था कि हे अक्षर, यदि तुम भी खेल देखना चाहते हो तो विष्णु को संसार में जन्म लेने का हुक्म दो और जब वह जन्म लेवें तब तुम अपनी सुरता को विष्णु के जीव पर डाल देना। तब तुम्हारी सुरता के साथ मैं भी अपने जोश की शक्ति को भेजूँगा। इसी तरह यहाँ पर रहने वाली ब्रह्म-सृष्टि को भी नींद का आवरण डालकर उनकी सुरता बृज के अन्दर की युवा सखियों पर डाल दूँगा। मैं सिर्फ अपनी जोश की शक्ति को तुम्हारे साथ भेजूँगा। इसलिए मुझे नींद में नहीं आना पड़ेगा। मैं तुमको सखियों का खेल कि वह यहाँ परमधाम में मेरे साथ क्या करती हैं, दिखाऊँगा। फिर सखियों को वहाँ

के जीवों पर बैठाकर वहाँ का झूठा दुःख का खेल दिखाऊँगा।) भगवान विष्णु, जो नारायण के मन के स्वरूप हैं और सारी सृष्टि का संचालन करते हैं, को भी हुक्म हो गया। उस समय लक्ष्मी जी को तप करते सात कल्पॉत, छियासी युग बीत चुके थे। (जब विष्णु को पारब्रह्म के आने की सूचना मिली तो उन्होंने अपनी पत्नी लक्ष्मी जी को बताया। उन्होंने पहले से ही वसुदेव और देवकी को उनके यहाँ जन्म लेने का वर दे रखा था। (विष्णु ने चतुर्भुज रूप से कारागार में जाकर उन्हें दर्शन दिये और उनसे कहा कि मैं बालक रूप होकर तुम्हारे गर्भ से जन्म लूँगा। तुम उस बालक को नन्द के गाँव बृज में पहुँचा देना और वहाँ पर जिस लड़की ने जन्म लिया हो उसे लाकर अपना लेना।) तब वसुदेव ने पूछा था कि हे नाथ–हमारे शरीर तो बेड़ियों से जकड़े हैं और दरवाजे पर पहरेदार बैठे हैं, इनका क्या होगा? तब चतुर्भुज ने कहा था कि यह बेड़ियाँ, दरवाजे अपने आप खुल जायेंगे। तुम इनकी चिन्ता मत करो। इस तरह भगवान विष्णु ने देवकी के यहाँ कारागार में जन्म लिया और जब अपने आप बेड़ियाँ व दरवाजे खुल गये तब (वसुदेव जी ने उस बालक को बृज पहुँचा दिया। इस तरह यशोदा के यहाँ जिस बालक को पहुँचाया गया वह विष्णु के जीव तथा योग माया की चारों शक्तियों से युक्त था। सुवह उस विष्णु के शरीर से अक्षर की आतम तथा श्री राज जी का जोश अवतरित हुआ। (साथ ही बृज की युवा सखियों पर ब्रह्म-सृष्टियों की आत्माएँ उतरीं तथा बालिकाओं पर अक्षर की चौबीस हजार सुरताएँ, जिनको कुमारिका सखियाँ कहा गया है, उतरीं।) श्री श्यामा जी स्वयं बृज की सखी राधा पर अवतरित हुईं। इस प्रकार विष्णु का शरीर जिसका नाम कृष्ण रखा गया था। आतम अक्षर और जोश धनी-धाम का होने से पूर्ण ब्रह्म का रूप कहलाया। बृज की युवा सखियों पर परमधाम की ब्रह्म-सृष्टियों की आत्माएँ उतरीं। इसका प्रमाण भागवत् से हमें इस प्रकार मिलता है : हिन्दू रीति के अनुसार कोई भी कुँवारी लड़की तब तक सोलह शृंगार नहीं करती जब तक उसकी शादी नहीं होती है। भागवत् साक्ष्य देती है कि जब बृज की युवा सुन्दरियों को श्री कृष्ण के जन्म का पता चला उस समय वे कुँवारी कन्याएँ पूर्ण सोलह शृंगार कर सज-धज कर हाथों में पूजा के थाल लेकर नन्द बाबा को बधाई देने गयी थीं। इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि श्री कृष्ण को बृज की कुँवारी कन्याओं पर बैठी परम पति धाम की आत्माएँ अपना मानकर जिस तरह कोई विवाहिता लड़की अपने पति से मिलने सोलह शृंगार करके जाती है, उसी तरह गयी थीं। उन कुँवारी कन्याओं का इस प्रकार शृंगार करके जाना ही स्पष्ट करता है कि वह शरीर से भले ही बृज की कुँवारी कन्याएँ

Nijanand App

थीं, परन्तु उन पर बैठी परमधाम की आत्माओं ने अपने पति श्री राज जी के जोश स्वरूप को उस सपने के ब्रह्माण्ड में अपने परमधाम वाला पति समझ लिया था।

श्रीकृष्ण जिसे सारा ब्रह्माण्ड विष्णु का अवतार मानता है, उन पर भी कोई शक्ति आकर बैठी थी यह कैसे माना जाये? इस बात का प्रमाण श्रीमद्भागवत् में उपलब्ध है। इससे पहले भी भगवान विष्णु ने इस संसार में इक्कीस अवतार लिये थे। किसी भी अवतार लेने पर भगवान शंकर उनके दर्शन करने नहीं आये थे और न कभी ब्रह्मा जी आये थे। फिर क्या कारण था कि जब इस बार यह बाइसवाँ अवतार यदि भगवान विष्णु था, तो उनके दर्शन करने भगवान शंकर आये। लिखा है कि जिस समय श्रीकृष्ण का जन्म हुआ उसके दूसरे दिन ही भगवान शिव उनके दर्शन को आये और उनका विकराल रूप देख माता यशोदा ने श्रीकृष्ण के दर्शन कराने से इन्कार कर दिया। तब श्रीकृष्ण जो यह बात जानते थे कि भगवान शिव मेरे दर्शन को आये हैं, जोर-जोर से रोने लगे। इस पर भगवान शिव ने कहा—माता यशोदा! श्रीकृष्ण मुझे दर्शन देना चाहते हैं और आप उनको बाहर ला नहीं रही हैं, इस कारण वह रो रहे हैं। आप कृपया उन्हें बाहर लावें तभी वह चुप होंगे। उनकी बात मानकर माता यशोदा श्रीकृष्ण को बाहर लायीं। तब श्रीकृष्ण जो चारों तरफ से कपड़ों में लिपटे हुए थे, अपने पैरों को कपड़ों से बाहर निकाला। तब भगवान शिव ने चरणों को बालों की लटाओं से लगाकर दर्शन किये और फिर वापस चले गये। अब विचार करने की बात है कि इससे पहले कभी भी विष्णु के अवतार लेने पर भगवान शिव उनके दर्शन करने नहीं आये। इस श्रीकृष्ण के दर्शन को वह आये। ऐसी स्थिति में यह मानना पड़ेगा कि यह श्रीकृष्ण केवल विष्णु की शक्ति ही नहीं थे, अपितु इन पर वही शक्ति विराजमान थी जिसका वर्णन पिछले भाग में किया गया है।

जब श्रीकृष्ण पाँच साल के हुए तब एक दिन नारद जी घूमते हुए ब्रह्मा जी की पुरी में चले गये। वहाँ जाकर नारद जी ने ब्रह्मा जी से कहा कि पूर्ण ब्रह्म की शक्ति ने श्रीकृष्ण के रूप में नन्द जी के यहाँ अवतार लिया है। क्या आपको पता नहीं? यदि आपको पता है तो क्या आप भगवान शिव की तरह उस पूर्ण ब्रह्म की शक्ति के दर्शन कर आये हैं? इस पर ब्रह्मा जी ने कहा कि मुझे इस बात का पता तो है कि वह शक्ति आने वाली है, परन्तु यह पता नहीं कि वह आ गयी है। आप यदि कहते हैं कि वह शक्ति प्रकट हो गयी है, तो चलो देखते हैं कि वह शक्ति कौन है?

जब श्रीकृष्ण पाँच वर्ष के हुए तब उनको ग्वाल-बालों के साथ गाय चराने माता यशोदा ने जंगल भेजा। पहले ही दिन ब्रह्मा जी नारद मुनि को साथ लेकर श्रीकृष्ण के दर्शन को आये। श्री ब्रह्मा के मन में सदा अभिमान रहता था कि वह ज्ञान के दाता हैं। इस नाते वह उस सन्देश को भी भूल गये थे कि पारब्रह्म की शक्ति संसार में आ रही है। जब नारद जी ने याद दिलाया तो उनके कहने पर वह यह देखने को आये थे कि देखें कि वह शक्ति कौन है। श्रीकृष्ण जी जब जंगल में गये तो उनको ब्रह्मा जी के आने की खबर हो गयी और साथ ही यह पता लग गया कि वह अभी मुझे देखने को आ रहे हैं, दर्शन करने को नहीं। तब श्रीकृष्ण जी ने अपनी पार की शक्ति से यह जाना कि ब्रह्मा जी को अपने ज्ञान के दाता होने का बहुत गर्व है। इनका गर्व तोड़ना चाहिए। ऐसा सोचकर उन्होंने सभी ग्वाल-बालों को अपने पास बुलाया। माता यशोदा ने जो मक्खन आदि वस्तु वन में जाकर खाने को दी थीं वह सब निकाल कर बैठ गये। जब देखा कि ब्रह्मा जी ऊपर आसमान पर आ गये हैं तब उन्होंने मक्खन निकाल कर पहले एक ग्वाला के मुख में दिया। फिर उसी जूठे मक्खन को स्वयं खा गये। यह सब ब्रह्मा जी देख रहे थे। श्रीकृष्ण को ग्वालों का जूठा खाते देखकर ब्रह्मा जी नारद से बोले कि क्या पारब्रह्म ऐसा हो सकता है। यह गन्दे ग्वालों का जूठा खा रहा है। यह पारब्रह्म है, मैं यह नहीं मानता। इस पर नारद जी बोले कि यदि यह पारब्रह्म न होते तो भगवान शिव इनके दर्शन को न आते। आपको भ्रम हो गया है। यह सही है कि यह पारब्रह्म के अवतार हैं। इस पर ब्रह्मा जी ने कहा कि तुम कहते हो तो अभी इनकी परीक्षा ले लेते हैं। जैसे ही श्रीकृष्ण ग्वालों व बछड़ों से अलग होंगे, मैं इनको हरण कर लूँगा और इन्हें ले जाकर एक गुफा में बन्द कर दूँगा। यदि यह पारब्रह्म होंगे तो उन्हें यह अपने आप छुड़ा लेंगे। मेरी शक्ति को सिवाय पारब्रह्म के इस संसार में और कोई नहीं काट सकता है। इस तरह यदि इन्होंने मेरी शक्ति को काट दिया तो मैं मान लूँगा कि यही पारब्रह्म हैं।

ब्रह्मा जी ने समय पाकर ग्वालों व बछड़ों का हरण कर उन्हें दूर पहाड़ों की एक गुफा में ले जाकर बन्द कर दिया और स्वयं चले गये। इस सारी लीला को श्रीकृष्ण जी ने देख अपनी पार की शक्ति से प्रेम के स्वरूप ग्वाल-बालों सहित बछड़ों को नया बना लिया। उधर ब्रह्मा जी उन बछड़ों व ग्वाल-बालों आदि को गुफा में बन्द करने के बाद ब्रह्मापुरी वापस चले गये और वहाँ जाकर भूल ही गये कि वह ग्वाल-बालों आदि को बन्द कर आये थे। इस बात को एक साल बीत

Nijanand App

गया। तब पुनः एक दिन नारद जी ब्रह्मापुरी पहुँच गये और ब्रह्मा जी को याद दिलाया कि आप तो ग्वाल-बालों को बन्द कर आये थे, परन्तु वहाँ पर श्रीकृष्ण जी ने अपनी शक्ति द्वारा तुरन्त नये बना लिये थे और आप यहाँ आकर भूल ही गये। यह भी पता नहीं किया कि आपने जिन ग्वाल-बालों को बन्द किया था वह जिन्दा भी हैं या मर गये। तब ब्रह्मा जी बोले कि मैं तो वास्तव में भूल गया था। अब तुमने याद दिलाया है तो चलो चलकर देखें कि क्या हुआ? इस प्रकार जब ब्रह्मा जी ने वृज में आकर देखा कि वैसे के वैसे ग्वाल-बाल तथा बछड़े जंगल में खेल रहे हैं। तब उन्होंने सोचा कि हो सकता है श्रीकृष्ण जी ने खोजकर उन्हें ढूँढ़ लिया हो और गुफा से छुड़ा लाये हों। इसलिए पहले गुफा में चलकर देखना चाहिए। वह नारद जी को साथ लेकर जब गुफा में गये और पत्थर हटाकर देखा तो वहाँ सभी ग्वाल-बाल व बछड़े निद्रा में मस्त पड़े सो रहे थे। यह देखकर वह हैरान रह गये। भ्रम-वश एक बार फिर वन में जाकर देखा और वहाँ भी वैसे ही ग्वाल-बाल व बछड़ों को खेलते देखा। तब वह मन ही मन बहुत पछताए और सोचने लगे कि अब यह तो सावित हो गया कि यही पारब्रह्म हैं। परन्तु अब इनके सम्मुख कैसे जावें। अब यदि किसी तरह श्रीकृष्ण की जूठन मुझे मिल जावे, तब ठीक रहेगा। ऐसा सोचकर ब्रह्मा जी उसी वन में चले गये जहाँ श्रीकृष्ण जी ग्वालों के साथ खेल रहे थे। ब्रह्मा जी ने सोचा जब श्रीकृष्ण भोजन करने के बाद पत्तल फेंकेंगे तो मैं उसमें से एक कण प्रसाद का ले लूँगा। इसके लिए यदि मैं कौवा बनकर पेड़ पर बैठ जाऊँ तो किसी को पता भी नहीं चलेगा। इतना सोचकर ब्रह्मा जी कौवे का रूप धारण कर वहीं एक पेड़ पर बैठ गये। यहाँ पर पुनः ब्रह्मा जी ने अपनी बुद्धि की चतुराई का प्रयोग किया। वह यह बात भूल गये कि वहाँ पर बालक कृष्ण के रूप में स्वयं पारब्रह्म खेल रहे हैं, तो क्या कौवे के रूप में ब्रह्मा जी को वह न पहचान लेंगे? इस प्रकार जब श्रीकृष्ण जी ने ब्रह्मा जी को कौवा बने पेड़ पर देखा तो जान गये कि ब्रह्मा जी अपने चतुराई द्वारा प्रसाद प्राप्त कर अपनी भूल को बिना क्षमा माँगे सुधारना चाहते हैं। श्रीकृष्ण जी ने सब ग्वालों को एकत्रित करके कहा कि साथिओ, आओ, हम भोजन करें। सभी ग्वाल-बाल तुरन्त एकत्रित हो गये। भोजन सब ग्वालों को पत्तलों पर परोस दिया। श्रीकृष्ण जी बोले साथियो! आज आप जानते हैं कौन सा दिन है? इस पर सब ग्वाले बोले कि हम नहीं जानते। तब श्रीकृष्ण जी ने कहा कि आज अन्नकूट का दिन है इसलिए कोई भी अपनी पत्तलों में जूठा नहीं छोड़ेगा, अन्यथा अन्न देव अपने से नाराज हो जायेंगे। इतना सुनकर सभी ग्वालों ने उत्तर दिया

कि आपके कहे अनुसार हम कोई भी जूठा नहीं छोड़ेंगे। सभी ग्वाले तथा स्वयं श्रीकृष्ण जी भोजन करने लगे। जब सभी ने भोजन कर लिया और कोई जूठन नहीं छोड़ी, तब ऐसा देख ब्रह्मा जी सोचने लगे कि श्रीकृष्ण जी को पता चल गया है, इस वास्ते उन्होंने जूठन पत्तलों में नहीं छोड़ने दिया। चलो कोई बात नहीं। पत्तलों में भले ही जूठन नहीं छोड़ी है परन्तु जहाँ से पत्तल जुड़े हैं वहाँ पर कहीं न कहीं तो एक-आध कण रह ही जायेगा। मैं उसे ही ले लूँगा। ऐसा सोचकर वह ग्वालों द्वारा पत्तलों के फेंकने का इन्तजार करने लगे। उधर श्रीकृष्ण जी ग्वालों से बोले कि आज एक कण भी खाने का नीचे नहीं गिरना चाहिए। यदि ऐसा हुआ तो अन्नकूट राजा अपने से नाराज होंगे और फिर कभी अन्न खाने को नहीं मिलेगा। इस वास्ते तुम अपनी पत्तलों को बड़ी सावधानी से मोड़ो और चार बार मोड़कर अपनी-अपनी गायों के मुख में दे दो। तब सभी ग्वालों ने अपनी पत्तलों को चार बार मोड़कर छोटा करके अपनी-अपनी गायों के मुख में दे दिया। ऐसा देख ब्रह्मा जी सोचने लगे कि कोई बात नहीं यदि श्रीकृष्ण जी ने पत्तलों को गायों को खिला दिया है, परन्तु सभी लोग खाने के बाद कुल्ला करेंगे तो मैं मछली बन कर यमुना जी में तैरने लग जाता हूँ जब ग्वाल-बाल तथा श्रीकृष्ण जी हाथ धोकर कुल्ला करेंगे तो कोई न कोई तो मुझे प्रसाद का कण मिल जायेगा। ऐसा विचार कर ब्रह्मा जी मछली का रूप धारण कर जल में इधर-उधर तैरने लगे। श्रीकृष्ण जी सभी ग्वालों को लेकर यमुना जी पर पानी पीने आये तो देखा कि ब्रह्मा जी मछली बन कर तैर रहे हैं। वह समझ गये कि कुल्ले द्वारा जो कण गिरेंगे वह प्रसाद के रूप में यह ग्रहण करेंगे। ब्रह्मा जी की इतनी चतुराई देखकर श्रीकृष्ण जी मन ही मन मुस्कराने लगे और सभी ग्वालों से बोले कि आप लोग ठीक उसी प्रकार करना जैसे मैं करूँ। आज अपने को कुल्ला भी नहीं करना है। सभी लोग मेरे साथ यमुना किनारे पर लेट जाओ और सीधा मुँह पानी में डालकर पानी मुँह में भरो और उसे कुल्ला करके बाहर मत निकालो। सीधे पेट में उतार लो फिर लेटे-लेटे मुँह द्वारा वैसे पानी पी लो जैसे गायें आदि पीती हैं। तब सब ग्वालों ने वैसा ही किया और पानी बाहर मुँह से निकाला ही नहीं और न ही कोई कण जूठन का यमुना जी में गिरने दिया। ब्रह्मा जी ने जो मछली का रूप धारण किये हुए थे, श्रीकृष्ण द्वारा व ग्वालों को ऐसा करते देखा तो बहुत शर्मिन्दा हुए। अन्त में ब्रह्मा जी अपना वास्तविक रूप धारण कर श्रीकृष्ण जी के पास हाथ जोड़कर क्षमा माँगने लगे। इस पर श्रीकृष्ण जी बोले—हे ब्रह्मा! तुमको ज्ञान का रूप देकर इस संसार में लोगों को समझाने के लिए भेजा था। परन्तु तुम ज्ञान को

Nijanand App

पाकर अहंकार के मद में सबको भूल गये। इस वास्ते जब तक यह ब्रह्माण्ड खड़ा है तुमको क्षमा नहीं किया जाएगा परन्तु इसके लय होने के बाद तुमको क्षमा कर दिया जायेगा। इस दृष्टांत से आप स्वयं आभास कर सकते हैं कि यह बालक श्रीकृष्ण यदि केवल विष्णु का अवतार होते तो ब्रह्मा और विष्णु जी एक जैसी शक्तियाँ होने के नाते क्या ब्रह्मा जी श्रीकृष्ण जी के जूठन पाने के लिए ऐसा करते। इससे स्पष्ट है कि यह बालक श्रीकृष्ण कोई पार की बड़ी शक्ति हैं।

आगे भी एक उदाहरण श्रीकृष्ण के जीवन मे आता है जो श्रीकृष्ण के पार की शक्ति का होना सिद्ध करता है। श्रीकृष्ण सात साल के थे। बृज के रहने वाले लोग इन्द्र देवता की पूजा किया करते थे। श्रीकृष्ण ने इसे बन्द कराया। यह घटना इस प्रकार घटित हुई। बृज के रहने वाले लोग बरसात शुरू होने से कुछ समय पूर्व इन्द्र देवता की पूजा किया करते थे। गाँव के लोग पकवान, मिठाई आदि बनाकर इन्द्र देवता को चढ़ाते थे। इस पर्व के दिन सभी सखियाँ घर में व्यंजन बनाने में लगी हुई थीं और श्रीकृष्ण के पास कोई नहीं गयी। तब स्वयं श्रीकृष्ण जी ने राधा के यहाँ जाकर पता किया, तो राधा ने श्रीकृष्ण को इन्द्र पूजा क. दिन बताकर सब बात बतायी। इस पर श्रीकृष्ण ने राधा से कहा कि तुम लोग इन्द्र की पूजा करते हो, परन्तु तुम्हारी रक्षा तो गोवर्धन पर्वत करता है। यदि तुम्हारे गाँव में गोवर्धन पर्वत न होता तो पानी से तुम्हारा सारा गाँव बह जाता। इतने समय से तुम लोग इन्द्र की पूजा करती हो क्या कभी उसने तुम लोगों को साक्षात् रूप से दर्शन दिये हैं। यदि तुम एक बार सच्चे मन से गोवर्धन की पूजा करो तो साक्षात् दर्शन देकर तुम्हारा सारा भोग खाने आ जाएगा। तब राधा जी बोलीं—यदि आप कहते हैं तो हम सब मिलकर इन्द्र के स्थान पर गोवर्धन पर्वत की पूजा करेंगी। ऐसी बात राधा जी श्रीकृष्ण जी से कहकर सब गाँव की सखियों को बताने चली गईं। राधा जी ने सबको गोवर्धन की पूजा करने को राजी कर लिया। शाम को जब सब भोग की सामग्री तैयार हो गयी तो सब बृज के लोग व सखियाँ नये-नये वस्त्र धारण कर भोग के थाल सजा कर श्रीकृष्ण जी के साथ गोर्वधन पर्वत पर गये। श्रीकृष्ण जी ने माया के रूप में पर्वत पर एक विशाल पत्थर का मुख बना दिया। जब सब लोगों ने श्रीकृष्ण जी के कहनें पर गोवर्धन की स्तुति की तो पर्वत का मुख खुल गया और अन्दर से आवाज आई कि मैं तुम लोगों से प्रसन्न हुआ। मैं इस गाँव में बहुत समय से हूँ। आप लोगों ने कभी भी मुझे भोग नहीं लगाया, इस कारण मैं बहुत भूखा हूँ। तुम लोग जो भी सामग्री लाये हो, सभी मेरे मुख में डालते जाओ। इस प्रकार श्रीमद्भागवत् कहती है कि बृजवासी

जितने भी थाल मिठाई, पकवान वगैरह लाये थे, वह सब कुछ उस मुख ने खा लिया और फिर आशीर्वाद दिया कि मैं तुम सब पर प्रसन्न हुआ और तुम सबकी रक्षा करूँगा। इस प्रकार सभी गाँव के लोग गोवर्धन पूजा करके वापस आ गये।

नारद मुनि, जो सारे संसार में भ्रमण करते रहते हैं, को जब पता चला कि बृजवासियों ने इस बार इन्द्र की पूजा नहीं की और गोवर्धन पर्वत की पूजा की है तो वह सीधे स्वर्गलोक (इन्द्रपुरी) में चले गये। वहाँ जाकर इन्द्रदेव को नमस्कार किया। इन्द्रदेव ने नारद से पूछा, हे मुनीश्वर! नीचे मृत्यु लोक में क्या हाल है? इसके उत्तर में नारद जी ने बृज की सारी बात बताकर कहा कि हे इन्द्र देव! क्या आपको खबर नहीं कि मृत्युलोक में बृज के अन्दर पारब्रह्म श्री कृष्ण के रूप में प्रकट हो चुके हैं। उन्होंने बृजवासियों से आपकी पूजा बन्द कराकर गोवर्धन पर्वत की पूजा शुरू करा दी है। नारद जी द्वारा यह बात सुनकर कि पारब्रह्म का अवतार मृत्युलोक में श्रीकृष्ण के रूप में हुआ है, वह बोले कि मुनिवर आप भी कहाँ की बात करते हो। यदि पारब्रह्म संसार में आये होते तो क्या मुझे पता न होता। मैं नहीं मान सकता कि नन्द का वह छोकरा पारब्रह्म है। उस बालक ने अपनी महत्ता दर्शाने के लिए मेरी पूजा बन्द करवा कर गोर्वधन पर्वत की पूजा करवाई है। मैं अभी बादलों को हुक्म देता हूँ कि वह बृज और उसके आस-पास इतनी भयंकर वर्षा करें कि वह बृज सहित सारा क्षेत्र जलमग्न हो जावे। ऐसी बात इन्द्र देव ने नारद जी से करने के बाद बादलों को वैसा ही हुक्म दिया। तब बादलों ने बृज के क्षेत्र में तबाही मचा दी। बृजवासी वर्षा का ऐसा प्रकोप देखकर सोचने लगे कि इस प्रकार सारा गाँव डूब जाएगा। सभी लोग श्रीकृष्ण के पास गये और कहा कि आपके कहने पर हम लोगों ने इस बार इन्द्र देव की पूजा न करके गोर्वधन पर्वत की पूजा की है। इस कारण इन्द्र देवता ने ऐसा प्रकोप हम पर किया है। सो बताओ अब हम क्या करें। ऐसा सुनकर श्रीकृष्ण जी ने कहा कि आप लोगों ने जिस गोवर्धन की पूजा की थी, उसी के पास चलो, वह स्वयं हमारी रक्षा करेंगे। श्रीकृष्ण जी के ऐसा कहने पर बृजवासी अपना सभी सामान और गाय-बछड़ों को साथ लेकर गोवर्धन-पर्वत पर आ गये और प्रार्थना करने लगे। जब श्रीकृष्ण जी ने सबको प्रार्थना करते देखा तो आँखों के इशारे मात्र से उस पूरे पर्वत को जमीन से काटकर ऊपर उठा दिया। जब पहाड़ जमीन से ऊपर उठने लगा तो वहाँ सभी से बोले कि आप लोग जल्दी-जल्दी बाँस आदि लेकर आओ और इस पर्वत के नीचे लगा दो। ऐसा कह कर स्वयं अपनी छोटी अँगुली देकर पहाड़ को ऊपर उठा दिया। तब सभी बृजवासी अपने-अपने गाय-बछड़ों

Nijanand App

तथा सामान सहित उस पहाड़ के नीचे आकर खड़े हो गये। श्रीकृष्ण पारब्रह्म की शक्ति ने विष्णु के शरीर को हुक्म दिया कि वह अपना सुदर्शन चक्र पहाड़ के ऊपरी तल पर छोड़ दें जिससे पहाड़ के ऊपर पड़ने वाला वर्षा का जल सूखता रहे। भगवान विष्णु ने अपना सुदर्शन चक्र पहाड़ के ऊपरी तल पर छोड़ दिया। परिणामस्वरूप ऊपरी तल पर एक बूँद पानी भी नहीं आया। लिखा है कि सात दिन और सात रात्रि तक पानी बरसा। जितना बादलों के पास पानी था वह खत्म करके वापस चले गये। वर्षा बन्द हो गयी। श्रीकृष्ण सब ग्वालों सहित बृजवासियों को वापस ले आये और सभी लोग आराम से रहने लगे। उधर इन्द्र देव ने यह समझ लिया कि बृज की सारी नगरी पानी में बह गयी होगी।

एक दिन पुनः नारद जी इन्द्रलोक में इन्द्रदेव के पास गये और बताया कि आपके बादलों का पानी श्रीकृष्ण ने बृज के गाँव में पड़ने ही नहीं दिया और वह पहले की तरह आनन्द-मंगल से गाँव में रह रहे हैं। इन्द्र देव ने ऐसा सुनकर क्रोध में कहा कि यदि ऐसा है तो मैं अभी जिस जगह पर बृज बसा है उसके नीचे से समुद्र तल को फाड़कर बृज के गाँव को सभी सामग्री सहित डुबो देता हूँ तब देखता हूँ कि श्रीकृष्ण बृज को कैसे बचाते हैं। इतना कह कर इन्द्रदेव जहाँ पर बृज गाँव बसा था उसके ठीक नीचे से धरती फाड़कर पाताल का पानी ऊपर ले आये। श्रीकृष्ण ने इन्द्र द्वारा ऐसा किये जाने पर बृज जितने भाग में बसा था वह पूरा का पूरा भाग पृथ्वी से काट दिया। पाताल का पानी बढ़ रहा था बृज का पूरा गाँव ही पानी में तैरने लगा था। पानी संसार को डुबाने लगा। नारद जी भागे-भागे इन्द्र के पास गये और बोले कि आपकी इस कृपा से सारा संसार डूबता चला जा रहा है और बृज की सारी धरती पानी पर तैर रही है। अब तो आप उनको पारब्रह्म मानकर उनसे क्षमा माँग लें, अन्यथा सारा संसार जलमग्न हो जायेगा। नारद जी से ऐसी बात सुनकर इन्द्र देव ने फौरन पाताल के पानी को रोका और स्वयं बृज में श्रीकृष्ण जी के पास जाकर उनसे क्षमा माँगी। श्रीकृष्ण ने इन्द्र देव को कहा कि आप लोगों को इस पृथ्वी की रक्षा करने के लिए भेजा गया है या अपनी पूजा कराने के लिए या जो तुम्हारी पूजा न करे उसे अपना बल प्रयोग कर समाप्त कर दो? याद रखो, इस बार क्षमा किया जाता है। अब यदि ऐसा हुआ तो पूरी सजा मिलेगी। इस घटना से आप स्वयं ही जान सकते हैं कि श्रीकृष्ण पूर्ण ब्रह्म न होते और वह केवल विष्णु का अवतार होते तो पहली बात यह कि नारद जी विष्णु और इन्द्र को लड़ाते ही नहीं और यदि कभी ऐसी नौबत आ भी जाती तो इन्द्र और विष्णु की शक्तियाँ जब आपस में

टकरातीं, तो विनाश अवश्य होता। परन्तु श्रीकृष्ण की पारब्रह्म की शक्ति के आगे भला इन्द्र की शक्ति क्या कर सकती थी। इसी कारण जितना भी भाग जलमग्न हुआ था वह तुरन्त नया बन गया। इससे यह स्पष्ट हो गया कि यह श्रीकृष्ण की शक्ति पारब्रह्म स्वरूप है।

श्रीकृष्ण को समाप्त करने के लिए कंस ने तमाम प्रयास किये। उसने अपनी दानव शक्ति के कितने ही स्वरूप जैसे : अघासुर, बकासुर, पूतना आदि भेजे परन्तु श्रीकृष्ण पर कोई भी शक्ति हावी न हो सकी। इन्द्र के प्रकोप के बाद ऐसी कोई घटना नहीं घटी। श्रीकृष्ण जी सखियों के साथ आनन्द-विहार की लीला वन में जाकर करते थे। समय बीता और उन बृज की युवा सखियों की शादियाँ हो गयीं। इसी बीच की एक घटना और आपको बताता हूँ जिसका सम्बन्ध आगे चलकर जुड़ेगा। जब श्रीकृष्ण पाँच साल के थे वन में रहने वाली 8 से 12 साल की कन्याओं ने एक दिन श्री कृष्ण से कहा कि आप सभी बड़ी सखियों के साथ खेल करते हैं, परन्तु हम लोगों के साथ खेल नहीं करते। आप हम सभी के साथ रास-क्रीड़ा किया करो। कुमारिका सखियों की ऐसी बात सुनकर बालक श्रीकृष्ण ने उनसे कहा कि समय आने पर तुम्हारे साथ भी खेल करेंगे। लेकिन अभी नहीं। श्रीकृष्ण की ऐसी बात सुनकर सब कुमारिका सखियाँ वहाँ से चली आयीं परन्तु सबने मिलकर यह तय किया कि जब तक श्रीकृष्ण जी हमारे साथ नहीं खेलते, तब तक हम सब यमुना जी में रोज सुबह स्नान किया करेंगी। ऐसा विचार कर दूसरे दिन से ही सब सखियाँ सुबह उठकर यमुना जी पर स्नान करने जाने लगीं। सखियों ने जब यह स्नान करना शुरू किया, वह कार्तिक का महीना था। पूरे एक माह तक वह स्नान करने जाती रहीं। एक दिन श्रीकृष्ण जी को इस बात का पता चल गया कि सखियाँ जल में नग्न स्नान करती हैं। दूसरे दिन श्रीकृष्ण जी जिस पेड़ के नीचे सखियों ने वस्त्र उतार कर रखे थे, वहाँ से उन कुमारिका सखियों के सभी वस्त्र उठाकर उसी पेड़ पर चढ़कर बैठ गये और बाँसुरी बजाने लगे। जब सखियों ने श्रीकृष्ण जी की बांसुरी की आवाज सुनी तो उन्होंने देखा कि श्रीकृष्ण सब सखियों के वस्त्र लेकर ऊपर चढ़कर बैठे बाँसुरी बजा रहे हैं। इतना देख सभी सखियाँ श्रीकृष्ण से वस्त्रों को वापस करने की प्रार्थना करने लगीं। तब श्रीकृष्ण जी ने उन सखियों से कहा कि तुम लोग आज के बाद कभी भी नग्न स्नान न करने का वचन दो, तभी तुमको वस्त्र वापस मिलेंगे। तब सब सखियों ने कहा कि हम इसके लिए आपको वचन देती हैं यदि आप भी हम लोगों को एक वचन दो। श्रीकृष्ण जी ने पूछा कि तुम क्या चाहती हो? तब सब

Nijanand App

सखियों ने कहा कि जिस प्रकार आप सखियों के साथ खेल करते हो उसी तरह कुछ दिन हमारे साथ भी खेल करने का वचन दो। तब श्रीकृष्ण जी ने उन सखियों को वचन दिया कि मैं तुम्हारे साथ भी लीला करूँगा, परन्तु आज के बाद तुम सभी ने कभी नग्न स्नान किया तो तुम्हारे साथ रास नहीं करूँगा। इतना वचन देकर सब सखियों के वस्त्र श्रीकृष्ण जी ने वापस कर दिये। हिन्दू धर्म में जो कार्तिक का एक माह का स्नान करने की प्रथा है, वह इसी घटना से सम्बन्ध रखती है। कहा जाता है कि यदि कोई कुँवारी कन्या कार्तिक में एक मास का स्नान करके जो भी माँगे, वह पूरा हो जाता है। इस प्रकार नाना प्रकार की लीलाएँ श्रीकृष्ण जी ने कीं।

लगभग सभी सखियों की शादियाँ हो गयीं और श्रीकृष्ण जी भी दस साल के हो गये। अब सखियों को एक तो घर से फुर्सत नहीं मिलती थी और यदि किसी तरह समय निकाल कर वह वन में जाती भी थीं तो उनका ध्यान घर पर लगा रहता था। खेल में पहले जैसा आनन्द नहीं रह गया था। एक साल बेदिली से खेल करते-करते गुजरा और श्रीकृष्ण जी ग्यारह साल के हो गये। एक दिन जब पूर्णिमा की रात्रि थी तो श्रीकृष्ण जी ने सखियों को बुलाकर कहा—सखियो! आज पूर्णिमा का पूरा चाँद निकलेगा। इस वास्ते आज तुम लोग मेरे साथ रात भर रास-क्रीड़ा करना। श्रीकृष्ण जी का इतना कहना था कि सब सखियाँ एक-दम रुष्ट होकर बोलीं कि एक तो हमें घर में रोज डाँट पड़ती है जब तुम्हारे पास घण्टा-दो घण्टा आती हैं और यदि रात तुम्हारे साथ रह गयीं तो हम लोगों को हमारे घर वाले घर से निकाल देंगे। तुम्हारा क्या जाएगा, बदनामी तो हमारी होगी। इसलिए हम लोग आज के बाद से कभी दिन में भी खेलने नहीं आयेंगी। आप हमारी प्रतीक्षा मत करना। इस तरह की और भी बहुत-सी बातें करके सखियाँ अपने घरों में चली गईं। भागवत् कहती है कि यह सखियों और श्रीकृष्ण जी का वियोग बावन दिन का रहा। तब श्रीकृष्ण जी ने सोचा कि परमधाम में मुझसे एक दिन का भी विछोह नहीं सह सकने वाली यह माया में आकर सब भूल गयीं। आज बावन दिन हो गये हैं। अब इस संसार से सखियों को लेकर वापस चलना चाहिए। ऐसा विचार करके भगवान विष्णु के शरीर से आतम अक्षर और परमधाम के धनी श्री राज का जोश अलग होकर विष्णु से बोला कि हे देव! तुमने हमारे कारण इस संसार में जन्म लिया है। अब हमारा यहाँ का कार्य समाप्त हुआ। इस संसार में हमारी खातिर तुमने शरीर धारण किया। तुम आज तक स्वयं कभी भी अखण्ड नहीं हुए हो। नारायण की नाभि-कमल से उत्पन्न होकर जब महाप्रलय

होती है, नारायण में समा जाते हो। परन्तु अब हम तुम्हें अखण्ड करने का वचन देते हैं और आज के बाद इस संसार में जो भी तुम्हारे इस बाल स्वरूप श्रीकृष्ण की आराधना करेगा वह भी तुम्हारे प्रताप से अखण्ड में चला जावेगा और वापस इस धरती पर उसका कभी जन्म नहीं होगा। इस बात का प्रमाण है कि बाल स्वरूप श्रीकृष्ण का ध्यान करने वाला सदा अखण्ड में चला जावेगा। विष्णु भगवान को वरदान देकर अक्षर की आतम और श्री राज का जोश वापस बेहद भूमि में चला गया।

बेहद भूमि में नूर तत्व से नया शरीर श्रीकृष्ण का बना। उस शक्ति ने योग माया द्वारा अखण्ड (बेहद) भूमि में एक नया स्थान बनाया जिसमें वृन्दावन को बनाया। जब सब सामग्री बनकर तैयार हो गई तो वहीं बेहद भूमि में ही श्रीकृष्ण ने बाँसुरी बजाई। इसकी आवाज बृज में सुनाई दी। उस आवाज को सुनकर बृज के अन्दर रहने वाली सखियाँ जिन पर परमधाम की ब्रह्म-सृष्टियों की आत्मा बैठी थी, उस समय जिस हालत में थीं घर से भाग खड़ी हुईं। लिखा है कि कोई सखी पति को खाना खिला रही थी तो वह खाना वहीं छोड़कर भागी। कोई अपने बच्चों को दूध पिला रही थी या कोई गायें दुह रही थी, वह सब कुछ वहीं छोड़कर भागीं। कुछ सखियाँ जो थोड़ी होश में थीं, उन्होंने सोचा कि हमारे पति हमें आवाज देकर बुला रहे हैं, हमको शृंगार करके जाना चाहिए। वह जल्दी-जल्दी सिंगार करने लगीं। कान का आभूषण बालों में, बालों का कानों में, इसी तरह उल्टा-सीधा सिंगार करके भागीं। कहते हैं कि जब सखियों को घर वालों ने इस प्रकार भागते देखा तो कइयों ने उन सखियों को कमरों में बन्द कर दिया। वह सखियाँ वहीं शरीर छोड़कर आत्मा द्वारा जहाँ बाँसुरी बज रही थी, वहाँ पहुँच गयीं। जो भागी थीं वह भागते-भागते गिरीं और शरीर छोड़कर आत्मा द्वारा वहाँ पहुँच गयीं। इस तरह सभी ब्रह्म-सृष्टियाँ और बृज के अन्दर उतरीं 24 हजार कुमारिका सखियाँ योगमाया में प्रविष्ट हो गयीं। खेल में एक-एक ब्रह्म-सृष्टि पर दो-दो कुमारिकाओं की सुरता बैठ गयी। इस खेल को देखने आई सखियाँ आतम द्वारा बेहद भूमि में श्रीकृष्ण के सामने पहुँच गयीं। जब सब सखियाँ आ गयीं, तब सभी से श्रीकृष्ण जी ने कहा कि आप लोग मेरे पास क्यों आयी हैं? क्या पतिव्रता धर्म इसी को कहते हैं कि अपने पति को छोड़कर दूसरे पुरुषों के पास चली जाओ। जब मैंने बृज के अन्दर तुम लोगों को वन में आने को कहा था तब तुम लोगों ने मुझे तरह-तरह की बातें सुनायी थीं। अब क्या करने आई हो? तब सखियों ने श्रीकृष्ण को उत्तर दिया कि आपने जो कुछ कहा वह सही है। वह हमारे शरीर के पति थे और जब तक हम लोग शरीर में रहीं, उस मर्यादा को पूरी तरह

Nijanand App

निभाया। अब हमने शरीर छोड़ दिया है। अतः शारीरिक सम्बन्ध भी समाप्त हो गया है। आप हमारी आत्मा के पति हैं। इस वास्ते अब आप हमारे पति हैं। पतिव्रता के नाते अब हमारे सब कुछ आप ही हैं। श्रीकृष्ण ने सखियों से ऐसा उत्तर सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता महसूस की और उसी समय योग माया को हुक्म दिया कि सभी सखियों को नये नूरी तन दे दो। सभी सखियों को नूरी तन दे दिये गये और सखियाँ श्रीकृष्ण के साथ रास-क्रीड़ा में तरह-तरह के आनन्द के खेल करने लगीं।

खेल करते-करते जब कुछ समय बीत गया, तो श्रीकृष्ण जी राधा जी को लेकर एकान्त में आ गये और उनसे बड़ी मीठी-मीठी बातें करके कहने लगे कि मैं तुमको सबसे ज्यादा प्रेम करता हूँ। चलो एकान्त में कहीं चल कर प्रेम की बातें करें। श्रीकृष्ण द्वारा यह कहने पर कि वह सिर्फ मुझे ही चाहते हैं राधा जी गर्व से मन ही मन सोचने लगीं कि श्रीकृष्ण मुझे सबसे ज्यादा चाहते हैं। इसलिए आज इनसे मैं जो भी कहूँगी यह मानेंगे। ऐसा सोचकर राधा श्रीकृष्ण से बोलीं कि मुझे आपके साथ चलने में कोई आपत्ति नहीं है, परन्तु इतने दिन से खेल खेलते-खेलते मैं बहुत थक गई हूँ। यदि आप मुझे अपने कन्धों पर बैठा कर ले चलें तो मैं चल सकती हूँ। श्रीकृष्ण राधा की ऐसी बात सुनकर बोले कि चलो। आज तुमको मैं कन्धों पर बैठा कर ले चलता हूँ। मैं नीचे बैठता हूँ तुम मेरे कन्धों पर बैठ जाओ। ऐसा कहकर श्रीकृष्ण नीचे बैठ गये। तब राधा जी ने एक पाँव उठाकर श्रीकृष्ण के कन्धों पर बैठना चाहा तो श्रीकृष्ण अन्तर्ध्यान हो गये और राधा जी लड़खड़ा कर नीचे गिर गईं। जब सखियों ने राधा जी को गिरते देखा तो दौड़कर उनके पास आयीं और राधा जी को उठाकर पूछने लगीं कि आप गिर कैसे गयीं? श्रीकृष्ण जी कहाँ पर हैं? राधा जी ने सारी बात सखियों को बताई तो सभी सखियाँ मिलकर श्रीकृष्ण को ढूँढ़ने लगीं। श्रीकृष्ण जी ने जब बंशी बजाई थी और सखियों को अपने पास बुलाया था, तब सारा क्षर का ब्रह्माण्ड उसी समय लय कर दिया था। श्रीकृष्ण जी के अन्तर्ध्यान होने का कारण यह था कि सखियाँ दुःख का खेल देखने आयी थीं। उन्होंने वृज में कोई दुःख का खेल नहीं देखा था। इनको दुःख का अनुभव कराने हेतु और अक्षर ब्रह्म को जो सखियों का प्रेम लीला का खेल देख रहा था को यह याद दिलाने के लिए कि वह सखियों के साथ खेल देखते-देखते मस्त होकर कहीं यह न समझ बैठें कि वह परमधाम के अन्दर ही यह खेल देख रहे हैं, उनको यह आभास हो जावे कि पहले उन्होंने क्षर के ब्रह्माण्ड में काल माया में खेल देखा था और अब अखण्ड में बेहद भूमि

में वह नित्य वृन्दावन में खेल देख रहा है। इस कारण श्रीकृष्ण जी पर से श्री राज जी ने अपना जोश खींच लिया था और वह अन्तर्ध्यान हो गये। अक्षर ब्रह्म ने नींद से जागकर सोचा कि मैं जो देख रहा था वह सखियाँ और वह तन कहाँ चला गया? अक्षर ब्रह्म ने श्री राज जी से प्रार्थना की कि मैंने जो वृज का खेल देखा है कृपया उसे अखण्ड कर दीजिए ताकि जब मेरी इच्छा हो मैं इसे देख लिया करूँ। इस पर श्री राज जी ने अक्षर ब्रह्म से कहा कि हम तुम्हारा यह खेल अखण्ड कर देंगे। अभी सखियों को विरह का खेल दिखा कर फिर रास-लीला करेंगे। जब वह रास लीला में चली जावेंगी तब सारी वृज लीला को अव्याकृत में अखण्ड कर देंगे।

उधर श्रीकृष्ण के वियोग में सखियाँ बहुत दुःखी हुईं। तब श्री इन्द्रावती सखी ने सब से कहा कि श्रीकृष्ण जी हमसे रूठ गये हैं। अब यदि हम लोग जो वृज के अन्दर हुए खेल को नाटक द्वारा फिर करें, तो शायद श्रीकृष्ण वापस आ जाएँ। श्री इन्द्रावती सखी की यह बात सुनकर सब सखियों ने इन्द्रावती से पूछा कि नाटक तो हम करते हैं। परन्तु यह बताओ कि श्रीकृष्ण कौन बनेगा? इस पर विचार हुआ कि श्रीकृष्ण कौन बने। अन्ततः सब सखियों ने श्री इन्द्रावती को श्रीकृष्ण बनाना स्वीकार कर उनको श्रीकृष्ण बनाया और जो खेल बृज में सखियों तथा श्रीकृष्ण ने किया था, सारा खेल नाटक द्वारा किया गया। अन्तिम दृश्य में जिसमें श्रीकृष्ण ने बाँसुरी बजा कर सभी सखियों को पुकारा था, इन्द्रावती जो कृष्ण बनी थी ने वही सुर बजाई, तो श्रीकृष्ण जी उसी समय वहाँ प्रकट हो गये। परन्तु इस बार शृंगार बदला हुआ था। जब श्रीकृष्ण जाहिर हुए तब सब सखियों ने रो-रो कर पूछा कि आप कहाँ चले गये थे। श्रीकृष्ण जी बोले कि मैं तो यहीं पर था। कहीं भी गया नहीं। केवल एक पेड़ की आड़ आ गयी थी। इस कारण आप लोग मुझे नहीं देख सके। तब सब सखियों ने कहा कि धनी! अब तो आप कहीं नहीं जायेंगे न? इस पर श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया कि अब मैं तुमसे कभी भी जुदा नहीं होऊँगा? वास्तव में जब परमधाम में मूल स्वरूप ने, श्रीकृष्ण, जो उस समय सखियों के साथ खेल रहे थे, उन पर से अपना जोश खींच लिया, तब अक्षर की आतम भी वापस चली गयी थी और श्रीकृष्ण खाली नूर का शरीर रह जाने से सखियों से अदृश्य हो गये थे। अखण्ड में जो एक बार शरीर बन गया वह कभी मिटता नहीं है। श्रीकृष्ण को भजनानन्द क्यों कहा गया है, इसका विस्तार आप आगे चल कर जानेंगे। इस शरीर पर भी आतम अक्षर और आवेश धनी धाम याने श्री राज जी का आया है और फिर इस श्रीकृष्ण जी ने सब सखियों

Nijanand App

से कहा कि आप सब पुनः रास के लिए तैयार हो जाओ और इस प्रकार अक्षर ब्रह्म के माँगने पर कि बृज की सारी लीला अखण्ड कर दी जाय, वे जीव जो काल माया के ब्रह्माण्ड में बृज में खेले थे और जिनकी नकल सखियों ने योग माया के ब्रह्माण्ड में विछोह के समय की थी, को काल माया से निकाल कर अखण्ड में नये तन देकर और गायें, वन एवं राक्षस, अघासुर, बकासुर पूरी बृज नगरी के जीवों को बेहद भूमि में लाकर नये तन दिये तथा अव्याकृत में अखण्ड कर दिया। ।। वर्ष 52 दिन तक की लीला में तन धारण करने वाले विष्णु भगवान् को बालमुकुन्द के रूप में अव्याकृत में अखण्ड कर दिया। रास में ब्रह्मसृष्टियों के एक-एक तन के अन्दर दो-दो अक्षर ब्रह्म की सुरता रूप कुमारिका सखियों की सुरता बैठी थी। विरह की घटना के बाद उपस्थित होने पर श्रीकृष्ण ने बारह हजार नये स्वरूप बनाये तथा एक-एक सखी के साथ एक-एक श्रीकृष्ण ने लीला की। जब रास खेल चुके तो फिर वन में यमुना के किनारे सभी सखियों तथा कृष्ण ने स्नान किया। वहीं किनारे पर बैठकर भोजन आदि किया और सखियों से पूछने लगे कि सखियो! आपको यह वृन्दावन कैसा लगा? इस पर सभी ने उत्तर दिया कि काल माया के वृन्दावन से करोड़ गुना सुन्दर और सुहावना है। परन्तु हम को तो यह श्मशान के तुल्य लगता है। सखियों का ऐसा उत्तर सुनकर श्रीकृष्ण बोले कि आपको इतना सुन्दर व सुहावना वन श्मशान के तुल्य क्यों लगा? तब सखियों ने उत्तर दिया कि हम लोगों को इतना सुहावना स्थल इस कारण श्मशान तुल्य लगता है क्योंकि आप हमसे जुदा हो जाते हो? अब हम आपसे प्रार्थना करती हैं कि आप हमें कृपया वहाँ ले चलो जहाँ से हम और आप कभी जुदा न हो सकें। तब श्रीकृष्ण बोले कि वह तो केवल परमधाम ही है जहाँ पर हम और आप कभी जुदा नहीं हो सकते हैं? तब सब सखियाँ बोलीं कि धनी तो फिर वहीं ले चलो। श्रीकृष्ण ने कहा यदि तुम लोग ऐसा ही चाहती हो तो चलो। उनका इतना कहना था कि उन सखियों से परमधाम की ब्रह्म-सृष्टियों की आत्मा परमधाम वापस चली गयी। तब श्रीकृष्ण जी से श्री राज जी का आवेश भी वापस चला गया और आतम अक्षर में वापस चली गयी। इस प्रकार जब अक्षर की आतम अक्षर में गई तब वह पुनः फरामोशी से जाग्रत होकर श्री राज जी से प्रार्थना करने लगे कि यह आनन्द की रास रात्रि भी मुझे अखण्ड कर दो।

सखियों के तथा श्रीकृष्ण के बारह हजार तन जिन्होंने अक्षर की बुद्धि के स्वरूप केवल में रास खेला था, उसे अक्षर के चित्त के स्वरूप सबलिक ब्रह्म में अखण्ड कर दिया गया। रासलीला करने वाले श्रीकृष्ण को बाँके बिहारी का नाम

दिया गया है, और बारह हजार श्रीकृष्ण तथा बारह हजार सखियाँ अखण्ड हैं। इसे नित्य रास कहा जाता है।

उधर सब सखियाँ परमधाम में जाग्रत हुईं तब श्री राज जी से बोलीं कि आप तो कहते कि माया में जाकर हम भूल जाएँगी परन्तु हम लोगों ने आपको एक क्षण के लिए भी नहीं भुलाया। आप तो कहते कि हम लोग वहाँ जाकर अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग धर्मों में चली जाएँगी और तरह-तरह के दुःख देखेंगी। यह तो आपने कुछ नहीं दिखाया। कृपा करके हमें पूरी माया दिखाओ। इस तरह जब सखियों की इच्छा पूरी नहीं हुई और वह दुबारा खेल देखने की जिद करने लगीं, तब श्री राज जी ने अक्षर ब्रह्म को दुबारा जहाँ से खेल को खत्म किया था वहीं से पुनः शुरू करने का हुक्म दिया और कहा कि भगवान विष्णु को पुनः वैसा ही ।। वर्ष 52 दिन रूप वाला बना दो। उस पर बृज के अन्दर वैसी की वैसी सब सखियाँ नई बनाकर उन पर जो गो लोक में वेद ऋचा सखियाँ और श्रीकृष्ण हैं उनकी आत्मा बैठा दो। इस बार जितने भी शास्त्रों को लिखवाओ सब में मेरे आने का सन्देश लिखवा दो। जो भी सन्त या पैगम्बर भेजो, उससे मेरे आने के सन्देश सारे संसार को दिलवा दो। अपनी सुरताओं को भी खेल में डाल दो। इस बार ब्रह्म-सृष्टियाँ जगह-जगह धर्मों में अलग-अलग उतरकर खेल देखेंगी, तो इनके खेल देखने से सारे संसार के जीवों को पता चल जायेगा कि मैं कौन हूँ और सखियाँ कौन हैं? पहले तो केवल बृज और गोकुल वालों को पता था। इस कारण सिर्फ इतना ही भाग अखण्ड कर दिया था। परन्तु अब सारे ब्रह्माण्ड, चौदह लोक को भी मेरी खबर हो जायेगी। इस वास्ते सारे के सारे क्षर के ब्रह्माण्ड को ही अखण्ड करना होगा। अतः तुम सारे ब्रह्माण्ड में अपनी सुरताओं को भेजकर यह नया ब्रह्माण्ड अपनी सुरता का बना दो। श्री राज जी की ऐसी आज्ञा सुनकर अक्षर ब्रह्म ने यह नया ब्रह्माण्ड वैसा ही अपनी सुरता का बना दिया। इसमें हम और आप आज बैठे हैं। तब बृज भी वहीं से खड़ा हो गया। पहले तो बाँसुरी योगमाया के ब्रह्माण्ड में बजी थी, अब इसी वृन्दावन में जो मथुरा के पास है, बजी। उस समय परमधाम के श्री राज जी का जोश स्वरूप श्रीकृष्ण बाँसुरी बजा रहा था अब बाँके बिहारी जिन्हें गो लोक में अखण्ड किया गया, वहाँ की सुरता उतरी और यह बाँसुरी अब गो लोक का अवतार श्रीकृष्ण बजा रहा था।

Nijanand App

आपने पढ़ा कि वृज की बालायें नग्न स्नान करती थीं और श्रीकृष्ण के साथ रास करने का वर माँग कर नग्न स्नान करना बन्द किया था। उस समय श्रीकृष्ण जो परमधाम के श्री राज जी जोश स्वरूप थे और केवल अपनी परमधाम की अंगनाओं के साथ खेल करने आये थे, और केवल उन्हीं के साथ वृज में, वनों में रास-क्रीड़ा आदि खेल किया करते थे। जिन सखियों ने वर माँगा था वे अक्षर ब्रह्म की सुरताएँ थीं। इस कारण वह उन बालाओं के साथ खेल नहीं कर सकते थे। परन्तु वर दे रखा था तो अब वही वृज की बालाओं पर गो लोक में अखण्ड की गयीं उन वेद ऋचा सखियों की सुरता इस ब्रह्माण्ड के जीवों पर आयीं और गो लोक से ही बाँके बिहारी की शक्ति इस श्रीकृष्ण पर बैठी। तब वह वर कि तुम्हारे साथ भी खेल करेंगे को सात दिन की गोकुल की लीला करके पूरा किया। इस नए ब्रह्माण्ड की पहली रात से होने वाली रास लीला को देखने को भगवान शिव भी लालायित हुए, परन्तु वह पुरुष के तन में होने के कारण उस खेल के अन्दर नहीं जा सके। इसके अतिरिक्त नरसैयाँ भक्त हुए जो रास को देखने के लिए गये और वह भी अन्दर न जा सके। दूर से ही हाथ में मशाल लिये उस आवाज में ही वह इतने मग्न हुए कि उस मशाल के साथ उस नरसैयाँ का हाथ भी जल गया और उन्हें इस बात का पता न चल सका। कहते हैं कि एक तेली रात भर तेल पेरता था और सुबह उसे बाजार में बेचता था। उसके पास छः महीने का स्टॉक था और जिस रात रास लीला हुई उस तेली ने छः महीनों की जो सामग्री रखी थी उसे रात भर में समाप्त कर दिया। इस तरह कहते हैं कि इसी मथुरा के पास जो वृन्दावन है उसमें गो लोक के कृष्ण, राधा और सखियों ने जो रास की, वह रात छः महीने की थी। इस सात दिन की लीला करने के बाद श्रीकृष्ण वृज से मथुरा आये और वहाँ कंस आदि का वध करके वसुदेव देवकी को जेल से छुड़ाकर और उग्रसेन को मथुरा का राज्य देकर वापस यमुना जी में आकर स्नान किया। फिर धारण किये हुए वस्त्र उतार कर नये वस्त्र धारण किये और बागा वस्त्र और बाँसुरी अपने साथी को देकर कहा कि यह सभी वृज की गोपियों को दे देना। कहते हैं कि तब वह गो लोक की शक्ति जो कि विष्णु के तन पर बैठी थी, उससे जुदा होकर वापस गो लोक चली गयी। इस बात का प्रमाण हमें आगे चलकर मिलेगा कि इसके बाद श्रीकृष्ण फिर कभी वृज में वापस नहीं आये।

कृष्ण से गो लोक की शक्ति चले जाने के बाद वह सिर्फ विष्णु रूप रह गये। श्रीकृष्ण द्वारा कंस का वध करते ही कंस के श्वसुर जरासन्ध को पता चला। उसने बहुत बड़ी फौज लेकर मथुरा पर चढ़ाई कर दी। श्रीकृष्ण वहीं मथुरा में

अपने माता-पिता वसुदेव ओर देवकी के साथ रहते थे। जब उनको यह पता चला कि जरासन्ध ने मथुरा को घेर लिया है, तो उन्हें थोड़ी चिन्ता हुई। उस समय उन पर से गो लोक की शक्ति चली गयी थी। श्रीकृष्ण जो अब केवल विष्णु रूप रह गये थे, ने बैकुण्ठ से अपनी सारी शक्ति को मँगाया। जरासन्ध से युद्ध किया और उसकी सारी फौज को मार गिराया। अर्जुन और भीम के साथ उसकी राजधानी में गए। जरासन्ध के शहर पर भी कब्जा किया। जरासन्ध ने जगह-जगह से नवयुवतियों का अपहरण कराकर अपने कारागार में बन्दी बना रखा था। इनकी संख्या सोलह हजार एक सौ आठ थी। उन्हें मुक्त कराके उन सबसे कहा कि आप लोग अपने-अपने घर जाओ। सभी युवतियों ने अपने घर जाने से इन्कार कर दिया और कहा कि हम लोग कहीं भी नहीं जाएँगी। आपने हमें मुक्ति दिलाई है इस वास्ते हम आपसे विवाह करेंगी। हम सबने आपको अपना पति बना लिया है। उनकी यह बात सुनकर श्रीकृष्ण जो अब विष्णु स्वरूप थे, सबको साथ लेकर द्वारिका चले आये, वहीं अपनी राजधानी बनायी और सभी युवतियों से विवाह किया। अब श्रीकृष्ण जो केवल विष्णु स्वरूप रह गये थे, को लक्ष्मी जी की याद आयी। लक्ष्मी जी इस संसार में रुक्मिणी का तन धारण किये हुए थीं। जब श्रीकृष्ण को रुक्मिणी का पता चला तो फौरन वह द्वारिका से रुक्मिणी के पास गये। रुक्मिणी के पिता ने उनकी शादी राजा शिशुपाल से करना तय कर ली थी। श्रीकृष्ण जब रुक्मिणी से मिले तो रुक्मिणी जो लक्ष्मी जी की अवतार थीं, विष्णु भगवान से प्रार्थना करने लगीं कि उन्हें वहाँ से निकाल ले जावें अन्यथा उनका पिता जबरदस्ती उनकी शादी किसी दूसरे से कर देगा। इस तरह रुक्मिणी की बात सुनकर भगवान विष्णु जो कृष्ण के रूप में थे, रुक्मिणी का हरण करके, द्वारिका ले आये और वहाँ आकर रुक्मिणी से विवाह की तैयारियाँ शुरू कर दीं। श्रीकृष्ण के विवाह पर नारद आदि कई देवतागण पधारे। विवाह शुरू हुआ। जब भाँवर पड़ने लगीं और सातवाँ फेरा चल रहा था उस समय श्रीकृष्ण मूर्छित होकर गिर गये। श्रीकृष्ण के मूर्छित होकर गिरने से सभी देवता व नारद मुनि तथा रुक्मिणी आदि घबड़ा गये और श्रीकृष्ण को होश में लाने का प्रयत्न करने लगे। जब श्रीकृष्ण को थोड़ी देर बाद होश आया तो नारद जी से बोले कि मेरे पेट में अत्यन्त पीड़ा हो रही है जो कि असहनीय है, नारद जी, यदि कोई भक्त मुझे अपने चरणों का चरणामृत दे देवे तो यह पीड़ा दूर हो सकती है। नारद जी! आप जल्दी जाकर किसी भक्त से चरणामृत ले आओ। तब नारद जी बोले, हे भगवान! आप क्या कहते हैं। क्या कोई भक्त भला आपको अपने चरणों का

Nijanand App

चरणामृत दे सकता है। तब भगवान बोले, नारद! जैसे भी हो लाओ, अन्यथा मैं नहीं बचूँगा। तब घबराकर नारद मुनि तुरन्त वहाँ से रवाना हो गये। (नारद जी को यह वरदान है कि थोड़ी ही देर में चौदह लोक घूम लेते हैं) वह बहुत बड़े-बड़े ऋषियों और तपस्वियों के पास गये तथा और भी जितने उनके परम भक्त थे, सभी के पास गये। परन्तु भगवान के लिए चरणामृत किसी ने भी देने का साहस नहीं किया। अन्ततः नारद जी निराश लौट आये और भगवान विष्णु स्वरूप श्रीकृष्ण से बोले कि कोई भी आपका परमभक्त या तपस्वी चरणामृत देने को तैयार नहीं है। तब श्रीकृष्ण नारद जी से बोले कि अच्छा! यदि किसी ने भी नहीं दिया तो अब आप मथुरा के पास एक बृज है, वहाँ पर राधा नाम की सखी रहती है, उसके पास चले जाओ और उससे बोलो कि श्रीकृष्ण के पेट में दर्द है और चरणों का चरणामृत मँगाया है। वहाँ से ले आओ। नारद जी भगवान की आज्ञा मानकर बृज में चले गये और राधा जी के विषय में पूछा तब लोगों ने नारद जी को राधा के पास पहुँचा दिया। जब नारद जी राधा के पास गये तो राधा ने पूछा कि नारद जी आप यहाँ पर पधारे हैं क्या कोई विशेष कार्य है। नारद जी ने राधा से कहा कि आप के कृष्ण के पेट में पीड़ा है। उन्होंने आपके चरणों का चरणामृत मँगाया है। तब राधा ने तुरन्त दासियों को पुकारा और कहा कि एक लोटा जल और एक थाल लेकर आओ। जब दासियाँ जल और थाल ले आयीं तो राधा ने थाल में अपने चरणों को धोया और लोटे में भर कर उस जल को नारद जी को दे दिया। नारद जी ऐसा करते देख मन ही मन आश्चर्य करने लगे। जब वह जल लेकर वापस लौटने लगे तो राधा बोलीं, ठहरो नारद। इतना कहकर आपने पानी से गीला पाँव जमीन पर रखा और उस पाँव के नीचे की धूलि उठाकर एक कागज में बाँध कर नारद जी को देकर बोलीं कि आप श्रीकृष्ण को यह धूलि भी दे देना और कहना कि इसे सारे शरीर में लगा लेवें ताकि फिर कभी शरीर में कहीं भी दर्द न हो। नारद जी दोनों वस्तुएँ लेकर मन ही मन बड़ा अचम्भा करते वापस श्रीकृष्ण के पास आये और सारी राधा जी की बात कह सुनाई। तब श्रीकृष्ण ने उस जल को पिया तथा धूल मस्तक पर लगा ली। वह तुरन्त ठीक हो गये। राधा जी का जल तथा धूलि देना रुक्मिणी जी को भी बड़ा अजीब लगा। जब श्रीकृष्ण ठीक हो गये और विवाह हो गया, तो रुक्मिणी जी ने श्रीकृष्ण से राधा और बृज की गोपियों के विषय में पूछा। तब भगवान बोले लक्ष्मी जी, याद करो आपने जिस बात को पूछने के लिए सात कल्पॉत छियासी युग तक तपस्या की थी, वह यही राधा और श्रीकृष्ण हैं जो गो लोक में रहते हैं उनकी शक्ति ने मेरे तन पर

रह कर रास लीला की। यही मेरे आराध्य देव हैं, इन्हीं की मैं आराधना करता हूँ।

अब प्रश्न यह उठता है कि आज जब सारा संसार श्रीकृष्ण जी का एक ही रूप मानता है तो यह कैसे माना जाये कि श्रीकृष्ण की तीन लीलाएँ भिन्न-भिन्न शक्तियों द्वारा की गयीं। सबसे पहले बाल स्वरूप श्रीकृष्ण पर विचार करते हैं। विचारने की बात है कि जब बाल स्वरूप श्रीकृष्ण और आगे के श्रीकृष्ण भिन्न नहीं थे तो श्रीमद्भागवत कहती है कि श्रीकृष्ण ने जो रास लीला की थी वह अखण्ड है और जहाँ पर यह लीला हुई वहाँ पर वृन्दावन में कई कल्पवृक्ष हैं। अब यदि पहले वाले श्रीकृष्ण जो ग्यारह साल बावन दिन तक लीला कर के चले जाने और इस ब्रह्माण्ड को दुबारा बना न मानें और श्रीकृष्ण और बाद वाले श्रीकृष्ण को एक ही मानें तो रास लीला इसी वृन्दावन जो मथुरा के पास है, में हुई थी, मानना पड़ेगा। इस वृन्दावन में तो एक भी कल्पवृक्ष नजर नहीं आता। कल्पवृक्ष की यह विशेषता होती है कि इस पेड़ के नीचे जाकर जो कुछ भी माँगा जाए या जिस चीज की इच्छा की जाए वह तुरन्त आ जाती है। ऐसा शास्त्र कहते हैं। ऐसा वृक्ष तो इस वृन्दावन में एक भी नहीं है। दूसरे यदि यह विष्णु का शरीर पहले वाला है तो पहले वाले शरीर पर तो परमधाम से श्री राज की का जोश उतरा था और अक्षर की आत्मा उतरी थी। यदि यह श्रीकृष्ण वही पूर्ण ब्रह्म श्रीकृष्ण थे, तो वापस नहीं गये। ऐसा मानें तो फिर गो लोक के राधा-कृष्ण कहाँ से आ गये जिसके विषय में श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी को बताया है। इस बात का कोई संकेत विष्णु को नहीं मिला कि गो लोक से श्रीकृष्ण आ रहे हैं। उनको तो यही पता था कि पारब्रह्म की कोई शक्ति आ रही है। वह कौन है, कहाँ रहती है? इसके बारे में वह बिल्कुल नहीं जानते थे। इन बातों पर जब हम विचार करेंगे तो स्पष्ट हो जायेगा कि जिन श्रीकृष्ण ने पहले लीला किया था वह वापस चले गये। विष्णु के शरीर का जीव गो लोक में अखण्ड हो गया। यही कारण था कि जब दोबारा ब्रह्माण्ड बना तो भगवान विष्णु का भी नया शरीर बनाया गया और अब जो शक्ति आकर बैठी वह गो लोक श्रीकृष्ण की शक्ति थी। जब उन पर से गोलोक की शक्ति चली गयी तो उन्होंने रुक्मिणी को पेट की पीड़ा का बहाना कर बताया कि मैं गो लोकवासी श्रीकृष्ण और राधा का ध्यान करता हूँ। यदि यह वही पहले वाले श्रीकृष्ण होते तो जो प्रेम की लीला पारब्रह्म ने की थी, वही बताते और पारब्रह्म या अक्षर ब्रह्म को इष्ट बताते। विष्णु का जो दूसरा शरीर बना था उस पर ही अखण्ड बृज जो अब गो लोक था की शक्ति आई। अब यदि यह

Nijanand App

माना जाये कि श्रीकृष्ण एक ही थे, तो जब उन श्रीकृष्ण की राधा से मँगनी हो गयी थी, तो बड़े होकर उसने ही ब्याह क्यों नहीं किया? रुक्मिणी से ब्याह क्यों किया? दूसरे यदि यह पहले वाले श्रीकृष्ण थे तो राधा तो उनको अपना पति मानतीं। फिर सोचने की बात है क्या कोई पत्नी अपने चरणों की धूलि व चरणामृत अपने पति को दे सकती है? विशेषकर जब राधा यह जानती भी हों कि यह श्रीकृष्ण भगवान विष्णु का अवतार हैं। इसके अतिरिक्त भी भागवत् साक्षी है कि जिस समय श्रीकृष्ण मथुरा आये, उसके बाद वह कभी भी बृज में नहीं गये। ऐसा क्यों? क्या बृज और मथुरा बहुत दूर थे? क्या सखियों का प्रेम श्रीकृष्ण से कम हो गया था? वस्तुतः पहले वाले श्रीकृष्ण पारब्रह्म के जोश के अवतार थे और जिस विष्णु भगवान के शरीर को पार ब्रह्म ने अपनाया था उसको भी अखण्ड कर दिया था। इसक कारण जो दुनिया दुबारा बनी उसमें विष्णु का नया शरीर बना। इन विष्णु को सिर्फ गो लोक का ही पता चल सका था, क्योंकि बाद वाले विष्णु के शरीर पर गो लोक की शक्ति ने कार्य किया था। जब गो लोक की शक्ति चली गयी तब बाकी शरीर केवल विष्णु भगवान का ही रह गया था। यही कारण था कि विष्णु भगवान फिर कभी भी बृज में राधा के पास नहीं गये। मँगनी करने वाले कृष्ण तो पहले ही अखण्ड में चले गये थे। बाद में गो लोक की जो शक्ति श्रीकृष्ण बन कर आयी, तो उसको यह पता ही नहीं था कि पारब्रह्म श्रीकृष्ण की राधा से सगाई हुई थी। कारण यह है कि वह सब कुछ अखण्ड हो गया था। बाद में गो लोक की शक्ति 11 दिन की लीला करके वापस चली गयी। राधा और सखियाँ इस कारण रह गयीं कि भगवान विष्णु द्वारा रुक्मिणी को अपने आराध्य को बताना था।

अतः श्रीकृष्ण की तीन लीलाएँ हुईं और तीनों की शक्तियाँ अलग-अलग थीं। पहली बाल स्वरूप श्री राज जी का परमधाम का जोश और अक्षर ब्रह्म की आत्मा थी, दूसरी शक्ति गो लोक में अखण्ड किये गये श्रीकृष्ण की शक्ति आई और तीसरे शक्ति भगवान विष्णु की आयी। इस प्रकार नाम एक ही रहा—श्रीकृष्ण परन्तु इसी नाम से तीन लीलाएँ हुईं। इसलिए श्रीकृष्ण की त्रिधा लीला कही जाती है। वैसे यदि देखा जाए तो जिस समय रात्रि को श्री विष्णु भगवान ने जन्म लिया उस समय ज्योतिषियों के हिसाब से जो राशि बनती है उससे वासुदेव नाम आता है। जब उस बालक को बृज में लाया गया, तो उस समय राशि बदल चुकी थी। इसक कारण उसका नाम कृष्ण पड़ा। यही वजह है कि जब श्रीकृष्ण की अन्तिम लीला जो विष्णु भगवान ने की और जिस स्वरूप ने गीता कही तथा महाभारत

कराई, उस शक्ति का नाम पहले रात्रि के जन्म से लिया जाता है। श्रीकृष्ण का जो मन्त्र जाप है "ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय", इसमें कहीं भी कृष्ण का नाम नहीं आता। इससे और भी स्पष्ट हो जाता है कि जन्म लेने वाली शक्ति और थी और बाल स्वरूप तथा रास करने वाले बाँके बिहारी और थे।

भगवान विष्णु को पार का कोई ज्ञान नहीं था और न ही किसी शास्त्र में उनके विषय में कोई बात लिखी थी। वेदों का पूरा ज्ञान त्रिदेवों को है, इसमें कोई शक की बात नहीं है। यदि वेदों को इसका ज्ञान होता तो भगवान शंकर या ब्रह्मा के चारों पुत्र (सनक, सनंदन, सनातन, सनत्कुमार) इस बारे में क्यों पूछते और लक्ष्मी जी सात कल्पॉत छियासी युग तक इसी को पूछने के लिए तप करने पर उनको बता दिया गया होता। इन तथ्यों के अवलोकन करने से यह बात साबित हो जाती है कि पहले वाले ब्रह्माण्ड में जो शास्त्र थे उनमें किसी में भी पूर्ण ब्रह्म के विषय में कोई संकेत नहीं थे। बाद में श्री राज जी ने अक्षर ब्रह्म को हुक्म दिया कि ब्रह्माण्ड बनाकर सभी शास्त्रों में मेरे आने के संकेत दे दो। यह बात सत्यता की कसौटी पर खरी उतरती दिखाई देती है। अब इस संसार में वेदों से लेकर पुराणों तक तथा संतों की वाणियों में भी उस पारब्रह्म के आने के तथा वह कहाँ करते हैं? कौन हैं? पूरे संकते मिलते हैं। यह इस बात को सिद्ध करते हैं कि यह ब्रह्माण्ड नया बना और श्री (कृष्ण) विष्णु भगवान जब महाभारत करवा कर चले गये तब उसके बाद वेदव्यास जी द्वारा ग्रन्थ लिखे गये। व्यास जी द्वारा ही सारे पुराण तथा भागवत लिखी गई। इन्हीं में भविष्य पुराण, भविष्य दीपिका, आदि कई ग्रन्थ हैं जिनका उदाहरण मैंने पहले दिया है। यह सब पूर्ण ब्रह्म की आज्ञा से लिखवाए गए।

श्री राज जी की आज्ञा से अक्षर ब्रह्म के हुक्म का स्वरूप बन कर ईसा मसीह इस संसार में आये। उन्होंने बाईबल में सारी बातों का विस्तार लिखा, जो संकेतों में है। जैसे ईसा ने कहा कि जो कोई व्यभिचारी या पापी जाति के बीच मुझसे और मेरी बातों से लजायेगा, परमात्मा का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित आयेगा तब उससे भी लजायेगा। अब यह सारी बातें संकेतों में हैं, परन्तु सभी संकेत उन्होंने पारब्रह्म तथा अक्षर ब्रह्म के बारे में कहे हैं। वह कहते हैं कि यह सारी दुनिया स्वप्न का ब्रह्माण्ड है और इस झूठे ब्रह्माण्ड में रहने वाले मेरी बातों का विश्वास नहीं करते हैं। जब अपने पिता अक्षर ब्रह्म तथा उनकी महिमा अर्थात् पारब्रह्म श्री राज जी तथा उनके पवित्र दूत अर्थात् ब्रह्म-सृष्टियों के साथ आऊँगा, तो भी तुम लोग उनकी बातों का विश्वास

Nijanand App

नहीं करोगे। इस तरह ईसा ने बहुत से संकेत उस पारब्रह्म के बारे में दिये हैं। हिन्दू पक्ष के सभी ग्रन्थों में उस पूर्ण ब्रह्म के आने के संकेत थे। तब पाश्चात्य संस्कृति में कोई भी ग्रन्थ नहीं था जो पारब्रह्म के आने के संकेत देता। इसलिए अक्षर ब्रह्म के हुक्म का स्वरूप ईसा बन कर आया। उसने सारी बातें उस पूर्ण ब्रह्म परमात्मा के विषय में कहीं। तब केवल एक इस्लाम धर्म बचा था जिसमें कोई बात भी पूर्ण ब्रह्म के विषय में नहीं थी। यहूदी लोग नाना प्रकार की मूर्तियों को पूजते हैं। श्री राज जी महाराज ने श्रीकृष्ण, जिसने योग माया में रास लीला की थी, जिस पर धनी का जोश और आत्मा अक्षर की थी, को हुक्म दिया गया कि तुम अरब में जाकर मुहम्मद का तन धारण कर मुसलमानों को सही राह दिखाओ। तब वह श्रीकृष्ण ही मोहम्मद बनकर इस संसार में रसूल होकर आया। इसकी साक्षी गुरु नानक ने अपनी गुरुवाणी में इस प्रकार दी है :

श्री गुरुवाणी—

"पारजात गोपी ले आया, बिन्द्रावन में रमन किया।
ले नीले कपड़े वस्त्र पहने, तुर्क पठानी अमल किया॥"

श्री गुरुवाणी में गुरु नानक लिखते हैं कि जिसने पार जाकर गोपियों के साथ वृन्दावन में रास लीला की, उसी श्रीकृष्ण ने अपना चोला बदल कर अर्थात् पहले हिन्दू चोला (अर्थात हिन्दू तन) धारण किया था, मुसलमानी चोला पहनकर यानि मुसलमानों में तन धारण कर मुहम्मद के रूप में पैगम्बर बना। इसका तात्पर्य यह है कि शक्ति जिसने श्रीकृष्ण पारब्रह्म जोश स्वरूप अक्षर आतम के साथ श्रीकृष्ण लीला की थी, उसी शक्ति यानि पारब्रह्म जोश स्वरूप अक्षर आतम ने ही मुहम्मद बनकर उस अल्लाह-तआला (श्री राज जी) का पैगाम दिया। इस प्रकार कुरान तथा पुराण सब में गवाही (साक्षी) पूर्ण ब्रह्म की पूरी हुई।

अब सारे संसार के शास्त्र उसी तीसरे पुरुष को परमात्मा कहते हुए उसके आने के संकेत देते हैं जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है। जब वह मुहम्मद साहब बनकर इस संसार में आये तो उन्होंने आने के संकेत दिये। कुराने-पाक के ग्यारहवें सिपारे में लिखा है कि जब रसूल को नौ सौ नब्बे साल व्यतीत हो जावेंगे तब ईसा (श्री देव चन्द्र जी) इस दुनिया में आयेंगे। छठे सिपारे में लिखा है कि रूह-अल्लाह दो जामे पहनेंगे। इसलिए ईसा रूह-अल्लाह (श्री देव चन्द्र जी) पहला जामा और श्री प्राणनाथ जी दूसरे जामे में आये। यह भी उल्लेख है कि वह ग्यारहवीं सदी में आयेंगे। आने के समय के सात बड़े निशान कहे और कहा कि अल्लाह ताला इस दुनियाँ में छः दिन रहेंगे और छठे दिन मोमिनों को नमाज

पढ़ाकर अपने साथ ले जायेंगे। खुद काजी होकर बैठेंगे और सबका हिसाब करेंगे। इस तरह मुहम्मद साहब ने जो कुराने-पाक में कहा, वह उन्होंने मेयराज होने के बाद कहा। लिखा है कि मोहम्मद साहब के साथ जबराइल फरिश्ता भी था। मेयराज के लिए यही फरिश्ता उनको अर्श अजीम में ले गये थे। मोहम्मद साहब जबराइल के साथ सत्स्वरूप तक गए और राज जी की जाग्रत बुद्धि द्वारा यमुना नदी तक गए। तब मोहम्मद साहब ने अल्लाह-तआला को याद किया और अन्दर से रफरफ का तख्त आया और वह उस पर बैठकर जोय नदी को पार कर अन्दर हाहूत पहुँचे। वहाँ जाकर देखा कि अल्लाह-तआला तथा उनकी बड़ी रूह उनके साथ एक बड़े सिंहासन पर बैठे हैं और बाकी रूहें फर्श पर बैठी हैं। मुहम्मद साहब ने बड़ी रूह तथा रूहों को देखा कि वह खामोश बैठी हैं, तो अल्लाह-तआला से पूछने लगे कि इनके मुख पर कुफ्ल क्यों लगा है? तब अल्लाह-तआला ने फरमाया कि मेरी उम्मत ने गुनाह किया है। इन्होंने फानी दुनिया का खेल देखने की माँग की है। इनका खेल माँगना ही इनका गुनाह है। इस कारण इनके मुख पर कुफ्ल लगे हैं। इस प्रकार अल्लाह-तआला से सारी बातें करके वापस आये, तो उन्होंने कुरान में लिखा। इस सम्बन्ध में पहले बताया जा चुका है। कुराने-पाक में लिखा है कि रूह-अल्लाह इस फानी दुनिया को देखने आयेंगे और दो जामे पहनेंगे। यह भी लिखा है कि रूह-अल्लाह के मुख पर परदा होगा। इसी तरह बहुत से निशान दिये हैं जो आगे स्पष्ट किये जायेंगे।

मोहम्मद साहब श्री राज जी के हुकम स्वरूप के थे और आतम अक्षर की थी। आतम अक्षर की होने के कारण उनके साथ जो फरिश्ता जिब्राईल था, वह भी अक्षर धाम से सम्बन्ध रखते थे। परमधाम दो भागों में है। यमुना जी के इधर के भाग में अक्षर धाम है और उधर के भाग में परमधाम है। वैसे तो अक्षर भी श्री राज जी का स्वरूप है परन्तु वह स्वरूप सत्ता का है। इस कारण यह परमधाम के अन्दर नहीं जा सकता है। बाहर चाँदनी चौक में ही खड़े होकर दर्शन करने के बाद वापस अक्षर धाम में लौट आता है। जब मोहम्मद साहब को दर्शन देकर बातें करनी थीं तो जहाँ श्री राज जी बैठे थे वहीं इनको जाना पड़ता। परन्तु आतम अक्षर की होने के कारण इनको जोय नदी यमुना नदी के पास जहाँ अक्षर ब्रह्म की हद थी, वहीं पर रोक दिया गया और मोहम्मद के अन्दर से जोश की शक्ति ने अल्लाह-तआला यानि श्री राज जी से पुकार की। तब लिखा है कि रफरफ का तख्त आया। रफरफ के तख्त का आना अर्थात् उस श्री राज जी ने अक्षर की आत्मा को अपना आतम बना लिया अर्थात् उस अक्षर की आतम को इश्क देकर

Nijanand App

इश्कमयी बना दिया। अक्षर की आतम की शक्ति और श्री राज जी की आतम की शक्ति में केवल इश्क का ही फर्क है। अक्षर की आतम के पास इश्क नहीं और श्री राज जी की आतम के पास इश्क है। इसी इश्क को ही रफरफ का तख्त कहा है। जब मोहम्मद साहब को पूर्ण इश्क का स्वरूप बनाया तब जो अशराफील था उसको अपने शब्दों का स्वरूप देकर अन्दर लिया। कुरान में इसे हाहूत लिखा है जिसका अर्थ है मूलमिलावा। यहीं पर श्री राज जी ने बातें कीं। यह बातें अशराफील का मन अपने में समाता चला गया। बातें करने के बाद अर्शे अजीम अर्थात् परमधाम से जब मोहम्मद साहब वापस लौट आये तो वह पूर्ण अल्लाह-तआला (श्री राज जी) के हुकम का स्वरूप थे। जिब्राईल जो जोश की शक्ति था, उनके साथ वापस आ गये। जब्राइल द्वारा सारे कुरान की बातों को कहलवाया गया जो नब्बे हजार हर्फ थे जिनका विस्तार आप पिछले भाग में पढ़ आये हैं।

रूह-अल्लाह के बारे में लिखा है कि वह दसवीं सदी में ईसा की शक्ति के साथ इस नश्वर जगत में आयेंगे और दो तन धारण करेंगे। उनका दूसरा तन ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहदी बन कर जाहिर होगा। जो-जो बातें कुराने-पाक में लिखी थीं वह पूरी हुईं। बाईबल के अनुसार भी वही समय लिखा है और हिन्दू तथा सिख धर्मों की भी सारी बातें सही सिद्ध हुईं। वह पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द पार पुरख, आखरी ईसा, आखर-उल जमा इमाम मेंहदी अपने-अपने जामे अर्थात् पहले तन में श्री धनी देव चन्द्र के रूप में ईसा रूह-अल्लाह बन कर अपनी ब्रह्म अंगनाओं के साथ इस संसार में सम्वत् सोलह सौ अड़तालिस में हिजरी सम्वत् नौ सौ नब्बे साल और नौवे महीने में तथा ईसा के सन् पन्द्रह सौ इक्यासी में इस नश्वर जगत को दुबारा देखने के लिए मारवाड़ में श्री मत्तू मेहता के घर अवतरित हुए और पाँच साल की अवस्था में ही हिन्दू पक्ष के ग्रन्थों की खोज में लग गये। लगातार चालीस साल तक हिन्दू पक्ष के सभी ग्रन्थों की खोज कर के अन्ततः सब ग्रन्थों का सार भागवत् का पूर्ण अध्ययन करते-करते जब वह चालीस साल के हुए तो उस समय उनको उस पूर्ण ब्रह्म ने दर्शन दिये जो आवेश का स्वरूप थे। तब उन्होंने दर्शन देकर सारी बातें परमधाम की बताईं तथा उनको स्वयं की पहचान कराई और कहा कि तुम्हारे साथ परमधाम से ब्रह्म-सृष्टियाँ भी इस नश्वर जगत को देखने उतरी हैं। उन सबको जगाकर अर्थात् उनको स्वयं की पहचान कराकर परमधाम वापस लेकर आओ। जब तक सब ब्रह्म-सृष्टियाँ (जिसे कुराने-पाक में मोमिन, बाईबल में चूजेन पीपुल (CHOSEN PEOPLE) तथा श्री गुरुवाणी में

ब्रह्मज्ञानी', हिन्दुओं के ग्रन्थों के अनुसार 'नित्यमुक्त' कहा है, नहीं जाग जातीं तब तक तुम परमधाम वापस नहीं आ सकते। वहाँ से सब इकट्ठे आये हो और यहाँ से सब इकट्ठे जाओगे। जब उस दर्शन देने वाले स्वरूप ने सब कुछ बताया, तब श्री देव चन्द्र जी ने उनसे पूछा कि आप अब कहाँ जाओगे। तब उस स्वरूप ने कहा मैं तुम्हारे अन्दर आ रहा हूँ और तुम्हारे अन्दर बैठकर सब खेल में आये मोमिनों को जगाऊँगा। इतना कह कर वह श्री देव चन्द्र जी के अन्दर विराजमान हो गये। इसके बाद श्री देव चन्द्र जी ने श्री कृष्ण की कई आवेश लीलाएँ करके मोमिनों को जगाया और इस तरह तीन सौ तेरह वासनाओं को जगाया। इसमें श्री इन्द्रावती सखी भी थीं जिसने योगमाया के ब्रह्माण्ड में नाटक करते समय श्री कृष्ण का रूप धारण किया था। इन्द्रावती सखी जिसने इस संसार में मेहराज ठाकुर का तन धारण किया था और श्री केशव ठाकुर के यहाँ अवतरित हुई थीं, की श्री धनी देव चन्द्र जी से बारह साल की आयु में मुलाकात हुई और उसी समय उनकी आत्मा को पहचान कर कह दिया था कि मेरे बाद सब कार्य तुम्हारे द्वारा होगा और मैं भी तुम्हारे अन्दर आकर बैठूँगा। इस तरह तुम्हारा शरीर ही मेरा दूसरा तन होगा। हिन्दू पक्ष में मैंने सब खोल दिया है। तुम मुसलमानी पक्ष के कुराने-पाक को जाहिर कर के आखरी इमाम-मेंहदी जाहिर होगे। श्री धनी देव चन्द्र जी ईसा रूह-अल्लाह हैं और हिन्दुओं के अनुसार पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द के पहले जामे अर्थात् पहले तन का खेल करेंगे। कैसे माना जाये कि इसके अतिरिक्त पूर्ण ब्रह्म श्री राज जी बड़ी रूह श्री श्यामा जी महारानी, जिनका उपनाम परमधाम में श्री सुन्दरबाई है, वही इस संसार में अंगनाओं के साथ नश्वर जगत को देखने आयेंगी और यहाँ श्री श्यामा जी जिनको कुराने-पाक में रूह-अल्लाह और बाईबल में ईसा का दुबारा आना लिखा है और इस जगत में आकर दो तन धारण करेंगी और दूसरे तन में ही पूर्ण रूप से निष्कलंक हिन्दुओं के अनुसार, आखर-उल-जमा इमाम मेंहदी मुसलमानों के अनुसार जाहिर होंगे और सारे शास्त्र एवं कुराने-पाक तथा संसार के सभी ग्रन्थों का सार खोल कर जो छुपी हुई बातें होंगी उनको जाहिर करके बतावेंगे। प्रश्न उठता है कि सर्वप्रथम ईसा रूह-अल्लाह आकर दो जामे पहनेंगे, मुसलमानों के अनुसार कैसे माना जाय और हिन्दुओं के अनुसार बुद्ध और कल्कि दो तन धारण करेंगे और दूसरा तन पूर्ण ब्रह्म बुद्ध निष्कलंक अवतार होगा और वह यही धनी देव चन्द्र जी हैं कि नहीं? शास्त्रों तथा धर्म से प्रमाण देकर स्पष्ट किया जाता है कि यही श्री देव चन्द्र जी पहले तन श्री सुन्दरबाई श्री श्यामा जी (रूह-अल्लाह) का अवतार हैं। धनी देव चन्द्र जी ही सुन्दरबाई, श्री

Nijanand App

श्यामा जी, रूह-अल्लाह का अवतार हैं। हिन्दुओं के नारद पंच रात्रान्तर्गत श्री 'माहेश्वरतंत्रम्' के अनुसार—

दिव्यब्रह्मपुरस्येह ब्रह्माऽद्वैतस्य वासना।
तासामेका च परमा सुभगा सुन्दरी प्रिया ॥1॥
मरुद्देशे कुले शुद्धे नृरूपं सा धरिष्याति।
चन्द्रनामा पुमांल्लोके हरिष्यत्यशुभां गतिम् ।।2।।

अर्थात्—दिव्य ब्रह्मपुर धाम (परमधाम) से जब वासनाएँ आयेंगी तो उन वासनाओं में सर्वप्रथम सुन्दरी नाम की सुभग (सर्व ज्ञान सम्पन्न) एक वासना मरुस्थल प्रदेश (मारवाड़ देश) में नर रूप धारणा करेगी जिसके शरीर का नाम देवचन्द्र होगा। यही सब में विख्यात होकर ब्रह्म वासनाओं तथा अन्य जीवों का उद्धार करेगी। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार श्री देव चन्द्र जी के अन्दर वह सुन्दरी नाम की वासना थी जिसने मारवाड़ में श्री मन्तू मेहता के घर अवतरित होकर पहला तन धारण किया। यही श्यामा जी अर्थात् सुन्दरबाई (रूह-अल्लाह) श्री देव चन्द्र जी दो तन धारण करेंगे, की प्रामाणिकता हिन्दू ग्रन्थों से देता हूँ। ग्रन्थों के जो उद्धरण दिये हैं या दिये जायेंगे, सभी श्री देवचन्द्र जी के आने से वर्षों पूर्व की पुस्तकों से दिये गये हैं। उनके आने के बाद की किसी पुस्तक का उद्धरण नहीं दिया गया है। पद्म पुराण में लिखा है—

कलेरन्ते बुद्धरूपी जनानामनुकम्पया।
अवतीर्यासिना ज्ञानरूपेणाच्छिद्यसंशयम्॥
धामस्थाननुमंत्र्यादौ तेभ्यस्तत्वमुदीर्य च।
अथ तांश्चसमादाय गमिष्यति निजालयम्॥ पद्म पुराण॥

बुद्ध पुनः एक अन्य शक्ति में लीन होकर कृष्ण लीलामय ग्रन्थ जिनके अन्दर श्रीकृष्ण की त्रिधा लीला का विस्तार एवं धाम और स्थान आदि का वर्णन होगा और उन्हीं के अर्थात् पहले तन के द्वारा दिये गये मन्त्र (तारतम) का उपदेश देते हुए उन ब्रह्म-सृष्टियों को एकत्रित करेंगे और संसार के जीवों को मोक्ष प्रदान करके अर्थात् परमधाम को ले जायेंगे। इस प्रकार हिन्दू धर्म ग्रन्थों के उदाहरण से कि यही श्री देवचन्द्र जी ही राजजी के आनन्द अंग श्री श्यामा जी (सुन्दरबाई) रूह-अल्लाह का अवतार हैं और यही अपने दूसरे तन में प्रवेश कर के 'महामति प्राणनाथ' 'बुद्ध निष्कलंक अवतार', 'आखर-उल जमा इमाम मेंहदी' आखरी ईसा जाहिर होकर संसार को ब्रह्म ज्ञान द्वारा उस पारब्रह्म सच्चिदानन्द का परिचय कराते हुए तारतम् मन्त्र देकर सबको अखण्डता प्रदान करेंगे।

कुराने-पाक यह प्रमाण देता है कि ईसा रूह-अल्लाह दसवीं सदी में आयेंगे और दो जामे पहनेंगे। अपने दूसरे जामे में इमाम मेंहदी बनकर ग्यारहवीं सदी में जाहिर होकर कुराने-पाक के वह तीस हजार 'हर्फ' जो मुहम्मद साहब ने फरमाया कि इनका अर्थ बताने ख़ुदा आयेगा, सविस्तार खोलकर सारे संसार को उस एक की पहचान करावेंगे। कुराने-पाक के ग्यारहवें सिपारे में लिखा है कि ईसा रूह-अल्लाह पहले जामे में जब हजरत मुहम्मद साहब को नौ सौ नब्बे साल व्यतीत हो जायेंगे तब और आकर दो तन धारण करेंगे। यह भी लिखा है कि दसवीं सदी में ईसा रूह-अल्लाह आयेंगे और ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहदी जाहिर होंगे और बारहवीं सदी तक फजर करेंगे। यह बात कुराने-पाक के तीसवें सिपारे में पहलीं सूरत 'अमेत सालून' में लिखी है।

इस प्रकार हिन्दू और मुसलमानों के तथा संसार के सभी ग्रन्थों में जिसके आने को लिखा वह आ गये और आकर पहले तन में श्री देवचन्द्र जी ईसा रूह-अल्लाह जाहिर हुए। फिर श्री इन्द्रावती सखी की आतम जो श्री मेहराज ठाकुर के तन में उतरी है और जिनको सारी बातें समझायी हैं। जब श्री देवचन्द्र जी से श्री मेहराज ठाकुर का बारह साल की अवस्था में मिलाप हुआ तो कहा कि अपने वतन परमधाम से बारह हजार ब्रह्म-सृष्टियाँ उतरी हैं। उनके साथ चौबीस हजार कुमारिकायें (कुराने-पाक में जिनको फरिश्ते कहा) भी उतरी हैं। ब्रह्म-सृष्टियों को जगाकर परमधाम से चलना है और कुमारिकाओं को अक्षर के पास पहुँचाना है। इस संसार में दो सरदार सखियाँ (छः छः हजार के ग्रुपों की) भी आई हैं। परमधाम का इनका नाम शाकुण्डल और शाकुमार है। यह दुनिया में किसी बड़े परिवारों (राज घराने) में आई हैं। अब यह सब जिम्मेदारी आप पर है। आप इन दोनों सरदार सखियों को जगा लेना बाकी स्वयं ही जाग जायेंगी। जब यह सरदार सखियाँ जाग्रत हो जायेंगी तब यह खेल (ब्रह्माण्ड) खत्म करके अपने (परमधाम) वापस चल सकेंगे। जब तक यह सरदार सखियाँ नहीं जागती हैं, तब तक यह खेल (ब्रह्माण्ड) खड़ा रहेगा। यह सारी बातें श्री मेहराज ठाकुर ने जब वह केवल बारह साल के थे, से पहली भेंट में उनकी आत्मा की पहचान करके बता दी थीं और कहा था कि आगे चल कर तुम ही संसार के प्राणनाथ—पूर्ण ब्रह्म जाहिर होंगे। इसकी साक्षी भविष्य पुराण में इस प्रकार लिखी है—

सुन्दरी चेन्दिरा सख्यौ नामाभ्यां चन्द्रसूर्ययोः।
मायान्धकारनाशाय भविष्यतः कलौ युगे॥

Nijanand App

इस प्रकार मिहिर-राज ठाकुर (सूर्यों के सूर्य) अपने नाम को साकार करते हुए एक दिन सूर्यवत् ब्रह्म ज्ञान का पूर्ण प्रकाश करेंगे और संसारी जीवों को मोक्ष का अधिकारी बनायेंगे। श्री मिहिर-राज ठाकुर अपने प्रति, श्री सतगुरु देवचन्द्र जी के मुख से अपने लिए ऐसी बात सुनकर उसी समय याने बारह साल की अवस्था से ही सतगुरु देवचन्द्र की संगति में रहने लगे और उनके द्वारा श्रीकृष्ण की बृज की लीला तथा रास में जाने की लीला एवं संसार का शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने लगे। इस प्रकार श्री मिहिर-राज ठाकुर श्री देवचन्द्र जी की सेवा में सम्वत् सत्रह सौ बारह तक रहे जब सतगुरु श्री देवचन्द्र जी ने अपने नश्वर शरीर का त्याग किया। अपनी शक्ति श्री श्यामा जी तथा श्री राज जी महाराज का आवेश स्वरूप और हुक्म का स्वरूप श्री मिहिर-राज ठाकुर (इन्द्रावती की आत्मा) के तन में प्रविष्ट हुई तब श्री मिहिर-राज ठाकुर श्री प्राणनाथ के रूप में जाहिर हुए। श्री प्राणनाथ की महिमा शास्त्रों में इस प्रकार लिखी है—

प्राणरूपाः प्रिया सर्वास्तासां नाथोऽक्षरात्परः ।
तेनासौ प्राणनाथो हि नाम्ना ख्यातः प्रियेश्वरः ।।52।।

आनन्दसागर, सप्तम तरंग

अर्थात्—अक्षर से परे जो अक्षरातीत है, वह इस संसार में श्री प्राणनाथ के नाम से सबको प्रिय होंगे और यही नाम श्री प्राणनाथ सबके प्राणेश्वर कहलायेंगे।

अब मिहिर-राज ठाकुर (श्री इन्द्रावती की वासना) ही संसार के प्राणनाथ बनकर, आखरी ईसा, आखरी-उल जमा इमाम मेंहदी, बुद्धनिष्कलंक अवतार, पार पुरुख, ब्रह्म ज्ञानी, उत्तम पुरुष, SUPREME TRUTH GOD, जिसकी सब ग्रन्थों में उपाधियाँ दी गयी हैं, जाहिर हुए। इस प्रकार हजरत मुहम्मद साहब ने जिस इमाम-मेंहदी के आने का संकेत दिया था वह अपनी शर्तानुसार जाहिर हुए। उन्होंने आकर कुराने-पाक के छिपे हुए भेदों को खोलकर संसार के सभी मुसलमानों को उस अल्लाह-तआला का सन्देश दिया कि मैं ही वह अल्लाह-तआला हूँ जिसे आखर-उल जमा इमाम-मेंहदी कहा है। उन्होंने संसार के सभी मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए कहा कि कुराने-पाक का पहला पारः "अलिफ लाम् मीम्" को खोलकर पढ़ो और देखो कि क्या वहाँ पर यह नहीं लिखा है कि जो इसका अर्थ खोलेगा तुम उसको एक बशर मत समझना। वह खुद खुदा होगा। तो आओ मैं तुम्हें "अलिफ् लाम् मीम्" पहले पारः से लेकर तीसवें पारः तक के वह छिपे भेद खोलकर बताता हूँ जिसकी राह तुम देख रहे हो। यह "अलिफ् लाम् मीम्" मेरी ही तीन सूरतों के नाम हैं जिसे मैंने मुहम्मद साहब को कुराने-पाक में बशरी,

मलकी, हकी कहकर लिखवाया था। यह अलिफ् लाम् इन्हीं तीनों सूरतों के सांकेतिक नाम कहे गये हैं। वह इस प्रकार हैं। मैं ही मुहम्मद बनकर आया और पहला तन बशर का लिया। इसलिए वह बशरी कहलाया। इसे "अलिफ्" कहते हैं। मैं ही ईसा रूह-अल्लाह जो इस संसार के अन्दर श्री देवचन्द्र के अन्दर आए और उनको दीदार देकर उनके तन में बैठा इसलिए ईसा रूह-अल्लाह मेरे मुल्क (परधाम) के होने से वह "मलकी" सूरत कहलाया। इसी को पहले पारः में "लाम्" कहा है। आखिर में मैं खुद अपनी पूरी शक्ति के साथ आया इसको "मीम्" कहा है। यह मेरी हकी सूरत है। इसलिए मैं जो कलाम अपने साथ लाया हूँ जिसका नाम "कुलजम स्वरूप" है, इसमें इस अलिफ् लाम् मीम् और कुरान के वह तीस हजार "हर्फ" जिसे मुहम्मद साहब को छिपाकर रखने का हुक्म दिया था, वह सारे इस किताब में खोल दिये हैं। इसमें लिखा है "अलिफ्" कहया मुहम्मद को, रूह-अल्लाह ईसा "लाम्"। 'मीम्' कहया पाक मेंहदी को ए तीनों मिल भये इमाम"।। मेरे तीसरे हकी सूरत में पहले के दोनों स्वरूप मिल गये। इनके मिलने से अब मैं इमाम मेंहदी बनकर जाहिर हुआ हूँ जिसका विश्लेषण मैंने अपनी किताब में इस प्रकार किया है:

"मुहम्मद आए ईसा मिने, तब अहमद हुआ स्याम।
अहमद मिल्या मेंहदी मिने, ऐ तीनों मिल भये इमाम।।"

कुलजम स्वरूप

इस प्रकार श्री प्राणनाथ जी ने कुराने-पाक के अनुसार स्वयं को इमाम मेंहदी जाहिर करके सारे कयामत के निशानात जाहिर किये। सबसे पहले मैं यह स्पष्ट कर देना उचित समझता हूँ कि कुछ कुराने-पाक को मानने वालों के मन के भाव हैं कि जब कयामत होगी तो सब फना हो जायेगा, सत्य नहीं है। कयामत का अर्थ है कायमी का दिन। आज तक इस नाशवान जगत से कोई भी प्राणी अखण्ड में नहीं गया। बाईबल के यूहन्ना में स्वयं ईसा यहूदियों के गुरू "निकुदेमुस" को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि "मैं तुझे सच-सच कहता हूँ, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है और जो जल और आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। अचम्भा न कर, कि मैंने तुझ से कहा कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है। हवा जिधर चाहती है, उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है, वह ऐसा ही है। निकुदेमुस ने उसका उत्तर दिया

Nijanand App

कि यह बातें क्योंकर हो सकती हैं? यह सुनकर यीशू ने उससे कहा तू इसराइलियों का गुरू होकर भी क्या इन बातों को नहीं समझता। मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ कि हम जो जानते हैं, वह कहते हैं और जिसे हमने देखा है, उसकी गवाही देते हैं और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते। जब मैंने तुझसे पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम प्रतीति नहीं करते, तो यदि मैं तुमसे स्वर्ग की बातें कहूँ तो फिर क्योंकर प्रतीति करोगे? और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है।" (यूहन्ना 3 : 3—13)

यीशू ने इस सन्दर्भ में कहा कि हे निकुदेमुस! जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है। इसका अर्थ है कि इस संसार में जितने भी जीव हैं इनकी उत्पत्ति भगवान विष्णु से हुई है। विष्णु स्वयं जीव हैं। इस कारण जो जीव से जन्मा है वह जीव है। जो जल और आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। इसका अर्थ है कि जल अर्थात् अक्षर ब्रह्म की सृष्टि जिसे कुराने-पाक में फरिश्ते और हिन्दुओं में ईश्वरी सृष्टि कहा गया है, वह और उसके साथ जो आत्मा अर्थात ब्रह्म-सृष्टियाँ जिसे कुराने-पाक में मोमिन कहा गया है, वह आत्मा है। यही जल और आत्मा अर्थात् ईश्वरी और ब्रह्म-सृष्टि ही परमात्मा के राज्य अर्थात् अक्षर धाम (जिसे कुराने-पाक में सदर-तुल-मुन्तहा कहा गया है और "परमधाम" जिसे कुराने पाक में "अर्शे अजीम" कहा गया है) में जा सकती है। आगे चलकर वह इस बात को स्पष्ट करते हैं कि वह हवा के रूप में अर्थात् सुरता के रूप में उतरी हैं जिसका तू शब्द सुनता है। अर्थात् जब वह सुरता द्वारा किसी शरीर पर उतरती है तो जब वह शरीर बोलता है तो उसके शब्दों से ही पता चलता है कि वह जो कुछ बोल रहा है वह कहाँ की बातें हैं। तभी पता चलता है कि वह शरीर से नहीं जल और आत्मा से है। और यही उसका दुबारा जन्म लेना है। हे नीकुदेमुस! मैं तुझसे सच-सच कहता हूँ कि जब मैंने तुमसे उन आत्माओं के बारे में कहा जो संसार में उतरेंगी तो तुम मेरी बात का विश्वास नहीं करते हो और जब मैं उस सर्वत्र अर्थात् परमधाम व अक्षरधाम का वर्णन करूँगा, तब तुम मेरी बात का क्या विश्वास करोगे? परन्तु मैंने वही कुछ कहा है जो कुछ देखा है। उसी का वर्णन किया है और उसी बात की साक्षी दे रहा हूँ, परन्तु तुम मेरी साक्षी को भी नहीं मानते हो। मैं स्वर्ग (परमधाम तथा अक्षरधाम) से आया हूँ। अक्षरब्रह्म का हुक्म का स्वरूप होने से मुझे परमात्मा का पुत्र कहा गया है। उक्त उदाहरण से पता चलता है इस संसार का कोई भी प्राणी अखण्ड नहीं है, परन्तु जब मोमिन अथवा ब्रह्म-सृष्टियाँ

(जिसे यीशू ने आत्मा कहा है) और ईश्वरी सृष्टियाँ अथवा फरिश्ते (जिसे यीशू ने जल कहा है) वह इस संसार में अपने मालिक अथवा इमाम-मेंहदी के साथ आयेंगे तो आकर जो सृष्टि मनुष्य अथवा जीव या कुन से है या शरीर से है उसको अखण्डता प्रदान करेंगे। इसी को कयामत कहा गया है। कयामत से अभिप्राय यह है कि संसार का जीव इमाम मेंहदी, बुद्ध निष्कलंक अवतार या आखिरी ईसा के आने पर इन पर विश्वास करके इनकी आराधना करते हुए अखण्ड में बहिश्त प्राप्त करेगा। यही कयामत करना कहा गया है।

कयामत का दिन कौन-सा होगा, इसके लिए कुराने-पाक में कुछ खास निशान दिये गये हैं। वह इस प्रकार हैं। कुराने-पाक में लिखा है कयामत के समय में दाभतुलअर्ज नाम का एक जानवर पैदा होगा जिसका मुख मनुष्य का होगा और शरीर जानवर का होगा। इसका विश्लेषण करते हुए कहा है कि दाभतुलअर्ज के सिर पर पहाड़ी बैल के सींग होंगे, छाती उसकी शेर की होगी, पीठ उसकी गीदड़ की होगी, गर्दन मुर्गे की होगी, आँखें उसकी सुअर की होंगी, कान उसके हाथी के होंगे और लम्बाई जमीन से लेकर आसमान तक की होगी। दूसरे निशान में लिखा है कि उस समय आजूज और माजूज जाहिर होंगे। आजूज सौ हाथ का होगा और माजूंज एक हाथ का होगा और इसकी तीन फौजें होंगी जो आते ही आदमियों को खाना चालू कर देंगी। तीसरा निशान यह लिखा है कि जब कयामत होगी तो कब्रों से मुर्दे उठेंगे। चौथा निशान यह है कि सूरज मशरक की बजाय मगरब से निकलेगा जो बगैर रोशनी का होगा।

कयामत के समय के लिखे निशानात पर श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि कुराने-पाक में जो लिखा है कि कयामत के समय दाभतुल-अर्ज जानवर पैदा होगा, का मतलब यह नहीं है कि कोई वास्तव में ऐसा जानवर होगा। कुराने-पाक में जितनी भी बातें छिपी हुई लिखी हैं, इनका कोई जाहिरी अर्थ नहीं होगा। इनका सबका बातिनी अर्थ है। कयामत के समय में सब लोग इस जानवर की तरह हो जायेंगे। इसकी जो खूबियाँ लिखी हैं वह इस प्रकार होंगी। मुख से मनुष्य नजर आयेगा परन्तु इसके काम जानवरों जैसे हो जायेंगे। इसी को सिर आदमी का और धड़ जानवर का कहा है। पहाड़ी बैल की यह विशेषता है कि जब उसका पेट भरा हो तो खाली नहीं बैठता और अपने सींगों को कहीं न कहीं मारता रहता है। कभी झाड़ियों में अपने सींगों को मारेगा तो कभी दीवाल में। कहने का तात्पर्य है कि मनुष्य जब कुछ सम्पन्न हो जाये तो वह अपना सींग कहीं न कहीं अड़ाता रहेगा। जैसे किसी भी समाज में नेता ही बनने के लिए अपने को घुसाता

Nijanand App

रहेगा, कहीं धर्म के क्षेत्र में चौधरी बनना चाहेगा, कहीं सियासत के क्षेत्र में दाँव-पेंच लड़ाकर आगे आने का प्रयत्न करेगा। इसी तरह मनुष्य की फितरत हो जायेगी। वह हर जगह अपनी टाँग अड़ाता नजर आयेगा। इसी को सिर पर पहाड़ी बैल के सींग कहा है। छाती उसकी शेर की होगी अर्थात् हर मनुष्य की छाती शेर की होगी याने उसके हृदय में दया, प्यार, नम्रता जैसे मानवीय गुण समाप्त हो जायेंगे। वह किसी भी जुल्म भरा कार्य करने में हिचकिचायेगा नहीं। जिस प्रकार शेर के अन्दर किसी के लिए दया नहीं होती उसी तरह उस समय हर मनुष्य के अन्दर भी कोई दया नहीं होगी। इसी को शेर की छाती कहा गया है। पीठ उसकी गीदड़ की होगी। आपने देखा होगा गीदड़ सारे शरीर से बहुत मजबूत होता है परन्तु उसकी पीठ पर यदि जोर से मुक्का मार दिया जाये तो दो टुकड़े हो जाता है। इसी तरह कयामत के समय मनुष्य की पीठ गीदड़ की होगी। अर्थात् धर्म के क्षेत्र में वह थोड़ा-सा भी धर्म का बोझ नहीं उठा सकेगा, दूसरे कामों में वह भले ही हजारों रुपया खर्च कर देगा। धर्म के नाम पर कुछ भी करने में सदा वह पीछे भागेगा। इसी को गीदड़ की पीठ कहा गया है। गर्दन उसकी मुर्गे की होगी। मुर्गे की गर्दन से अभिप्राय इन्सान के अभिमान से है। वह अपने आप को इतना अकड़ा लेगा। जिस तरह मुर्गे की गर्दन कभी नीचे नहीं झुकती, वह पूरी पीठ तक लम्बाई में ही झुक सकता है इसी तरह उस समय मनुष्य अहंकार के वशीभूत होकर सदा ही अकड़ में रहेगा। किसी तरह की नम्रता उसमें नहीं होगी। इसी को गर्दन मुर्गे की कहा गया है। आँखें उसकी सुअर की कही गयी हैं। जिस तरह कितने भी थाल अच्छे-अच्छे भोजन व मिठाई के रख दो और एक थाल गन्दगी का रख दो, तो वह सुअर सब अच्छे-अच्छे भोजनों को छोड़कर गन्दगी के थाल पर ही मुँह मारेगा। सुअर की आँख से यह मतलब है कि उस मनुष्य की आँखें हर समय गन्दे वातावरण को देखने के लिए लालायित रहेंगी। किसी भी स्त्री के प्रति उसकी भावना गन्दी ही रहेगी। हर माहौल में वह इसी तरह देखेगा। इसलिए उसकी आँखों की तुलना सुअर की आँखों से की गयी है। कान हाथी के होंगे। हाथी के कानों की यह विशेषता होती है कि वह अच्छी बात कभी भी नहीं सुन सकता। आप यदि उसकी बुराई कर दो तो वह फौरन सुन लेता है। इसी प्रकार मनुष्य के कान हाथी के होंगे अर्थात् वह कोई भी अच्छी बात ग्रहण नहीं करेगा और यदि आप उसके सामने किसी की बुराई शुरू कर दें तो वह उसको बड़े ध्यानपूर्वक सुनेगा। आप यदि आज किसी को परमात्मा का ज्ञान या और कोई अच्छी बात सुनाना चाहें तो उसके पास समय नहीं है

और यदि कोई अश्लीलता की बातें करना शुरू कर दें, तो वह सारा दिन आपके पास बैठा रहेगा। यही हाथी के कानों की विशेषता होती है। अन्त में कहा गया है कि उसकी लम्बाई जमीन से लेकर आसमान तक होगी। इसका अभिप्राय यह है कि जमीन से आसमान तक अर्थात् चारों ओर इसी तरह के जानवर दिखाई देंगे।

यदि आप थोड़ा-सा ध्यानपूर्वक विचार करें तो आपको आज के मनुष्य में करीब-करीब यह सारी विशेषताएँ मिल जायेंगी। इसलिए कहा गया है कि कयामत के समय चारों ओर इस खासियत के लोग ही नजर आयेंगे। यह आज भी नजर आ रहे हैं।

दूसरा निशान लिखा है कि कयामत के समय आजूज और माजूज जाहिर होंगे। इनकी तीन फौजें होंगी। यह मनुष्यों को खाना चालू कर देंगी। आजूज सौ हाथ का होगा और माजूज एक हाथ का होगा। आजूज का अर्थ है कि दिन और माजूज का अर्थ है रात। इसकी तीन फौजें सुबह, दोपहर और शाम हैं। आजूज सौ हाथ का और माजूज एक हाथ होने का अभिप्राय है कि दिन भर लोग जागते हैं और सौ झंझटों में फँसे रहते हैं और माजूज का अर्थ है रात और यह एक हाथ होगी अर्थात् रात्रि में केवल एक सोने का ही काम होगा। यह आजूज और माजूज लोगों को खायेंगे अर्थात् रात, दिन, सुबह, दोपहर और शाम कोई न कोई मरता ही रहता है और इसी तरह यह रात-दिन इन्सान को खाते ही रहते हैं, खाते ही रहेंगे।

तीसरा निशान यह लिखा है कि कब्रों से मुर्दे उठेंगे। इसका लोग जाहिरी अर्थ लेकर यह कहते हैं कि मुर्दे कयामत के दिन उठ खड़े होंगे। इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी ने आकर कहा कि जो खाक थी वह खाक में मिल गई। वह भला दुबारा कैसे उठ सकती है। तुम लोग जाहिरी बातों को पकड़े बैठे हो। कुराने-पाक कहता है कि जो लोग कुरान के अर्थों को जाहिरी रूप से लेंगे वह काफिर होंगे। कुराने-पाक के अठारहवें सिपारे में ऐसा उल्लेख है। इसलिए कुराने-पाक के किसी भी छिपे कलामों का अर्थ जाहिरी मत लो। कब्रों से मुर्दे उठना यह है कि यह जो तुम्हारा शरीर है, यही कब्र है और इसके अन्दर जो आत्मा है वह उस अल्लाह-तआला के प्रति कुछ नहीं जानती। यही इसका मुर्दा होना है। जब इमाम-मेंहदी ने आकर उस अल्लाह-तआला के बारे में सारी छिपी बातों को खोला और कायमी की है तो तुम्हारी शरीर रूपी कब्र के अन्दर सोई हुई आत्मा जो मुर्दा पड़ी थी, जाग्रत होकर उठ बैठी अर्थात् उसे ज्ञान हो गया। यही कब्रों से मुर्दे

Nijanand App

उठना है। तुम लोग जाहिरी कब्रों से मुर्दा उठने की राह देख रहे हो। यह कभी भी नहीं उठेंगे।

चौथा निशान कि सूरज मशरिक की बजाय मगरिब से निकलेगा और बगैर रोशनी के होगा, है। इसका अर्थ यह है कि उस अल्लाह-तआला के घर का ज्ञान (इल्म) रूपी सूरज जो पहले अरब में उदय हुआ वह पहले जिस जगह निकला उसे मशरिक कहा। अब उस अल्लाह-तआला के ज्ञान का सूर्य जो हिन्द में इमाम मेंहदी द्वारा कहा गया, उसको सूरज का मशरिक की बजाय मगरिब से निकलना कहा है। क्या कभी सूर्य भी बगैर रोशनी के हुआ है? रोशनी के बिना इसलिए कहा कि ज्ञान को देखने में कोई रोशनी नहीं होती, परन्तु वह सूर्य के समान होता है। साक्षी के लिए जब ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहदी जाहिर हुए तो यह मक्का से वसीयतनामे के रूप में लिखकर आये जो आज भी उर्दू बाजार दिल्ली से पढ़ने को मिल सकते हैं। जिस किसी को भी शंका हो वह वहाँ से मँगा कर पढ़ सकता है। उसमें लिखा है कि मक्का से बरकत, शफकत, ईमान और कुरान चारों उठ चुके हैं और इमाम-मेंहदी हिन्द में जाहिर हो चुके हैं। इन सब बातों का जिकर हदीस में इस प्रकार आया है कि जब जिब्राईल मक्का से बरकत, शफकत, इश्क, ईमान उठाकर हिन्द में ले जायेंगे, तब सब हैवानी तबीयत वाले हो जायेंगे।

कुराने-पाक के और भी छिपे हुए रहस्यों को आप इमाम-मेंहदी श्री प्राणनाथ जी ने खोलकर बताया। यह इस प्रकार है। कुराने-पाक के तीरे पारः तिल्कर्रसुलु में पाँच प्रकार की पैदाइश लिखी है। पहली कुन से, दूसरी एक हाथ से, तीसरी दो हाथ से, चौथी मूलइब्तदाई से और पाँचवीं खिलकत से। पहली कुन से पैदाइश का अर्थ है कि जब खुदा ने इस दुनिया को बनाने का इरादा किया तो "कुन" कहा। "कुन" का अर्थ है "होना"। यहाँ की जितनी जीव सृष्टि है इसको कुराने-पाक में खिलकते-आम कहा गया है। दूसरी एक हाथ की पैदाइश कही है। इसका अर्थ है जब संसार में हजरत मुहम्मद साहब रसूल बनकर आये और कुराने-पाक को कहा तो कुराने-पाक को मानते हुए जिन्होंने मुहम्मद साहब पर पक्का यकीन किया, वह लोग एक हाथ से पैदा हुए कहलाये। मुहम्मद साहब के बाद कुराने-पाक में लिखे कलामों के अनुसार जब श्री देवचन्द्र जी तथा इमाम-मेंहदी श्री प्राणनाथ जी आये और उन पर जिन लोगों ने पक्का यकीन किया, वह दो हाथ की पैदाइश कहलाये। चौथी मूलइब्तदाई पैदाइश का अर्थ अल्लाह-तआला (श्री राज जी या प्राणनाथ जी) के अर्शे अजीम (परमधाम) में रहने वाले मोमिन (ब्रह्म-सृष्टियाँ)

जो शुरू से ही हैं, से है। यह इस नश्वर जगत याने फानी दुनिया को देखने के लिए उतरीं। इन्हें "रूहें" भी कहा है। यह मूलइब्तदा की पैदाइश कही गयी है। पाँचवीं खिलकत की पैदाइश याने फरिश्ते जिन्हें ईश्वरी सृष्टि भी कहा है, है। यह नूर जलाल से है। अक्षर ब्रह्म की सृष्टि की पाँचवीं प्रकार की खिलकत की पैदाइश कही गयी है।

कुराने-पाक के तीसवें पारः में लिखा है कि नूह नबी के तीन बेटे हुए। एक स्याम, दूसरा हाम, तीसरा हिसाम लिखा है। स्याम ने मुस्लिम की किश्ती को पार पहुँचाया और काफिरों को डुबो दिया। फिर तीनों ने मिलकर दुनिया रची और तीनों जुदा-जुदा ठिकानों पर आये। यह सब बातें श्रीकृष्ण की बृज की लीला की हैं। नूह नबी अर्थात् वसुदेव के तीन पुत्र हुए। इनमें स्याम श्रीकृष्ण मुस्लिम मोमिन् अर्थात् ब्रह्म-सृष्टियों को योगमाया के ब्रह्माण्ड में ले गये और काफिरों को डुबो दिया अर्थात् पीछे काल माया का ब्रह्माण्ड लय कर दिया। इसका सारा विस्तार श्रीकृष्ण की त्रिधा लीला में किया गया है। यही सब बातें कुरान में लिखी हैं। इन्ना इंनजुलना सूरत में लैलतुल के बारे में सारा वर्णन है। उसमें लिखा है कि खुदा ने एक रात्रि के तीन हिस्से किये जिसे लैलतुलकद्र अर्थात रात्रि के तीन तकरार कहा है। इस लैलतुकद्र अर्थात् रात्रि के तीन खेल कहे हैं। इसमें पहला बृज, दूसरा रास और तीसरा जागनी का है। यह तीनों ही रात्रि के खेल कहे गये हैं। तीसरी रात्रि के बाद ही फज्र होना लिखा है जिसे कयामत कहा है। इसी फज्र के वक्त ही हजार महीने एक खैर उतरी जिसका अर्थ है कि इस दुनिया में इमाम-मेंहदी का हजार महीने तक ब्रह्मज्ञान उतरता रहा। इसी तरह के और भी निशान कुराने-पाक में इमाम-मेंहदी के जाहिर होने के तथा जो खेल हुआ, उसके बारे में लिखा है। इसका सारा विस्तार इमाम-मेंहदी श्री प्राणनाथ जी ने अपनी किताब 'श्री कुलजम-स्वरूप' में किया है।

कुराने-पाक के अनुसार खुदा जब इस संसार में आयेगा तो छः दिन रहेगा और छठे दिन मोमिनों को नमाज पढ़ाकर अपने साथ अखण्ड में ले जाएगा। जुम्मे वाले दिन सभी मुसलमान छठा दिन समझकर नमाज अदा करते हैं। वह इस दिन को विशेष मानते हैं कि यही छठा दिन खुदा का है और इस दिन खुदा सब को अपने साथ ले जायेंगे। इस जुम्मे की नमाज को पढ़ते-पढ़ते चौदह सौ साल हो गये हैं परन्तु आज तक खुदा लेने तो नहीं आया। कारण यह है कि यह दिन खुदा के हैं ही नहीं। यह तो ब्रह्मा के दिन हैं। कुराने-पाक में जो खुदा के छः दिन कहे गये हैं वह इस प्रकार हैं। सबसे पहले अल्लाह-तआला ने इस संसार में अपनी

Nijanand App

शक्ति और रूहों तथा फरिश्तों को भेजा। पहले जो संसार था उसमें बृज के अन्दर जोश की शक्ति श्रीकृष्ण के रूप में उतरी। कुराने-पाक में नूह नबी के घर तीन बेटे हुए करके वर्णन किया गया है। स्याम ही श्रीकृष्ण हैं और नूह नबी ही वसुदेव जी हैं। बृज को "दजला" कहा है। इस बृज के अन्दर ग्यारह साल बावन दिन तक अल्लाह-तआला (श्री राज जी) के जोश की शक्ति ने जो खेल किया, वह अल्लाह-तआला का इस संसार में पहला दिन कहलाया। तीसरे सिपारे में यह लिखा है कि हूद के घर तूफान आया तो वह अपनी उम्मत को किश्ती में बैठा कर एक बाग में ले गये। हूद का अर्थ है "नन्द जी"। इनके घर तूफान आने का अर्थ है जब श्रीकृष्ण ने ग्यारह साल और बावन दिन तक खेल किया तब अपनी उम्मत (ब्रह्म-सृष्टियों अथवा मोमिनों) को इस काल माया के ब्रह्माण्ड से योगमाया ब्रह्माण्ड में ले गए और पीछे सारे ब्रह्माण्ड को लय करना ही तूफान है। योगमाया को किश्ती कहा है फिर जिस बाग में ले गये, उसे ही वृन्दावन कहा है अर्थात् श्रीकृष्ण ब्रह्म-सृष्टियों को योगमाया में वृन्दावन ले गये। जहाँ जाकर "रास" जिसे कुराने-पाक में "फरात" कहा है, में जो खेल किया, इसी रास के खेल को खुदा का दूसरा दिन कहा है। रास का खेल करने के बाद पुनः यह ब्रह्माण्ड बना दिया और वही श्रीकृष्ण (स्याम) ही मुहम्मद बनकर अरब में जाहिर हुए। हजरत मुहम्मद साहब ने जितने समय तक लीला की अर्थात् जब तक हजरत मुहम्मद साहब इस फानी दुनिया में रहे, इसी को खुदा का तीसरा दिन कहा है। कुराने-पाक में हजरत मुहम्मद ने छठे पारः में ईसा रूह-अल्लाह के आने को लिखा है कि जब हजरत मुहम्मद को नौ सौ नब्बे साल व्यतीत हो जायेंगे तब वह जाहिर होंगे। इस तरह ईसा रूह-अल्लाह श्री देव जी इस संसार में आये और इस नश्वर दुनिया में रहकर लीला की। इसी समय को ही खुदा का चौथा दिन कहा है। पाँचवाँ दिन वह कहा गया है जब ईसा रूह-अल्लाह ने अपना दूसरा जामा पहना और इमाम-मेंहदी श्री प्राणनाथ जी के रूप में जाहिर हुए और आकर सारी दुनिया के लिए कायमी की तथा ब्रह्म ज्ञान दिया। इस खैर उतरने की अवधि को खुदा का पाँचवाँ दिन कहा गया है। इमाम-मेंहदी श्री प्राणनाथ जी ने जो ब्रह्मज्ञान संसार को दिया, उस ज्ञान को पढ़ना ही जुम्मे की नमाज कहा है। यही अल्लाह-तआला का छठा दिन है जिसमें आज हम और आप बैठे हैं। श्री प्राणनाथ जी ने आकर हिन्दू को हिन्दू के ग्रन्थों द्वारा, ईसाइयों को बाईबल द्वारा, मुसलमानों को कुराने-पाक द्वारा और सिखों को उनकी गुरुवाणी द्वारा इस नश्वर जगत् अथवा फानी दुनिया से लेकर परमधाम के भेद खोलकर बताए। इसका अध्ययन करने के बाद मैं

आपके सामने इस पुस्तक को रख रहा हूँ। यही दिन मोमिनों का अर्थात् ब्रह्म-सृष्टियों का छठा दिन है। इसी ब्रह्मज्ञान को पढ़कर और इसका सार ग्रहण करना ही नमाज कही गयी है।

सातवें दिन खुद अल्लाह-ताला योगमाया के ब्रह्माण्ड में इस नश्वर जगत का महा प्रलय कर सब रूहों, फरिश्तों तथा खिलकते-आम को लेकर वहाँ खड़ा करेंगे, स्वयं काजी होकर बैठेंगे और सबका हिसाब करेंगे। सबको बहिश्तें बाँटकर अखण्डता प्रदान करेंगे। इस प्रकार यह खुदा के सात दिन का सारा खेल है। छः दिन खुदा के इस दुनिया तक और सातवाँ दिन योग माया में समाप्त होगा। कुराने-पाक के मानने वाले सभी यह सोचते आ रहे हैं कि आखर-उल-जमा इमाम-मेंहदी मुसलमानों में आयेंगे, परन्तु वह यह नहीं सोचते कि आज तक जो भी उनके पैगम्बर आए हैं, वह कोई भी मुसलमान तन में नहीं आया। सभी यहूदी खिलके में अर्थात् गैर-मुसलमानों में ही आये हैं, तो अब भी वह गैर-मुसलमानों में आयेंगे। ऐसा मुसलमानों की हदीस किताब में साफ लिखा है। यही बात इंजील किताब में भी लिखी है कि जब हजरत ईसा रूह-अल्लाह इस संसार में आयेंगे तो उनके मुख पर पर्दा होगा। सोचने की बात है कि क्या ईसा रूह-अल्लाह नकाब पहनकर जगत में आयेंगे। नहीं, यह नकाब पहनना तो जाहिरी अर्थ हुआ। कुराने-पाक के अठारहवें सिपारे में साफ लिखा है कि कुराने-पाक के सब अर्थ बातिन होंगे। इसलिए मुख पर पर्दा होगा का बातिनी अर्थ है कि गैर-मुसलमानों में वह आयेंगे। सभी शर्तों, 'वायदों' और निशानियों के साथ श्री देव चन्द्र जी ही ईसा रूह-अल्लाह हैं। मुख पर पर्दा होने का अर्थ है कि वह हिन्दुओं के तन में जाहिर होंगे। इस बात का प्रमाण "मक्का" से लिखकर आए वसीयतनामों में पूरी तरह हमें मिल जाता है। जो लोग चाहें उन वसीयतनामों को मँगा कर पढ़ सकते हैं। परन्तु उनको पढ़ना बड़े ध्यान से पड़ेगा। इस प्रकार इमाम-मेंहदी श्री प्राणनाथ जी ने सारे मुसलमान भाइयों तथा आखरी ईसा बनकर सारे ईसाई धर्म वालों तथा विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक बनकर सारे हिन्दुओं को तथा पार पुरुख ब्रह्मज्ञानी बन कर सारे सिख भाइयों को अपनी किताब में इस प्रकार सम्बोधित किया है।

एक कहया वेद कतेब ने, सो जुदा रह्या सबन।
तिन को सारों ढूँदिया, सो एक न पाया किन॥
एक बका सब कोई कहे, कोई पावे न बका ठौर।
सब कहें हमों न पाइया, जो कर कर थके दौर॥ खुलासा।6।2-3।

Nijanand App

और हिन्दवी किताबों में यू कही, बुद्ध कल्कि आवेगा सही।
आये के करसी एक रस, मशरक, मगरब, करसी बस॥
ज्योति कहे विजयाभिनन्द, सब कलयुग को करसी निकंद।
अंजील कहे ईसा बुजरक, आये के करसी हक॥
जहूद कहे मूसा बड़ा होए, ताके हाथ छूटे सब कोय।
यूँ सारों रसम जुदी कर लाई, सबें बुजरगी धनी की कही॥
यूँ उरके जुदे नाम धर, रब आलम का आया आखिर सनंध। खुलासा॥

इस प्रकार सारे संसार के धर्मों को सम्बोधित करते हुए श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि ऐ संसार वालो! तुम सभी लोग यह कहते हो कि एक परमात्मा सबका है और उसका बका (परमधाम) रहने की जगह है। परन्तु आज तक न तो तुम लोग उस एक को ही खोज सके और न ही उसका ठिकाना बका (परमधाम) ही खोज सके। भले ही उसको खोजने के लिए तुम लोगों ने अधिक परिश्रम किया और अन्ततः निराश होकर यह कहने पर विवश हो गये कि "हमने नहीं पाया"। फिर जब तुम लोगों को उस एक का पता नहीं लग सकता तो अपने-अपने पैगम्बरों पर निर्भर करते हुए अपनी-अपनी रसम अर्थात् रास्तों को जुदा कर लिया और अपने ही पैगम्बरों की बड़ाई करते हुए सब कुछ मुझे ही समझा। इस तरह हिन्दुओ! ज्योतिष शास्त्र अर्थात भविष्य पुराण और ग्रन्थों में मुझे ही कहा कि वह बुद्ध कल्कि के रूप में आवेगा। किसी ने कहा कि विजयाभिनन्द के रूप में आएगा और आकर पूर्व से पश्चिम तक सब में जाहिर होगा और सभी उसे मानेंगे। इसी तरह ईसाई भाइयो! आपने अंजील में मुझे ही ईसा का नाम देकर बड़ा बताया और कहा कि यही सबको मुक्त करेगा। इसी तरह यहूदियों ने मुझे ही मूसा का नाम देकर कहा कि वह आकर सबको मोक्ष देगा। मुसलमानों ने भी मुझे ही सम्बोधित करते हुए कहा कि सारे संसार का खुदा आयेगा और आकर सबको पार करेगा। आप सब ने मुझे ही सम्बोधित करते हुए सारी शोभा मेरी गाई है। अब मैं सारी दुनिया का खुदा, सारी दुनिया का ईसा, सारी दुनिया का मूसा, सारी दुनिया का विजयाभिनन्द, सारी दुनिया का बुद्ध कल्कि, आ गया हूँ। अब तुम लोग मेरे ब्रह्मज्ञान को पढ़ो और अपनी शंकाओं को मिटाकर सब एक हो जाओ। भले ही तुम अपनी-अपनी रस्मो-रिवाजों से जुदा होकर बैठे हो, परन्तु हो सब एक ही।

इस प्रकार से श्री प्राणनाथ जी सारे संसार को समझाते हुए इस प्रकार आयी ब्रह्म-सृष्टियों को सब फिरकों में ढूँढ़ने के लिए गुजरात से चलकर सारे रास्ते

सबको जाग्रत ज्ञान का उपदेश देते हुए जब दिल्ली पहुँचे तो वहाँ पर मुसलमानों के बादशाह औरंगजेब को कई पैगाम दिये। श्री मिहिर-राज ठाकुर के रूप में बारह साल की अवस्था में ही सतगुरु श्री देवचन्द्र जी ईसा रूह-अल्लाह से मिले थे, तो उन्होंने सारी बातें बताते हुए कहा था कि परमधाम से दो सरदार सखियाँ जो किसी बड़े राजघराने में उतरी हैं को जगा लेना। यानी उन दोनों को उनकी पहचान करा देना कि तुम परमधाम से आई हो और तुमको वापस परमधाम जाना है। इस प्रकार जब उनको अपनी पहचान हो जावेगी तब वह जाग्रत हो जायेंगी। तो यह खेल जो नश्वर जगत है, समाप्त हो जायेगा और फिर सबको मोक्ष देकर परमधाम चलेंगे। इसी कारण जब श्री प्राणनाथ जी इमाम-मेंहदी ने उन दोनों की खोज शुरू की तो रास्ते में और ब्रह्म-सृष्टियाँ जाग्रत हो गईं, परन्तु अभी तक दोनों बड़ी रूहों में से एक भी नहीं मिली थी। जब वह दिल्ली पहुँचे तो औरंगजेब जो उस समय दिल्ली का शासक था, की पहचान की कि एक तो सरदार सखी परमधाम की शाकुमार की वासना है, जो इस औरंगजेब के तन में उतरी है।

औरंगजेब के पास कई पैगाम भेजे। परन्तु उस समय शरीअत का इतना जोर था कि इमाम-मेंहदी श्री प्राणनाथ जी का कोई भी पैगाम औरंगजेब तक न पहुँच सका। उसके दरबार में जो काजी-मुल्ला थे, को मोमिनों ने पैगाम दिया और कुराने-पाक द्वारा सारी हकीकत को खोल कर ग्यारहवीं सदी में इमाम-मेंहदी के आने के संकेत दिये और बताया कि इमाम मेंहदी आ चुके हैं, बादशाह को खबर करो। लेकिन उन लोगों ने यह पैगाम इसलिए बादशाह तक नहीं पहुँचने दिया कि अगर पैगाम सुनकर बादशाह इमाम-मेंहदी को मान लेगा तो सारे मुसलमानों को मानना पड़ेगा और जब इमाम मेंहदी जाहिर हो जायेंगे तो कुराने-पाक में लिखा था कि उस समय कयामत हो जायेगी और सब फना हो जायेगा। सारे मुसल्मान कयामत का अर्थ फनाफिल्लाह से लेते थे। उन सबको भय हो गया कि अभी कयामत हो जायेगी अर्थात् हम लोग फना हो जायेंगे। इसलिए काजियों ने यह स्वीकार करने के बाद भी कि आप ही इमाम-मेंहदी के आदमी हो और हम मानते हैं कि इमाम-मेंहदी आ गये हैं, परन्तु अभी हम इसको जाहिर नहीं करने देंगे। उनका न मानना भी इस कारण से था कि कुराने-पाक में लिखा था कि जब इमाम-मेंहदी आयेंगे और उसके आदमी आकर पैगाम देंगे उस समय मुसलमानों के दिल पर इबलीस बैठा होगा। वह उनको नहीं मानने देगा और इमाम-मेंहदी के आदमियों को शरीअत मानने वाले लोग पकड़ कर बन्द कर देंगे और खूब मारेंगे। यह भी लिखा था कि जिस रात इमाम-मेंहदी के आदमियों

Nijanand App

(मोमिनों) को मार पड़ेगी, उसी रात मक्का में हजरत मुहम्मद साहब की कब्र की दो मीनारें गिर जायेंगी और चौबीस घण्टे तक वहाँ से यह आवाज आती रहेगी कि हे मुसलमानो! यहाँ से शफकत, बरकत, ईमान और कुरान उठ चुके हैं और इमाम-मेंहदी हिन्द में जाहिर हो चुके हैं। ठीक ऐसा ही हुआ। जब मोमिनों के पैगाम देने के कारण उन सबको मार पड़ी, तो मक्का के दो बुर्ज गिर गये और चौबीस घण्टे तक आवाज आती रही जो बाद में वहाँ के काजियों ने सुल्तान औरंगजेब को लिखकर भेजा था। यही वसीयतनामे कहलाते हैं जिनका जिक्र मैंने पिछले अध्यायों में किया है। जब यह वसीयतनामे आये तो औरगंजेब ने यहाँ के काजी एवं मुल्ला लोगों से कहा कि मक्का में जाकर पता करो। तब यह मक्का गये और जाकर देखा कि कुरान तो वैसे ही पड़ी है, लेकिन बुर्ज जरूर गिर गये हैं। तब उन्होंने बादशाह से आकर कहा कि हजरत की कब्र चूँकि पुरानी थी और आँधी से गिर गई है सो ठीक करवाने का हुक्म दे आये हैं और कुरान तो वहाँ रखी है। दरअसल उन्होंने जाहिरी बातें विचार कर ऐसा कहा था। कुरान का उठ जाने का तात्पर्य यह नहीं था कि कुराने-पाक की पुस्तक उठ जाती। कुरान के उठ जाने का बातिन अर्थ यह था कि कुरान की शक्ति यहाँ से उठकर हिन्द में चली गयी थी। परन्तु स्वार्थी तत्वों ने वास्तविकता की जानकारी सुल्तान औरंगजेब को न होने दी जिससे सब लोग एक दिन जो कुराने-पाक में लिखा था कि वक्त आखिरत में एक दीन हो जायेगा, में न आ सके। काजियों द्वारा इमाम-मेंहदी को न जाहिर होने देना सारे संसार के लिए दुर्भाग्य का कारण बन गया और इसी कारण औरगंजेब सुल्तान की रूह जो सरदार सखी अर्श अजीम परमधाम की थी न जाग सकी जिस कारण यह खेल अभी तक खड़ा है।

इमाम-मेंहदी श्री प्राणनाथ जी के मोमिन शरीयत का जोर होने के कारण इमाम-मेंहदी का पैगाम न दे सके, तो श्री प्राणनाथ जी स्वयं दिल्ली से हरिद्वार की तरफ बढ़े। उस समय हरिद्वार में कुम्भ का मेला लगा हुआ था और कुम्भ पर हिन्दुओं के सभी बड़े-बड़े आचार्य और सन्त-महन्त वहाँ पर आये हुए थे। उन्होंने कुराने-पाक की छिपी बातों को जाहिर करके कयामत (कायमी) के दिन को जाहिर करके सभी मुसलमानों को सन्देश दे दिये और इमाम-मेंहदी के इस दुनिया में जाहिर होने की सारी बातें लिख दीं। स्वयं को विजयाभिनन्द बुद्ध कल्कि साबित करने के लिए श्री प्राणनाथ जी हरिद्वार पधारे जहाँ पर सब हिन्दुओं के शास्त्रों से स्वयं को बुद्ध अवतार जाहिर किया।

श्री प्राणनाथ जी ने सारी दुनिया के मुसलमानों को कुराने-पाक द्वारा अपने आप को इमाम-मेंहदी जाहिर करके बताया और संसार के सारे ईसाई धर्म के मानने वालों को अपने आखिरी ईसा होने के निशान बताए तथा बाईबल के वह छिपे भेदों को खोलकर जाहिर किया जिसके लिए लिखा था कि ईसा जब दुबारा अपने पिता की महिमा सहित आयेंगे तब इन बातों को खोलकर जाहिर करेंगे। श्री प्राणनाथ जी अपने को हिन्दुओं के ग्रन्थों में लिखे विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार जाहिर करने के लिए हरिद्वार में सम्वत् सतरह सौ पैंतीस (1735) में अपने साथ कुछ जमात को लेकर पहुँचे। हरिद्वार में कुम्भ का मेला लगा हुआ था। इस मेले में हिन्दू जगत के सभी सम्प्रदायों के सन्त, महन्त, आचार्य और संन्यासी आदि पधारे हुए थे। श्री प्राणनाथ जी का पहनावा न तो हिन्दुओं के योगियों, साधुओं तथा आचार्यों से मिलता था और न ही मुसलमानों के पीर फकीरों से। आप के सिर पर सफेद पगड़ी थी। वह सफेद कुर्ता व सफेद धोती धारण किये हुए थे। कन्धों पर एक गुलाबी रंग का पटका और गले में एक सौ आठ दानों की माला थी। माथे पर दो खड़ी लाइनों के बीच बिन्दी का तिलक लगा हुआ था। यह उस समय किसी भी हिन्दू समाज में प्रचलित नहीं था। श्री प्राणनाथ जी के मुख पर राजसी नूर झलकता था। वैसे भी आपका जन्म राजघराने के ठाकुरों में हुआ था। इस कारण आप के शरीर का रंग इतना गौरवपूर्ण सफेद था कि साधारण व्यक्ति तो एकाएक आपके चेहरे पर नजर ही नहीं टिका सकता था। दूसरे आपके अन्दर पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द की पूर्ण शक्ति विराजमान थी। इस कारण भी आप अपनी जमात के साथ अलग दिखाई दे रहे थे। जब हरिद्वार में कुम्भ का मेला होता है तो सभी सम्प्रदाय वालों के आचार्यों, सन्तों की जमातों को अलग-अलग स्थान दिये जाते हैं और वह अपने-अपने सम्प्रदाय के झण्डों को अपनी-अपनी कुटियों/आश्रमों पर लगा कर रखते हैं। स्वामी श्री प्राणनाथ जी जब अपनी जमात के साथ वहाँ पहुँचे तो सभी सम्प्रदाय के लोग अपने-अपने स्थानों से बाहर निकल कर आपकी जमात को देखने लगे और सभी मन ही मन यह सोचने लगे कि वेश से तो कोई महात्मा लगते हैं लेकिन यह किसी भी हिन्दू सम्प्रदाय की वेश-भूषा में नहीं है। लगता है औरगंजेब के कोई साथी हैं जो वेश बदलकर यहाँ हमारी खोज करने आये हैं। इन सभी सम्प्रदाय वालों का ऐसा सोचना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। उस समय औरंगजेब बादशाह का राज्य था और वह हिन्दुओं में एक बदनाम बादशाह गिना जाता था। वह अपने इस्लाम धर्म को फैलाने के लिए

Nijanand App

तरह-तरह के जुल्म हिन्दुओं पर करता था, ऐसा इतिहास साक्षी देता है। अतः वहाँ हिन्दू सन्तों का ऐसा सोचना स्वाभाविक था।

श्री प्राणनाथ जी के विषय में चारों ओर चर्चा फैल गयी और धीरे-धीरे सभी सम्प्रदाय वाले सन्त, महन्त, आचार्य तथा उनकी जमात के लोग इकट्ठे होने शुरू हो गये। सभी लोग आपस में श्री प्राणनाथ जी के बारे में शंकाओं से घिर कर तरह-तरह की बातें करने लगे। अन्ततः सब मिलकर श्री प्राणनाथ जी के पास आये और पूछने लगे कि आप कौन हैं? आप यदि हिन्दू हैं तो किस सम्प्रदाय के मानने वाले हैं? आपकी वेश-भूषा हमने आज तक किसी भी हिन्दू सम्प्रदाय में नहीं देखी। अतः आपके प्रति हमें जो शंका है, उसका समाधान करें। इस प्रकार सभी हिन्दू संन्यासियों, महन्तों, आचार्यों की बात सुनकर श्री प्राणनाथ जी बोले, हे महात्माओ! हम लोग आत्म तत्व के ज्ञान की खोज में निकले हैं और हम लोग शुद्ध हिन्दू हैं। लेकिन अभी तक हम लोगों ने किसी भी सम्प्रदाय वाले से दीक्षा नहीं ली है। कारण यह है कि जब तक हमारी आत्मा की सन्तुष्टि नहीं हो जाती है और हम लोगों को आत्म-तत्व का ज्ञान नहीं मिल जाता, तब तक हम लोग खोज करते रहेंगे। हमने सुना है कि इस कुम्भ के मेले में सारे विश्व के हिन्दू समाज के आचार्य तथा सन्त-महन्त आये हुए हैं। हम लोग यहाँ इसलिए आये हैं कि शायद हमें किसी के पास से आत्म-तत्व का ज्ञान मिल जाये, तो हम लोग उन्हीं को गुरु धारण कर लेंगे। यदि आप किसी के पास आत्म-तत्व का ज्ञान हो और हमारे प्रश्नों के उत्तर दे देवें तो हम आपको अपना गुरू धारण कर लेंगे। आप लोग इस बात से मत डरो कि हम लोग भेदिए हैं या मुसलमान हैं और आपका भेद लेने आये हैं। हम तो गुरू धारण करने आये हैं। श्री प्राणनाथ जी का यह कहना कि हम दीक्षा लेने आये हैं, सुनकर सभी धर्मों के मानने वाले, सन्त-महन्तों ने श्री प्राणनाथ जी से कहा कि हम लोग आपको आत्म-तत्व का ज्ञान सुनाते हैं। हमसे दीक्षा ले लो। श्री प्राणनाथ जी ने सभी से कहा कि आप लोग सब हमारे साथ बैठ जाओ और बारी-बारी से अपने सम्प्रदाय के बारे में बताते जाओ और जो-जो बातें आप के ज्ञान को सुनकर पूछी जायें, उनका उत्तर देते जाओ। जा भी हमें पूरी तरह सन्तुष्ट कर सकेगा, हम उसी सम्प्रदाय को ग्रहण करके उनके गुरू से दीक्षा ले लेंगे। परन्तु साथ ही हमारी एक शर्त सभी सम्प्रदाय वालों से है कि हम लोग कोई भी बात मन-गढ़न्त नहीं मानेंगे। आप लोग जो कुछ भी कहो उसका प्रमाण शास्त्रों में होना चाहिए। बिना शास्त्रों के प्रमाण के कोई भी बात जो आप लोगों ने अपने मन से बनाई होगी, उसको हम नहीं

मानेंगे। यदि आप लोगों को हमारी यह शर्त मंजूर हो तो आप बारी-बारी से अपने सम्प्रदाय का ज्ञान हमें सुनाओ और जहाँ हमारी शंका हो उसका समाधान करो तो हम आप के ज्ञान को ग्रहण करेंगे।

श्री प्राणनाथ जी की सब बातों को सुन कर सभी सम्प्रदाय वाले सहमत हो गये। सभी ने अपने-अपने शास्त्रों को खोलकर सामने रख लिया और बारी-बारी से अपना ज्ञान सुनाने के लिए इकट्ठे होकर बैठ गये। बीच में श्री प्राणनाथ जी अपनी जमात लेकर बैठ गये। उनमें से सबसे पहले रामानुज सम्प्रदाय वाले बोले कि हे महात्मा जी ! हमारे सम्प्रदाय की पद्धति पर विचार करो। सबसे पहले हम आपको यह बता देवें कि हमारे धर्म के गुरुओं ने माला का जाप हृदय में जपने को कहा है और हमारा जो गोत्र है वह सबसे उत्तम है। हमारी शाखा जो स्वयं प्रभु से चली है, हम उसी को मानते हैं। हमारा जो वर्ण है वह शुक्ल है जो सबके वर्णों से अलग है। ब्रह्मा के मुख से जो चार वेद उतरे हैं, उनमें साम वेद को ही हम श्रवण करते हैं हमारी मुक्ति सामीप्य है अर्थात् विष्णु भगवान के बैकुण्ठ में ही हमारी मुक्ति का स्थान है और हमारा मठ भी बैकुण्ठ है। सुमेरु पर्वत हमारी प्रदक्षिणा का स्थान है और हमारा बीज मन्त्र निराकार है। आकाश के समान ब्रह्म को हम सर्वत्र व्यापक मानते हैं। पद्मनाभि हमारा क्षेत्र है। मेल कोटा हमारे सुख-विलास करने की जगह है। श्री लक्ष्मी जी को हम अन्तर्मन से इष्ट मानते हैं। हमारी यह पद्धति श्री लक्ष्मी जी से चली है और यदि हमारी पद्धति के सिवाय किसी दूसरी पद्धति पर चलता है तो उसको सदा भ्रम बना रहेगा। चौदह लोकों पर जो बैकुण्ठ है वही हमारा अखाड़ा है और रंगनाथ जी हमारा धाम है। कावेरी नदी हमारा तीर्थ स्थान है। हमारी देवी कमला जी हैं, जो नारायण जी के साथ शेष नाग पर विराजती हैं। इन्हीं के द्वारा हमारे संसारी दुःख दूर होकर हमें सुखों की प्राप्ति होती है। श्री नारायण जी हमारे देवता हैं और हमारे आचार्य विष्णु भगवान हैं। हमारी गायत्री अर्थात् सुमिरन करने वाला मन्त्र हमारा अलख निरंजन है। यह हमारी पद्धति है। कृपा करके आप इसे ग्रहण करें। श्री प्राणनाथ जी ने उनसे पूछा कि हम मानते हैं कि आप का पंथ अगाध है, परन्तु आपने जो कुछ भी बताया है वह सब इसी जगत् के अन्दर का है। वेद तो जगत का नाश कहते हैं। कृपया यह बताओ कि जब महाप्रलय में सारे पिण्ड (शरीर) और ब्रह्माण्ड का नाश हो जायेगा तो फिर जीव कहाँ जायेगा? यह हमारे मन में शंका आई है सो कृपा करके इसे दूर करें। तब रामानुज सम्प्रदाय वालों ने कहा कि इसके अतिरिक्त और किसी स्थान का हमें पता नहीं है।

Nijanand App

नीमानुज सम्प्रदाय वाले कहने लगे कि महाराज, आओ, हम आपको बताते हैं। आप हमारी पद्धति जो सबसे परे की है, उसे ग्रहण करो। इस प्रकार नीमानुज वालों ने कहा कि हे ऋषिराज! हमारी शाला मथुरा है। हमारा धर्म का क्षेत्र पवित्र गोकुल है। हमारा अखण्ड धाम द्वारिका पुरी है। हमारे तीर्थ का स्थान गोमती नदी है और हमारे इष्ट रुक्मिणी जी हैं। यजुर्वेद को हम पढ़ते हैं तथा हरि नाम की माला का हमारा जाप है। हमारी मुक्ति का स्वरूप सारूप्य तथा देवी वृन्दा हैं। हमारे सुख-विलास का ठिकाना नित्य वृन्दावन है। हमारा मन्त्र प्रणव ब्रह्म के स्थान में ओंकार है। हमारा यह सम्प्रदाय ब्रह्मा जी के मानसी पुत्र सनकादिक से चला है। यह सबसे प्राचीन है। हमारा ज्ञान गोपाल वंश से चला है और गोपाल नाम के मन्त्र का हम उच्चारण करते हैं। हमारे आचार्य श्री नारद जी हैं और दुर्वासा हमारे ऋषि हैं। देवता हमारे गरुड़ जी हैं जो सदा सन्तों की रक्षा करते हैं। यही हमारी पद्धति है, कृपया आप इसे ग्रहण करें। तब श्री प्राणनाथ जी ने कहा कि आपने कुछ बातें तो जगत से परे की की हैं और कुछ जगत के अन्दर की। यह कैसे सम्भव है? असत्य में सत्य कैसे समा सकता है? आप इसे अलग-अलग करके बताइए? इस बात का निवारण नीमानुज वाले नहीं कर सके।

विष्णु श्याम वालों ने अपनी पद्धति बताई। उन्होंने भी सब इसी जगत के अन्दर की बातें बतायीं। इसके बाद माधवाचार्य सम्प्रदाय वालों ने भी अपनी पद्धति में इसी प्रकार जगत के अन्दर की बातें कीं। इनके बाद दस नाम धारी संन्यासी सम्प्रदाय वालों ने अपनी सात मन्या तथा चार मठ के सारे भेद बताये। षट दर्शन वालों ने अपने छः शास्त्रों की पद्धति बताई और (1) मीमांसा (2) सांख्य (3) वैशेषिक (4) पातन्जलि (5) वेदान्त (6) दर्शन के विषय में समझाया। कोई भी इस नश्वर जगत के बाहर की कोई भी बात न कह सके। किसी के पास आत्म-तत्व का ज्ञान नहीं था। जब श्री प्राथनाथ जी ने सभी हिन्दू धर्म वालों से आत्म-तत्व और अखण्ड के ज्ञान के विषय में प्रश्न किये, तो कोई भी आचार्य, सन्त ऐसे प्रश्नों का उत्तर न दे सके। श्री प्राणनाथ जी द्वारा सारे वेदों, शास्त्रों और पुराणों आदि के गहन ज्ञान को देखकर सभी सोचने लगे कि हम लोग तो इनको हिन्दू ही नहीं समझ रहे थे, परन्तु यह तो सब शास्त्रों के पूर्ण जानकार और शुद्ध हिन्दू हैं और लगता है कि इनका कोई नया ही ज्ञान है जो आज से पहले इस संसार में नहीं आया है। सबको मिल कर इनसे प्रश्न करने चाहिए। ऐसा विचार कर सभी सन्त, महात्मा, आचार्य तथा उनके साथ जो जमात थी, उन्होंने श्री प्राणनाथ जी से इस प्रकार प्रश्न किये। महात्मा जी! हम सबने आप को अपने-अपने सम्प्रदाय के

विषय में सारी बातें बताईं, अब कृपा करके आप भी बताएँ कि आप कौन हैं? आपकी कौन सी सम्प्रदाय है? जिस प्रकार आप ने हमसे यह शर्त रखी थी कि कोई बात बिना प्रमाण की नहीं मानेंगे इसी प्रकार कृपया आप भी क्रोध न करके प्रेमपूर्वक हमें शास्त्रों के प्रमाण देकर कि कौन-से शास्त्र में लिखा है, सो बतायें कि आपकी शाखा कौन-सी है? शिखा कौन सी है? सूत्र क्या है? पूजा किसकी करते हैं? गोत्र और इष्ट के बारे में बताओ। साधन क्या हैं? पुरी कौन सी है? देवी कौन सी है जो आप लोगों के संसारी दुःखों का निवारण करती है। शाला और क्षेत्र भी कहो? सुख-विलास का ठिकाना कौन सा है? आपके ऋषि कौन हैं? किस देव को मानते हो? आपका तीर्थ कौन सा है? कौन से शास्त्र का आप अध्ययन करते हैं? आपका ज्ञान कौन सा है? उसको पढ़ने से क्या फल मिलता है? कृपया यह भी बताएँ कि आपकी सम्प्रदाय कहाँ से चली है तथा कौन सी सम्प्रदाय है? आपका निवास स्थान कहाँ है? सब बातों को मय प्रमाण के कि कौन सी बात कौन से शास्त्र में लिखी है, उद्धरण देकर समझाइए। ऐसा वहाँ पर उपस्थित सभी धर्म वालों ने श्री प्राणनाथ जी से प्रश्न करते हुए उनका समाधान करने की प्रार्थना की।

श्री प्राणनाथ जी ने सभी सम्प्रदाय वालों के प्रश्नों को सुनकर कहा कि आप लोगों ने जो प्रश्न किये हैं, मैं उन्हें बारी-बारी से एक-एक प्रश्न का उत्तर शास्त्रों के प्रमाण के साथ दूँगा। कृपा करके ध्यानपूर्वक सुनो। सबसे पहले आपने मुझसे पूछा कि "मैं कौन हूँ" इसे मैं आपको "व्यास" जी द्वारा लिखित हरवंश पुराण से बताता हूँ। आप सब सन्तजन ध्यानपूर्वक सुनो तथा विचार करो और मन में किसी प्रकार का विरोध नहीं रखो।

अभाविनो भविष्यन्ति, मुनयो ब्रह्मरूपिणः।
उत्पन्नाय कलियुगे, प्रधान पुरुषाऽश्रयाः॥
कथायोगेन तान् सर्वान् पूजायिष्यन्ति मानवाः।
यस्य पूजा प्रभावेन जीवसृष्टि समुद्धरः॥

(हरवंश पुराण भविष्य पर्व अ. 4)

व्यास जी राजा जन्मेजय को एक अनहोनी घटना की बात सुनाते हुए कहते हैं कि राजा जन्मेजय! सुनो, तुम्हारे पाण्डव कुल में उत्पन्न दादा जी, जिनका नाम भीम था, इतने बलशाली थे कि महाभारत में उन्होंने लाखों हाथियों को पूँछ से पकड़ कर आसमान की तरफ उछाल दिया था और वह हाथी वापस धरती पर नहीं आए। व्यास जी की ऐसी बात सुनकर राजा बोले, हे ऋषिराज! क्या आप

Nijanand App

की इन बातों पर कोई विश्वास कर सकता है। कृपया आप ऐसी बात मत सुनाओ जिन पर विश्वास ही न आवे। सोचने की बात है कि आज मुझमें इतनी शक्ति है कि मैं यदि अपनी पूरी शक्ति लगा दूँ तो एक हाथी को थोड़ा-बहुत हिला सकता हूँ और मेरे पिता मुझसे दस गुनी शक्ति रखते होंगे। वह किसी तरह बैठे हुए हाथी को खड़ा कर देते रहे होंगे, तो वह किसी न किसी तरह बैठे हुए हाथी को उठा लेते होंगे। बस इससे ज्यादा नहीं हो सकता। आप जो कहते हैं कि लाखों हाथियों को पूँछ से पकड़ कर घुमाकर आसमान पर इतनी दूर फेंका कि वह आज तक वापस नहीं आये, यह बात मानने योग्य नहीं है। यह तो कोरी गप्प लगती है। राजा जन्मेजय की बात सुनकर व्यास जी मुस्कराते हुए बोले कि हे राजन! यदि मेरी बात का विश्वास नहीं करते हो तो मैं आपको प्रत्यक्ष रूप में दिखाता हूँ। ऐसा कह कर व्यास जी ने मन्त्र द्वारा आसमान की गति को रोका और अपने योग के बल पर हाथियों के अस्थि-पंजर पृथ्वी पर गिराना शुरू किया। जब व्यास जी के योग के बल से हाथियों की हड्डियों के ढेर लगने लगे, तब राजा ने उनसे क्षमा माँगते हुए प्रार्थना की कि आप इनको गिराना बन्द करके वापस आसमान पर भेजो। तब पुनः व्यास जी ने मन्त्र उच्चारण कर उन हड्डियों को वापस आसमान पर भेज दिया और राजा से बोले कि यह तो अभी एक अंश भी नहीं आया था। यदि सारे अस्थि-पंजर यहाँ गिरा दूँ तो आधी धरती ढक जायेगी। व्यास जी की ऐसी बात सुनकर राजा ने उनसे दुबारा क्षमा माँगते हुए आगे सुनाने की प्रार्थना की।

व्यास जी बोले, हे राजन्! अब तू अपनी बात सुन कि भविष्य में तुझ पर क्या बीतने वाली है। मैं तुम को बताता हूँ कि एक बार तू अपने दरबारियों के साथ शिकार खेलने जायेगा और घोर जंगल में जब शेर का शिकार करने का प्रयत्न कर रहा होगा, तब एक शेर की दहाड़ सुनकर तेरा घोड़ा बहक जायेगा और घोड़ा डर के मारे तूफानी गति से वहाँ से भाग खड़ा होगा। तुम्हारे दरबारी तुम्हारे घोड़े को भागता देख तुम्हारा पीछा करेंगे। तुम्हारे घोड़े की गति के नाते तुम तक वह नहीं पहुँच सकेंगे। वह तुमसे अलग होकर भटक जावेंगे। तुम्हारा घोड़ा भागता-भागता एक घने जंगल में तुम्हें ले जावेगा। उस जंगल में स्वर्ग की एक अप्सरा जिसको श्राप द्वारा पृथ्वी पर उतार दिया गया होगा तुमको एक घोड़े पर सवार मिलेगी। जब तुम्हारा घोड़ा वहाँ तक पहुँचेगा तो वह थकान के कारण वहीं खड़ा हो जावेगा। तब वह अप्सरा जो बहुत सुन्दर होगी तुमको अपने पास बुलायेगी। मैं तुमको समझाता हूँ कि तुम उसके पास मत जाना। परन्तु तुम अवश्य

जाओगे। जब तुम उस स्त्री के पास जाओगे तो वह तुमसे मदद करने की प्रार्थना करेगी और कहेगी मैं इस जंगल में अकेली हूँ, कृपया मुझे साथ ले चलो। मैं तुमको आगाह करता हूँ कि तुम भले ही उसके पास चले जाना लेकिन उसको अपने साथ मत लाना। परन्तु तुम अवश्य उसे अपने साथ लाओगे। वह इतनी खूबसूरत होगी कि जब तुम उसको अपने साथ लाओगे तो उस पर मोहित हो जाओगे। मैं तुमको सलाह देता हूँ कि यदि तुम उसको अपने साथ ले भी जाओ तो उस पर मोहित नहीं होना परन्तु तुम उस पर मोहित होगे और मोहित होकर उसे अपनी पटरानी बनाने का यत्न करोगे। मैं तुम्हें आगाह करता हूँ कि तुम भले ही उस पर मोहित हो जाओ लेकिन उसे अपनी पटरानी मत बनाना, लेकिन तुम उसे पटरानी बनाओगे और जब तुम उससे व्याह करके पटरानी बनाओगे तो तुमको महायज्ञ कराना पड़ेगा और यज्ञ को पूर्ण करने के लिए तुमको दस हजार ब्राह्मणों को भोजन कराना पड़ेगा। जब कोई राजा महायज्ञ करता है तो उसे स्वयं तथा उसकी पटरानी को ही भोजन परोसना पड़ता है। जब तक वह ब्राह्मण भोजन करते रहते हैं राजा या पटरानी जो वस्त्र पहन कर भोजन कराना शुरू करते हैं उसे बदल नहीं सकते। तुम्हारी पटरानी जो स्वर्ग की अप्सरा होगी, उसके स्वर्ग की रीति के अनुसार हर पाँच मिनट बाद अपने आप ही वस्त्र बदल जाया करेंगे। जब पण्डित लोग भोजन कर रहे होंगे तो तुम्हारी पटरानी के वस्त्रों को बदला हुआ देखकर संशय में पड़ जायेंगे कि यह वही औरत है या कोई दूसरी। तब पण्डित लोग जो खाना खा रहे होंगे, उनमें से एक पण्डित पटरानी के पाँव पर खीर का छींटा दे देगा। जब वह तीसरी बार भोजन परोसने को आयेंगे तो उसके कपड़े पुनः बदले हुए होंगे और पण्डित लोग उसके पाँव पर पड़े खीर की छींटे देखकर उसे पहचान लेंगे। उसी समय पण्डितों को क्रोध आ जायेगा कि उनका भोजन भ्रष्ट हो गया। वह भोजन को बीच में छोड़कर उठ जायेंगे और तुमको श्राप दे देंगे जिससे तुम कोढ़ी हो जाओगे। राजन यह कोढ़ ऐसा रोग है कि तुम जिस भी कुल में जन्म लोगे, कोढ़ी ही रहोगे और जब तक यह दुनिया रहेगी तुम्हारा हर जन्म कोढ़ी का होगा।

व्यास जी द्वारा ऐसी बात सुनकर राजा बहुत घबरा गया और इसके उपायों के लिए प्रार्थना करने लगा। तब व्यास जी बोले कि हे राजन! तू घबरा मत। इसी कलियुग में एक ऐसी बात होने वाली है जो आज तक जब से सृष्टि बनी है, कभी नहीं हुई। वह यह है कि इस संसार में आज तक वह पूर्ण ब्रह्म परमात्मा कभी नहीं आये हैं। परन्तु अब इसी कलियुग में वह स्वयं पूर्ण ब्रह्म परमात्मा के

Nijanand App

रूप में प्रकट होंगे। संसार के किसी भी देवी-देवता को न ध्यान कर केवल उत्तम पुरुष को ही लोग ध्यायेंगे। उनके पास ऐसा ज्ञान होगा जो आज तक नहीं कहा गया होगा। उस ज्ञान को सुनकर जो भी प्राणी उनकी पूजा करेगा, वह इस भव-जल से पार होकर अखण्ड में चला जावेगा। तुम भी उनके ज्ञान को सुन कर उनकी पूजा करना, तो तुम भी इस व्याधि से मुक्त होकर सदा अखण्ड में चले जाओगे। तब राजा ने व्यास जी से पूछा कि क्या आज तक आप सहित इतने बड़े-बड़े ऋषि हुए हैं, उनमें से कोई भी ब्रह्मर्षि नहीं हुआ तब व्यास जी ने कहा कि ब्रह्म मुनि/ब्रह्मर्षि आज तक इस संसार में कभी नहीं हुए, सो अब वह आयेंगे। श्री प्राणनाथ जी ने व्यास जी द्वारा लिखित हरवंश पुराण का यह उद्धरण देकर सब सन्तों से कहा कि जिनके विषय में व्यास जी ने कहा कि ब्रह्म मुनि आयेंगे। वह मैं हूँ। यह मेरा परिचय है कि मैं कौन हूँ। इसके अतिरिक्त मेरा परिचय कि मैं कौन हूँ भविष्य दीपिका में गुरु वशिष्ठ जी भगवान राम को कहते हैं कि

दश-सहस्त्र वर्षाणि पंच सूर्येन्दु पर्वणि।
कलिक्षयः भविष्यति सप्त-तारैक स्वगृही।।
शालिवाहन शाकात् तु गतम् षोडशकम् शतम्।
जीवोद्धाराय ब्रह्माण्डे कल्किः प्रादुर्भविष्यति।। (अ. 603)

अर्थात् कलियुग की आयु जब सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण लगने से क्रमशः क्षीण हो जायेगी और शालिवाहन राजा के सोलह सौ साल व्यतीत हो जायेंगे तो जगत के उद्धार के लिए बुद्ध कल्कि अवतार का प्रादुर्भाव होगा। इस प्रकार सब सन्तों को सम्बोधित करते हुए श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि आप गिन लो इस समय शालिवाहन राजा को सोलह सौ साल व्यतीत हो चुके हैं। भविष्य दीपिका में गुरु वशिष्ठ जी ने जिस कल्कि अवतार के बारे में भगवान राम से कहा था, वह मैं ही हूँ। इस प्रकार सर्वप्रथम सन्तों द्वारा पूछे गये प्रश्न कि आप कौन हैं का विस्तार-पूर्वक परिचय देते हुए स्वयं को बुद्ध कल्कि ब्रह्ममुनि जाहिर किया और उन लोगों द्वारा पूछे गये उन प्रश्नों को क्रमानुसार इस प्रकार खोल कर बताया—

सतगुरु ब्रह्मानन्द है, सूत्र है अक्षर रूप।
सिखा सदा तिन थे परे, चेतन चिद जो अनूप।।

सबसे पहले श्री प्राणनाथ जी ने सतगुरु के विषय में बताते हुए कहा कि हमारे जो सतगुरु हैं वह ब्रह्मानन्द हैं, जो पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द के आनन्द स्वरूप परमधाम श्री श्यामा जी (श्री सुन्दरबाई) के रूप में श्री राज जी के साथ रहते हैं।

श्री श्यामा जी (सुन्दरबाई) तथा उनके अंग बारह हजार ब्रह्म-सृष्टियों ने जब इस संसार (नश्वर जगत) के खेल को देखने की इच्छा व्यक्त की तब परमधाम से श्री राज जी पूर्ण ब्रह्म ने अपने आनन्द अंग श्यामा जी को जिनका वहाँ पर उपनाम श्री सुन्दरबाई है, यहाँ भेजा। वही श्री धनी देवचन्द्र जी हमारे सतगुरु ब्रह्मानन्द हैं। इस बात का उदाहरण मैं आपकी व्यास जी द्वारा लिखित स्कन्द पुराण के इस श्लोक से देता हूँ :

ब्रह्मानन्दं-परमसुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिं,
द्वन्दातीतं गगन सदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यम्।
एक नित्यं विमलमचल सर्वदा साक्षिरूपम्।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सतगुरुं तन्नमामि।। (स्कन्ध पुराण-गुरु गीता)

सतगुरु के लक्षण बताते हुए व्यास जी कहते हैं कि जो सतगुरु होंगे, वह साक्षात् ब्रह्म स्वरूप होंगे। ब्रह्म स्वयं आनन्द के स्वरूप होंगे सबको आनन्द देने वाले होंगे तथा अखण्ड सुख के दाता होंगे। साथ ही वह ब्रह्मज्ञान के स्वरूप, सारे संसार के झगड़ों को मिटाने वाले तथा वह स्वयं भी निर्मल आत्मा का रूप होंगे तथा त्रिगुण से परे का ज्ञान देकर सारे संसार को निर्मल करके सबको अचल सुख देंगे। उनके अन्दर कोई द्वेष-भाव नहीं होगा। ऐसे जो सतगुरु ब्रह्मानन्द आयेंगे मैं उनको नमन होता हूँ। इस प्रकार व्यास जी ने जिन सतगुरु ब्रह्मानन्द की महिमा का वर्णन किया है वही हमारे सतगुरु श्री धनी देवचन्द्र जी हुए हैं जिनको हम सतगुरु ब्रह्मानन्द मानते हैं।

हमारी शिखा अक्षर ब्रह्म से परे जो अक्षरातीत सच्चिदानन्द पूर्ण ब्रह्म श्री राज जी हैं, वही हैं। हम लोग परमधाम के रहने वाले हैं और वहाँ के सच्चिदानन्द श्री राज जी ही हमारे धनी हैं। हम लोग उस पार ब्रह्म के ज्ञान को ही धारण करते हैं। इसका प्रमाण शास्त्रों में इस प्रकार है—

शिखा ज्ञानमयी यस्य उपवीतं च तन्मयम्।
ब्राह्मण्य सकलं तस्य इति ब्रह्म विदो विदुः।।
चिदैव पंचभूतानि चिदेव भुवनत्रयम्।। (ब्रह्मोपनिषद)

हमारा सूत्र इस ब्रह्मज्ञान को प्राप्त करके उस पर चलना है। वैसे अक्षर का रूप अथवा इस संसार के सारे धर्म-ग्रन्थों के ज्ञान को जानना ही हमारा सूत्र धारण करना है। हम लोग आप लोगों की तरह जनेऊ रूपी धागे को धारण करना ही सूत्र नहीं मानते हैं।

Nijanand App

संसार के ज्ञान की उत्पत्ति अक्षर ब्रह्म के अव्याकृत् स्थान से हुई है। सब का मूल अक्षर रूप जो इस संसार के सारे ज्ञान का दाता है, और उसके परे अक्षरातीत जो ब्रह्मज्ञान के देने वाले हैं, यही जानकारी ही हमारा सूत्र धारण करना है। इसका प्रमाण मैं आपको ब्रह्मोपनिषद के इस श्लोक से देता हूँ :

यदक्षरं परं ब्रह्म तत्सूत्रमिति धारयत्।
सूचनात्सूत्रमित्याहुः सूत्रं नाम परं पदम्॥
तत्सूत्रं विदितं येन स विप्रो वेदपारगः॥ (ब्रह्मोपनिषद)

अक्षर से परे जो ब्रह्म है वह सूत्र है। अतीत अनागत सब के सूत्र का बोधक होने से उसे सूत्र कहा जाता है। यह सूत्र ही परमपद है। इस सूत्र को जो जानता है वह वेद पारदर्शी ब्राह्मण है। सूत्र तथा शिखा के प्रमाण में मैं आपको परमहंसोपनिषद के इस श्लोक से देता हूँ :

आनन्द विज्ञान घन एवास्मि।
तदैव मम् परमधाम, तदैव शिखा तदेवोपवीतञ्च॥ (परमहंसोपनिषद)

परमहंस और पारब्रह्म परमात्मा एक ही स्वरूप हैं। पारब्रह्म परमात्मा कहते हैं कि मैं आनन्दघन तथा विज्ञानघन भी हूँ। मेरा धाम भी घनस्वरूप है शिखा एवं उपवीत भी आनन्दघन स्वरूप ही हैं। इस प्रकार श्री प्राणनाथ जी ने सभी सन्तों से सूत्र और शिखा बताते हुए कहा कि आप लोगों को इस विषय में कोई संशय हो, तो प्रश्न कर सकते हो। सभी ने इस बात को स्वीकार किया कि ग्रन्थों के उद्धरण देकर जो उन्हें बताया है सो वह सत्य है और उसमें किसी प्रकार की कोई शंका नहीं है। प्राणनाथ ने आगे के प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार दिया :

सेवन है पुरुषोत्तम, गोत्र चिदानन्द जान।
परम किशोरी इष्ट है, पतिव्रता साधन मान॥

श्री प्राणनाथ जी ने सब सन्तों तथा आचार्यों से कहा कि जो हमारे सेवन के बारे में पूछा कि हम पूजते किसको हैं, तो हम लोग उस उत्तम पुरुष की पूजा करते हैं। यह पुरुष क्षर के ब्रह्माण्ड से तथा अक्षर से भी परे है। इसे सच्चिदानन्द पूर्ण ब्रह्म भी कहते हैं। वही सब का परमात्मा है। इसके सिवा और कोई भी परमात्मा नहीं है। इसका प्रमाण मैं आप को श्रीमद्भगवतगीता के श्लोकों से देता हूँ। श्रीकृष्ण जी अर्जुन को कहते हैं :

द्वाविमौ पुरुषौ लोके, क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि, कूटस्थोऽक्षर उच्यते॥
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः॥ (गीता 15-16-17)

श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि हे अर्जुन! इस नश्वर जगत के चलाने वाले क्षर पुरुष हैं और इस तरह के अनेकों ब्रह्माण्डों को जो क्षर पुरुष चलाते हैं उनसे परे कूटस्थ है जो अक्षर पुरुष है। वह सदा बना रहता है। वह हमारे ब्रह्माण्ड जैसे क्षर पुरुषों को बनाता और मिटाता है। जो उत्तम पुरुष है वह दोनों से भिन्न रहता है। केवल उसी को ही परमात्मा कहलाने का अधिकार है। इस श्लोक से आप लोगों ने जाना कि केवल उत्तम पुरुष ही परमात्मा है और इसी का सेवन अर्थात् पूजा हम लोग करते हैं।

अब मैं आप को अपना गोत्र बताता हूँ। ध्यान देकर सुनो और विचार करके ग्रहण करते जाओ। यदि फिर भी कोई संशय रह जाये तो मैं आपको उस संशय का पूरी तरह निवारण करूँगा। हमारा गोत्र चिदानन्द है अर्थात् हम लोग परमधाम में चेतन स्वरूप श्री श्यामा जी आनन्द का स्वरूप हैं और जो इस नश्वर जगत के अन्दर श्री देवचन्द्र जी के रूप में प्रकट हुई है, यही चिदानन्द स्वरूप श्री देवचन्द्र जी से हमारी उत्पत्ति हुई है और हम लोग इनके द्वारा जो ब्रह्मज्ञान हमें मिला है उसको धारण करने से हम स्वयं ब्रह्म मुनि कहलाते हैं। यही आनन्द स्वरूप श्री श्यामा जी श्री राज जी की जोश की शक्ति श्रीकृष्ण के साथ वृन्दावन में खेले हैं। यह अनादि स्वरूप श्रीकृष्ण इस ब्रह्माण्ड में श्री श्यामा जी के स्वरूप श्री देवचन्द्र जी के अन्दर विराजमान हैं। हमारा गोत्र श्री देवचन्द्र की आत्मिक शक्ति जो चेतन रूप में परमधाम में आनन्द स्वरूप कहलाती है इन्हीं को चिदानन्द कहा है। यही हमारा गोत्र है। इसका प्रमाण मैं आप को वराह संहिता के इस श्लोक से देता हूँ

अनादिमादि चिद्रूपं चिदानन्दं परं विभुम्।
वृन्दावनेश्वर ध्यायेत त्रिगुणस्यैक-कारणम्॥ (वराह संहिता)

परमधाम में निवास करने वाले सच्चिदानन्द श्री राज जी जब इस संसार में अपनी जोश की शक्ति और अक्षर आतम के स्वरूप में श्रीकृष्ण बनकर बृज में उतरे तो इस नश्वर जगत के खेल देखने की उनकी आनन्द अंग श्यामा जी भी श्री राधा के तन पर अवतरित हुईं। श्रीकृष्ण के अन्दर विराजमान शक्ति श्री राज जी कहते हैं कि हे श्री श्यामा जी ! आपने जो इस नश्वर जगत में अवतरित होकर खेल देखा है या आगे देखेंगी, वह चाहे राधा का तन हो, तो भी मेरा ही स्वरूप है। चाहे श्री देवचन्द्र का तन हो वह भी मेरा ही स्वरूप है। मुझे इस नश्वर जगत या उसके नाम से कोई अभिप्राय नहीं। उस शरीर में बैठी तुम्हारी आतम ही सबका इष्ट होगा। इसलिए श्री श्यामा जी जो परमधाम के अन्दर किशोर स्वरूपा

Nijanand App

है वही हमारी इष्ट है। इसका प्रमाण मैं आपको पुराण संहिता के इस श्लोक से देता हूँ :

सिद्धरूपाऽसि चाराध्या राधिका जीवनं मम।
यः स्मृत्वा भावयन्ति त्वां तैरहं भावितः सदा।।
तत्र मे वास्तवं रूपं यत्र यत्र भवादृशी।
ममेष्टं च ममात्मा त्वं राधैव राध्यते मया।। (पुराण संहिता)

इस श्लोक से मैंने आपको बताया कि श्री श्यामा जी आतम ही हमारा इष्ट है। यह सबसे पहले राधा के तन में प्रकट हुई और इस ब्रह्माण्ड में श्री धनी देवचन्द्र के तन में प्रकट हुई तथा नश्वर शरीर को छोड़ने के बाद श्यामा जी आतम की शक्ति तथा अन्य परमधाम की चार और शक्तियाँ, पाँचों शक्तियाँ मुझमें विराजमान हुई जिसे बुद्ध कल्कि अवतार लिखा है। इस तरह से आप सन्तों ने साक्षी द्वारा जाना कि हम इष्ट किसे मानते हैं।

हमारा साधन पतिव्रता का है। जिस प्रकार एक पतिव्रता स्त्री अपने पति की शरीर तथा आत्मा से सेवा करती हुई सिवा अपने पति के किसी और पुरुष को देखना भी पाप समझती है और किसी अन्य पुरुष के साथ रहने पर कुलटा कहलाती है, उसी प्रकार हम सिवाय अपने धाम धनी जो हमारी आत्मा के पति हैं, को सब कुछ मानकर उनकी सेवा करते हैं। यही हमारी साधना है अर्थात् यही हमारी भक्ति पूजा है। हम धाम-धनी तथा श्यामा महारानी के सिवाय किसी भी अन्य देवी या देवता को नहीं पूजते या ध्यान करते और धाम धनी की पतिव्रता नारी के समान सेवा व पूजा करते हैं। इसकी साक्षी मैं आप को गीता के इस श्लोक से देता हूँ :

नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया।
भक्त्या त्वनन्या शक्य अहंमेवंविधोऽर्जुन।। (श्री गीता)
श्री जुगल किशोर का जाप है, मन्त्र तारतम् सोए।
ब्रह्म विद्या देवी सही, पुरी नवतन मम जोए।।

हमारा जाप कौन सा है ? मन्त्र क्या है? हमारी देवी कौन सी है? इनके विषय में साक्ष्य के साथ श्रवण करो। जुगल किशोर को जाप है—इस संसार के अन्दर जब श्री राज जी अक्षरातीत, पूर्ण ब्रह्म ने अपनी अंगनाओं को नश्वर जगत का झूठा खेल दिखाने के लिए बृज के अन्दर उतारा तो आप श्यामा जी की आत्मा श्री राधा के तन पर उतरीं और श्री राज जी ने अपने जोश की शक्ति को श्रीकृष्ण के तन पर उतारा और ग्यारह साल बावन दिन का खेल लीला करने

के बाद आत्माएँ तथा श्री राज जी इस माया के ब्रह्माण्ड से योग माया के अन्दर चली गयीं। वहाँ पर सखियों ने बेहद भूमि को देखा तथा वहाँ से रास लीला करने के बाद वापस परमधाम में चली गयीं। इस नश्वर जगत के अन्दर श्रीकृष्ण ने बाल लीला की तथा योगमाया में श्रीकृष्ण के साथ सखियों ने किशोर लीला की। इसी प्रकार श्रीकृष्ण तथा राधा ने जो किशोर लीला की और राधा और कृष्ण युगल कहलाये। उनके अन्दर जो परमधाम की शक्ति बैठी थी वह वापस परमधाम चली गई। वही शक्ति परमधाम में श्री राज जी तथा श्री श्यामा जी युगल स्वरूप मूल-मिलावे में सिंहासन पर बैठे हैं। वह परमधाम के अन्दर सदा किशोर अवस्था में रहते हैं। इन्हीं श्री राज व श्यामा जी युगल स्वरूप का हम जाप करते हैं। वैसे तो श्री राज जी परमधाम के अन्दर तरह-तरह की लीलाएँ करते रहते हैं, परन्तु जब माया का खेल सखियों को दिखाने लगे तब आप श्री श्यामा जी सहित मूल-मिलावे में सिंहासन पर विराजमान हुए और चारों तरफ बारह हजार सखियों को बिठाया। सुरता व शक्ति द्वारा संसार का खेल दिखा रहे हैं। पहला खेल बृज का था। वहाँ भी श्रीकृष्ण के साथ राधा कभी सिंहासन पर नहीं बैठीं। इस बृज के खेल को अव्याकृत में अखण्ड किया। वहाँ पर श्रीकृष्ण सब सखियों के साथ खेल करते रहते हैं और वहाँ पर राधा अलग रहती हैं। जब रास का खेल दिखाया तो उसमें श्रीकृष्ण, राधा तथा सखियाँ मिल कर रास कर रहे हैं। वहाँ पर भी राधा कृष्ण कभी सिंहासन पर नहीं बैठे। इस संसार को समझने के लिए कि जो शक्ति राधा और कृष्ण में उतरी, वह युगल स्वरूप होकर श्री राज जी तथा श्यामा जी मूल-मिलावे में सिंहासन पर बैठकर इस नश्वर जगत में माया का खेल देख रहे हैं। उसी परमधाम के युगल स्वरूप का हम जाप करते हैं जिसकी साक्षी आप इस श्लोक से जान सकते हैं :

राधया सहश्रीकृष्णं युगलं सिंहासने स्थितम्।
पूर्वोक्तं रूप लावण्यं दिव्यभूषा शृगम्बरम्।। (वराह संहिता)

मन्त्र के प्रति बताते हुए श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि सन्त जनो ! इस संसार के अन्दर जितने भी मन्त्र हैं, वह इस क्षर के ब्रह्माण्ड में जो देवी-देवताओं की शक्तियाँ हैं, उन्हीं का आभास तथा प्राप्ति कराते हैं। इस नश्वर जगत से परे का ज्ञान किसी भी मन्त्र से प्राप्य नहीं है। वास्तव में मन्त्र वह होना चाहिए जो आवागमन से मुक्त कर अखण्डता प्रदान करते हुए उस सच्चिदानन्द पूर्ण ब्रह्म का बोध करावे। हमारा मन्त्र तारतम है जो तम रूपी क्षर के अन्धकार को मिटा कर आगे अखण्ड के तार अथवा सुरता को जोड़ता है और हमारे इस तारतम

Nijanand App

मन्त्र द्वारा ही उस सच्चिदानन्द पारब्रह्म की पहचान होती है। साक्षी के रूप में तारतम मन्त्र की जो शक्ति भागवत् में लिखी है, वह श्लोक सुनो :

स्वकृत विचित्रयोनिषु, विशत्रिव हेतुतया।
तारतमंश्चकारस्यनलवत् स्वकृतानुकृतिः ॥ (भागवत 10/84/19)

वेद कहते हैं कि जब तक तारतम मन्त्र संसार में नहीं आ जाता तब तक कोई भी उस सच्चिदानन्द का भेद नहीं पा सकता है। हमारा तारतम मन्त्र ज्ञान की एक कुन्जी के समान है जिसके जान लेने के बाद संसार के सभी ज्ञानों का भेद खोला जा सकता है। इस मन्त्र के प्राप्त हो जाने के बाद प्राणी इस नश्वर जगत के आवागमन से मुक्त होकर सदा अखण्ड बहिश्तों को प्राप्त होता है। वेदों की जो बारह श्रुतियाँ हैं उनमें बारहवीं श्रुति में हमारे तारतम मन्त्र के प्रति यह बात लिखी है :

"तारतम्येन जानाति सच्चिदानन्द लक्षणम्॥" (श्रुति 12-4)

जब तक इस ब्रह्माण्ड में तारतम मन्त्र नहीं आ जाता तब तक कोई भी उस सच्चिदानन्द के प्रति कि वह कौन है? कहाँ रहता है? आदि नहीं जान सकता। अब तारतम मन्त्र आ गया है। सब बातें पारब्रह्म सच्चिदानन्द की आपके सामने जाहिर कर रहे हैं।

अथवितथा स्वमूश्ववितथं तव धाम स मम्।
विरजधियोऽन्वयन्त्याभिविपरायव एकरसम्॥ (भागवत 10-82-19)

इसके बाद आपने पूछा कि हमारी देवी कौन सी है जो इस संसारी दुःखों को दूर करेगी। इस संसार में चार प्रकार के रास्ते बताये गये हैं जिनके द्वारा संसार के सुख, मोक्ष आदि प्राप्त हो सकते हैं। यह हैं कर्म, उपासना, ज्ञान और विज्ञान। इनमें से प्रथम तीन रास्ते इस नश्वर जगत के हैं। सर्वप्रथम संसार में सुखों की प्राप्ति के लिए विधिवत किसी देवी की आराधना करके उसे प्रसन्न किया जाये तो वह संसारी दुःखों का निवारण करती है। संसार के दुःखों को दूर करने का कार्य भगवान विष्णु ने लक्ष्मी जी को सौंप रखा है। जो सभी धर्मावलम्बियों ने श्री लक्ष्मी जी जिन्होंने नौ अवतार देवी के रूप में लिये हैं, उसी का सहारा लेकर अपने संसारी दुःखों को दूर करते हैं। संसार का हर प्राणी सर्वप्रथम किसी गुरू से दीक्षा लेकर ज्ञान प्राप्त करता है और फिर उस ज्ञान वाले की विधिवत उपासना करके मोक्ष पाने का यत्न करता है। हम ब्रह्ममुनि परमधाम की ब्रह्म-सृष्टियाँ हैं और हमारा सम्बन्ध इस संसार से नहीं है। अतः हमारी साधना भक्ति भी इस संसार में चल रही नौ प्रकार की भक्तियों से अलग है। इसे दसवीं-भक्ति कहा है। पतिव्रता

साधन होने के कारण इस संसार के किसी भी देवी-देवता की न तो आराधना करते हैं और न ही संसारी सुखों की प्राप्ति के लिए हमारी कोई संसारी देवी है। व्यास जी ने हरिवंश पुराण के भविष्य पर्व में राजा जन्मेजय को बताया कि वह ब्रह्ममुनि इस संसार में आकर किसी अन्य देवी-देव को न पूज कर के प्रधान पुरुष के आसरे रहेंगे। इसलिए इस संसार में जो ब्रह्ममुनियों पर संसारी दुःख आयेंगे, वह अपने दुःखों का निवारण जो परमधाम के पारब्रह्म की ज्ञान रूपी ब्रह्म विद्या उतरी है, उसी का जाप/ध्यान करके अपने दुःखों को दूर करेंगे। संसारी दुःखों को दूर करने वाली हमारी ब्रह्म विद्या ही हमारी देवी का रूप होगी। इस कारण हमारी देवी ब्रह्म विद्या है जो नवतनपुरी (जामनगर) से उतरना शुरू हुई।

हमारी शाखा कौन सी है और शाला कहाँ है तथा क्षेत्र कौन सा है इसके बारे में सुनो:

अठोतर सौ पख शाखा कही, साला है गौलोक।
सतगुरु चरण को क्षेत्र है, जाए जहाँ सब सोक॥

आप लोग वर्षों से इस संसार में एक सौ आठ मनके की माला का जाप करते चले आ रहे हैं परन्तु यह मनके एक सौ आठ ही क्यों हैं, इसका भेद नहीं जानते हो। मैं आपको बताता हूँ। इस संसार में नौ प्रकार की भक्तियाँ जिसे नवधा भक्ति कहते हैं, कही हैं। नौ प्रकार में हर एक भक्ति को तीन प्रकार से लोग मानते हैं—पुष्टि से, मर्यादा से, प्रवाह से। इसी प्रकार इन तीनों के आगे तीन तरीके हैं जैसे पुष्टि से धर्म धारण करना, उसके ज्ञान को सुनना तथा उस पर अमल करना। साधारण शब्दों में इसका अर्थ है विश्वासपूर्वक धर्म को ग्रहण करना, विश्वासपूर्वक ज्ञान को सुनना तथा विश्वासपूर्वक उस पर चलना। इसी तरह मर्यादा में ग्रहण करना, सुनना और चलना। तीन ही तरह के प्रवाह हैं। इस प्रकार एक के नौ-नौ तरीके हैं और नौ प्रकार की भक्ति विधि हैं। नौ के नौ तरीके होने के कारण कुल इक्यासी हुए। इस संसार में कुल इक्यासी पक्ष कहे गये हैं। बयासीवाँ पक्ष इस संसार में जब पूर्ण ब्रह्म की जोश की शक्ति ने श्रीकृष्ण के रूप में बाल-लीला की तथा अखण्ड वृन्दावन में रास लीला की जिसका विस्तार श्रीमद्भागवत से व्यास जी द्वारा लिखा गया। भागवत के श्रीकृष्ण को वल्लभाचार्य मार्ग वाले मानते हैं। इस वल्लभाचार्य मार्ग की पहुँच अखण्ड गोलोक तक होने के कारण इसका बयासीवाँ पक्ष कहलाया। इस संसार में अव्याकृत से श्री कबीर जी हुए जो वहाँ की अखण्ड पाँच वासनाओं में से एक हैं और उन्होंने अपनी

Nijanand App

बानी में अक्षर ब्रह्म के अखण्ड स्थान का वर्णन किया। इस कारण कबीर पंथ वालों का तिरासीवाँ पक्ष है। पच्चीस पक्ष आगे परमधाम के मुख्य स्थान हैं :

धाम तालाब कुंज बन सो है। मानक नहरें वन की जो हैं।
पश्चिम चौगान बड़ो बन कहिए। एम पुखराज जमुनाजी लहिये।
आठों सागर आठ जिमी के। यह पच्चीस पक्ष हैं धामधनी के॥

इस प्रकार यह जो एक सौ आठ पक्ष हैं यही हमारी शाखा है जो इस नश्वर जगत से परमधाम तक कही गयी है।

अक्षर ब्रह्म के सबलिक ब्रह्म में अखण्ड गोलोक ही हमारी शाला है। श्री धनी देवचन्द्र जी के चरण कमल ही हमारे क्षेत्र का ठिकाना है। और

सुख विलास माहे नित वृन्दावन, रिषी महा विसनु है जोए।
वेद हमारो स्वसं है, तीरथ जमुना सोए॥
सास्त्र श्रवण श्री भागवत, बुद्धि जागृत को ज्ञान।
कुल मूल हमारो आनन्द है, फल नित्य विहार प्रमान॥
दिव्य ब्रह्मपुर धाम है, घर अक्षरातीत निवास।
निजानन्द है सम्प्रदा, ए उत्तर प्रश्न प्रकास॥
धनी श्री देव चन्द्र जी निजानन्द, तिन प्रगट करी सम्प्रदा येह।
तिन थें हम एह लखी है, द्वार पावें हम तेह॥

हमारे सुख-विलास का ठिकाना बेहद भूमि में केवल ब्रह्म के अन्दर स्थित नित्य वृन्दावन है। हमारे ऋषि महा विष्णु हैं जो अव्याकृत ब्रह्म में नित्य वैकुण्ठ में रहते हैं। इन्हें आदिनारायण भी कहा गया है। हमारा वेद वह स्वसम् है जो सच्चिदानन्द पूर्ण-ब्रह्म ने स्वयं कहा है और जिसमें सारा ब्रह्म ज्ञान लिखा है। हमारा तीर्थ परमधाम के अन्दर जो जमुना जी बहती हैं, है। श्रीमद्भागवत के दसवें स्कन्ध में श्रीकृष्ण की प्रेम लीला का जो वर्णन है, वही हमारे श्रवण करने का शास्त्र है। कुल मूल हमारे आनन्द स्वरूप श्री श्यामा जी हैं। इनके साथ परमधाम में हम नित्य विहार करते हैं, यही फल है। हमारा धाम दिव्य ब्रह्मपुर अर्थात् परमधाम है, जहाँ पर अक्षरातीत श्री राज जी महाराज निवास करते हैं। हमारी सम्प्रदाय का नाम निजानन्द है। श्री देव चन्द्र जी परमधाम की आनन्द स्वरूपा श्री श्यामा जी का अवतार हैं और उन्होंने ही यह सम्प्रदाय चलाया है। श्री देव चन्द्र जी से ही हमें सारा ज्ञान प्राप्त हुआ है। यही हमारी पद्धति है। हमारी इस सम्प्रदाय को जो ग्रहण करता है उसको संसार के आवागमन से मुक्ति प्राप्त होती है और वह सदा के लिए अखण्ड में चला जाता है और किसी भी सम्प्रदाय के ज्ञान को लेकर

अखण्ड की प्राप्ति नहीं कर सकता है। शास्त्रों में लिखे के अनुसार मैंने आप सबको अपनी पहचान बताई है कि जिस बुद्ध निष्कलंक अवतार होने के विषय में सब ग्रन्थों में लिखा था वह मैंने आपको आपके सामने खोलकर बताये हैं और सब प्रमाणों के साथ अपनी पहचान बताई है। आप लोग इसे स्वीकार करो।

श्री प्राणनाथ जी की बातें सुनकर सभी सन्तों तथा आचार्यों ने उत्तर दिया कि शास्त्रों में लिखी बातों को हम भी जानते हैं। तीन बड़े निशान बुद्ध कल्कि के अवतार के समय के बताये गये हैं जिनमें से दो तो पूर्ण हुए। एक तो शालिवाहन राजा के सोलह सौ साल पूरे हुए हैं दूसरा लिखा था कि जब बुद्ध कल्कि जाहिर होंगे उस साल के ग्यारह माह होंगे, यह भी सही हुआ। तीसरा निशान यह लिखा है कि जब बुद्ध कल्कि अपने को जाहिर करेंगे उस रात्रि को एक नया सितारा उदय होगा। उस तारे की एक दुम भी दिखाई देगी जिसको देखकर कहा जा सकेगा कि यह ध्रुव तारा उदय हुआ। आपने अपने को बुद्ध कल्कि विजयाभिनन्द स्वीकार करके शास्त्रों में उल्लेखों के अनुसार आज से शालिवाहन का शक सम्वत् बन्द करके आपको विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार स्वीकार करते हुए आपका शाका स्वीकार करेंगे। उस रात्रि को ध्रुव तारा उदय हुआ तो सभी धर्मावलम्बियों के आचार्यों, सन्तों ने आपको बुद्ध निष्कलंक कल्कि अवतार स्वीकार कर आपकी ध्वजा हरिद्वार में फहराई तथा आपको इन शब्दों में सम्मानित किया। आनन्द सागर में लिखा है :

निष्कलंका च या बुद्धिः पूर्णानन्दात्मिका परा।
तया बुद्धया वर्तमानो निष्कलंकः सुबुद्धकः॥ (सप्तम तरंग 53)
ईदृशं विजयं यश्च स्वाभिनन्दति सर्वदा।
तैना सौ सद्भिराख्यातो विजयाद्यभिनन्दनः॥ (सप्तम तरंग 55)

अर्थात् जिसमें मायाजन्य तनिक भी कलंक नहीं, ऐसी परा बुद्धि होने के कारण श्री प्राणनाथ जी को ही निष्कलंक कहा गया है और आप तारतम ज्ञान रूपी खड्ग से (तलवार से) अज्ञान अथवा मोह रूपी कलि का नाश करने वाले तथा विभिन्न गुणों से विभूषित हैं, इसलिए आपको विजयाभिनन्द मानते हैं। इस प्रकार श्री प्राणनाथ जी को विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार का जाहिर होना और आपका शाका शुरू होने का प्रमाण शास्त्रों में मिलता है। आपका यह शाका हिन्दुओं में वैशाख वदी एकादशी सम्वत् 1735 से शुरू हुआ। प्रमाण का श्लोक, इस प्रकार है :

Nijanand App

युधिष्ठिरो विक्रमश्च तथा वै शालिवाहनः।
विजयाभिनन्दनश्चैव तथा नागार्जुन नृपः।।
तथा कल्किश्च भगवानेते वै शकवन्धिनः।
करिष्यन्ति कलौ भूयो धर्मस्थापनमेव च।।

(गर्ग संहिता अश्वमेध ख. अ. 61 श्लोक 21-22)

इस प्रकार श्री प्राणनाथ को हिन्दुओं के शास्त्रानुसार विजयाभिनन्दन बुद्ध निष्कलंकावतार सिद्ध करके वापस दिल्ली होते हुए रास्ते में कई स्थानों पर दूसरी सरदार सखी जो परमधाम में शाकुण्डल सखी कहलाती थी, को जगाने के लिए चले।

इससे पहले एक सरदार सखी जो परमधाम की शाकुमार की वासना थी जिनको औरंगजेब के तन में होना पहचान कर कुराने-पाक से अपने को इमाम-मेंहदी जाहिर करके सन्देश भिजवाये थे, शरीअत का जोर होने से उन तक सन्देशा न पहुँच सका था। मोमिन जो जाग्रत होकर जमात के साथ कई स्थानों से होकर पन्ना, जो इस समय मध्य प्रदेश में है, पहुँचे। वहाँ पता चला कि सखी शाकुण्डल बुन्देले छत्रसाल के तन उतरी है। उसे जगाने के लिए माहू जो छतरपुर के पास था, पधारे। वहाँ पर आप बुन्देले छत्रसाल से मिले और उनमें बैठी शाकुण्डल की आत्मा को पहचान कर परमधाम की सारी बातें बताते हुए जाग्रत किया। उनकी असल राजधानी पन्ना जो उस समय पद्मावती पुरी कहलाती थी, वहाँ आ गये। यह वही स्थान था जिसके विषय में भगवान शिव ने उमा को बताया था और शिव पुराण में इसका विस्तार मिलता है। भगवान शिव उमा के साथ एक समय घूमने को निकले थे। आकाश में विचरण करते हुए वह विन्ध्याचल पर्वतों के ऊपर से निकल रहे थे कि अचानक अपनी सवारी को नीचे पृथ्वी पर उतार दिया तथा वन के अन्दर पहुँच कर एक स्थान को दण्डवत् प्रणाम करके उस स्थान की परिक्रमा करने लगे। उनके साथ उमा भी थीं। जब उमा ने भगवान शिव को एक खाली स्थान जहाँ कुछ भी नहीं था, का दण्डवत् प्रणाम करके परिक्रमा देते देखा तो अचम्भे में पड़ गयीं। जब भगवान शिव परिक्रमा कर चुके, तो उमा ने भगवान शिव से पूछा कि हे नाथ! इस जगह पर तो कुछ भी नहीं है और आपने इस स्थान पर दण्डवत् प्रणाम भी किया है तथा परिक्रमा भी दी है। मुझे हैरानी हो रही है कृपा करके इसका क्या भेद है, सो बताइए। भगवान शिव बोले कि हे उमा! जिनके ज्ञान के विषय में तू जानना चाहती थी वह इस संसार में इन्द्रावती सखी की आतम परमधाम से इस नश्वर जगत में ब्रह्ममुनि के रूप में आयेगी

और कई स्थानों से भ्रमण करते-करते इस स्थान पर पहुँचेंगे और इस स्थान पर वह अपना झण्डा लगायेंगे। यह बात परब्रह्म ने अपने ही मन में धारण कर हम त्रिदेवों को स्मरण करा दी है। इसलिए हे उमा! यह वही स्थान है जहाँ पर मैंने दण्डवत् प्रणाम करके परिक्रमा की है। इस स्थान का महत्व आगे चलकर सारे विश्व को कल्याण करने का कारण बनेगा। उमा भगवान शिव की बातों को सुनकर स्वयं भी वहाँ नमन हुईं और फिर आकाश की ओर प्रस्थान किया।

पदमावती केन शरदे, विन्ध्यपृष्ठ विराजिते।
इन्द्रावती नाम सा देवी भविष्यति कलौयुगे।। (पुराण संहिता)

शिव पुराण में लिखे के अनुसार श्री प्राणनाथ जी जब पदमावती पुरी (पन्ना) पधारे तो अपनी जमात के साथ इसी स्थान पर अपना डेरा डाला और श्री छत्रसाल जो परमधाम की शाकुण्डल की आतम थी, को जगाया। वह श्री प्राणनाथ जी तथा उनकी पत्नी तेज कुँवरि को साक्षात् परमधाम के युगल-स्वरूप समझ कर दोनों को पालकी में बिठाकर चोपड़ा ले गये जहाँ उनका उस समय महल बना हुआ था। उस पालकी को श्री छत्रसाल जी ने अपने कन्धों पर उठाया था। श्री प्राणानाथ जी व तेज कुँवरि जो कि पालकी में बिठाकर ले चलते समय पाँच हजार स्त्री-पुरुषों की जमात थी, महल में पहुँच कर पावड़े बिछा कर अन्दर ले गये और एक सिंहासन पर बिठाया तथा श्री प्राणनाथ जी व तेज कुँवरि जी दोनों की साक्षात् धाम धनी परमधाम के समझ कर आरती उतारी और विधिवत् पूजा कर अपना सर्वस्व आप के चरणों में सौंप दिया। परमधाम की सरदार सखी होने के कारण श्री प्राणनाथ जी ने जो मोमिनों की जमात व जो ब्रह्म-सृष्टियाँ अभी जागने को बाकी रह गयी थीं, सबका सरदार बनाते हुए श्री छत्रसाल को बाकी कार्य सौंपा। सब सुन्दर साथ जो इस संसार में खेल देखने को आये हैं, के लिए यह आदेश हो गया कि मेरे बाद आप सब लोग श्री छत्रसाल को ही सब कुछ समझना तथा आत्मिक दृष्टि से मैं सब के अन्दर विराजमान रहूँगा। इस प्रकार पदमावती पुरी (पन्ना) में उसी स्थान पर अपना झण्डा लगाया जिसे शास्त्रों में पहले ही से लिखा था और वहीं पर अपना स्थान बनाया जिसे गुम्मट साहब व बंगला साहब कहा जाता है।

परमधाम से उतरी शाकुमार की वासना जो औरंगजेब के तन में थी और जिसे शरीयत के कारण सन्देशा नहीं पहुँच सका था, को जगाना आवश्यक था क्योंकि यदि वह इस तन में नहीं जागती तो खेल तो बारहवीं सदी कुराने-पाक के अनुसार समाप्त करना है, वह अभी रोक देना पड़ेगा और फिर न जाने

Nijanand App

औरंगजेब की वासना शाकुमार कौन से शरीर में जाये और कब जागे यह नहीं कहा जा सकता। सतगुरु धनी देवचन्द्र जी ने स्पष्ट कह दिया था कि जब तक दोनों सखियाँ जागकर जाहिर नहीं हो जातीं, तब तक यह ब्रह्माण्ड खड़ा रहेगा, यदि आपके प्रयत्न से वह जाग जाती है, तो इस ब्रह्माण्ड को लय करके यहाँ के सब प्राणियों, पशु, पक्षियों, वन, पेड़ों सहित सभी को आठ बहिश्तों में पहुँचा कर परमधाम चल सकते हैं, अन्यथा मेरे बाद पता नहीं कब तक उस शाकुमार सखी को सन्देश मिले और वह कौन सा तन धारण करे और कब वह जाहिर होकर चले और खेल खत्म हो। श्री प्राणनाथ जी के मुख से सारी बातें सुनकर श्री छत्रसाल जी ने औरंगजेब को सन्देश भिजवाने का बीड़ा उठाया और श्री प्राणनाथ जी को हाथी पर बैठाकर साथ लेकर कालपी गये। कालपी उस समय मुसलमानों का ज्ञान का केन्द्र था। यहीं से सब मुसलमानों के मौलाना काजी शिक्षा प्राप्त करते थे। वहाँ जाकर श्री प्राणनाथ जी ने सबको कुराने-पाक के अनुसार सब बातें खोल कर खुद को इमाम-मेंहदी जाहिर किया और वहाँ के काजियों से इमाम-मेंहदी के जाहिर होने के वसीयतनामे औरंगजेब को भिजवाये। परन्तु शरीअत के मानने वालों ने वह भी उनके पास न पहुँचने दिये। अनेक प्रयत्न श्री छत्रसाल जी ने भी किये परन्तु शाकुमार की वासना न जाग सकी। इस कारण इस खेल को लम्बा करना पड़ा। श्री प्राणनाथ जी ने अपनी वाणी में इस प्रकार लिखा है :

ए नेक रात रखी कुछ खैंच के, सो भी वास्ते तुम।
ना तो लेते अन्दर, केती बेर है हम।।

श्री प्राणनाथ जी ने सुन्दर साथ को अन्ततः सम्बोधित करते हुए कहा कि ऐ मोमिनो! तुम्हारे कारण इस रात्रि के खेल को रोकना पड़ा अन्यथा इस रात के खेल को फज्र करके इसे हटाने में मुझे क्षण की देरी नहीं लगनी थी।

श्री प्राणनाथ जी ने कहा कि हे छत्रसाल ! संसार के सभी ग्रन्थों तथा शास्त्रों के अनुसार छः दिन की यहाँ की लीला मुझे करनी थी। पहले दिन में बृज का खेल किया, दूसरे दिन रास का खेल किया, तीसरे दिन मुहम्मद के रूप में आकर खेल किया, चौथा दिन सतगुरु श्री देव चन्द्र की लीला का खेल हुआ, पाँचवाँ दिन मेरा था जो मैंने इस संसार में क्षर से लेकर परमधाम तक की सारी लीला को जाहिर करके तारतम रूपी कुन्जी को अब आप मोमिनो को सौंप रहा हूँ और श्री कुलजम-स्वरूप स्वसं वेद रूपी किताब में सारा विस्तार लिख दिया है। श्री राज के हुक्म से मेरे पाँचवें दिन की लीला समाप्त हुई और मैं अब यहीं पन्ना में

विश्राम करूँगा। छटे दिन की लीला का सारा भार मोमिनों पर है। यह छठा दिन मोमिन (ब्रह्म-सृष्टि, ब्रह्ममुनि) जो आप लोग हैं, का है। संसार में परमधाम की सारी लीला को जाहिर करके सब दुनियाँ को एक धर्म का रास्ता बताकर श्री राज जी श्री प्राणनाथ जी को सब में जाहिर करके बाकी बचे सुन्दर साथ को जगाकर संसार को मोक्ष देने का पूरा अधिकार, आप पर छोड़ा है। मेरी नजर आप सब सुन्दर साथ पर लगी रहेगी। मैं पदमावती पुरी धाम में बैठा हूँ। जब आप सब ब्रह्म-सृष्टियों को जगा लोगे तो मैं खेल समाप्त करके सबको साथ लेकर अपनी सातवें दिन की लीला जो योग माया के अखण्ड ब्रह्माण्ड में होगी, करूँगा। इसमें सबका हिसाब लेकर तुम मोमिन (ब्रह्म-सृष्टियों) की तथा अपनी साहिबी को सब में जाहिर करूँगा। उस समय यह सारा संसार तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश सहित सभी देवी-देवता वहाँ तुम्हारे सामने हाथ जोड़कर मुक्त होने की प्रार्थना करेंगे। यह सारी लीला सातवें दिन की योग माया के ब्रह्माण्ड में होगी। आप लोग सारे संसार को तारतम वाणी का सन्देश देकर सबको उस एक परमात्मा के विषय में बताओ कि वह एक श्री प्राणनाथ जी ही सबके परमात्मा हैं और जो तुम्हारी बातों पर विश्वास करके मेरी साहिबी को स्वीकार कर मुझे परमात्मा मानेगा, मैं उस को बिना दोजख अथवा नरक की आग में जलाए मोक्ष का अधिकारी बनाकर सबसे पहले मुक्त करूँगा। जो लोग तुम्हारे इन सन्देशों को न मानकर मुझ पर ईमान नहीं लायेंगे, उन सबको इस प्रकार के नरक (दोजख) में जलाकर साफ करने के बाद मुक्ति मिलेगी। संसार के सभी हिन्दुओं, मुसलमानों, सिखों व ईसाइयों तथा यहूदियों को बता दो कि जिसके आने की तुम लोग प्रतीक्षा कर रहे हो, वह आ गये हैं और उन्होंने आकर सारे संसार को उस एक की पहचान करा दी है। हे दुनिया वालो ! उसके बताये रास्ते पर चलकर सब एक दीन हो जाओ अन्यथा जब इस ब्रह्माण्ड को हटा दिया जायेगा तथा तुम सब लोगों को सातवें दिन योगमाया के ब्रह्माण्ड में खड़ा किया जावेगा। तुम सबको पछतावे के सिवा कुछ हाथ नहीं आयेगा। यह भी बता दो कि जो कुछ तुम्हारे धर्मों के ग्रन्थों में मैंने लिखवाया था कि मैं आकर जाहिर करूँगा, सो सब जाहिर कर दिया है। आप लोग सब अपना-अपना भ्रम निकाल कर स्वीकार करो। यह सन्देश सारे संसार के प्राणियों के लिए है ताकि वक्त आखिरत में कोई यह न कहे कि उसे खबर नहीं मिली। मैंने बाईबल में लिखे इस उदाहरण को सत्य किया है कि जब वह खुदा खुद आयेगा तो उसकी उम्मत, ब्रह्म-सृष्टि, मोमिन, ब्रह्ममुनियों को अपना चेला नहीं कहेगा, वह आकर उन सबको अपना साथी कहेगा। संसार में और जो

Nijanand App

दूसरे अवतार पैगम्बर आयेंगे वह दुनिया वालों को अपना चेला, तावेदार, शिष्य आदि शब्दों से सम्बोधित करेंगे। यह उनकी खास पहचान होगी कि उनके मानने वाले उन्हें अपना धनी कहेंगे और स्वयं सब लोग उनके साथी कहलाते हुए सुन्दर साथ की पदवी पायेंगे। इस तरह श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि आप मोमिन मेरे साथी, सुन्दर साथ हो और अब छठे दिन मेरी वाणी को सब में जाहिर करो। कुराने-पाक में लिखा है कि जुम्मे के दिन अर्थात् छठे दिन मोमिनों को नमाज पढ़ाकर खुदा अपने साथ ले जायेगा, तो ऐ मोमिनो! ब्रह्म-सृष्टियो! ब्रह्ममुनियो! साथियो! मेरे प्राणधार! सुन्दर साथ जी! यह छठा दिन तुमको दिया है। मेरी वाणी ही मेरी नमाज है। तुम इसे सारे संसार में जाहिर करके सब को मुक्त होने का अवसर प्रदान करो। यही मेरी तुम लोगों को नमाज पढ़ाना है।

इस प्रकार सुन्दर साथ तथा श्री छत्रसाल जी को विस्तारपूर्वक बताते हुए सारे विश्व को उपरोक्त सन्देश दिया और सम्वत् सत्रह सौ इक्यावन (1751) के साल में अपने नश्वर शरीर को संसार की मर्यादा को पूरी करते हुए बिना प्राणों को छोड़े समाधिस्थ होकर पन्ना जी के गुम्मट साहब में नीचे एक कमरे में बैठ गये। इसके बाद श्री छत्रसाल जी को ही सिर्फ नीचे जाने की आज्ञा थी। श्री छत्रसाल जी बराबर दो साल तक श्री प्राणनाथ जी के पास जाकर सलाह-मशविरा करते रहे और दो साल बाद फिर छत्रसाल जी को आज्ञा हो गई कि दरवाजा बन्द कर दिया जाए। तब से आज तक वह दरवाजा बन्द है।

सुन्दर साथ (ब्रह्ममुनि) श्री प्राणनाथ जी के मुखार-विन्द से उतरी ब्रह्मवाणी श्री कुलजम-स्वरूप स्वयं वेद को ही मन्दिरों में पधरा कर उन्हीं को साक्षात श्री प्राणनाथ जी का स्वरूप मानकर उनकी पूजा करते तथा उसी को विधिवत पढ़ते हैं। उनकी लीलाएँ उनके मुखारविंद से "बीतक साहब" में लिखी है यह सभी को सुनाई जाती है।

संसार के सभी धर्मावलम्बियों से अनुरोध है कि वह लोग इस वास्तविक तथ्य को पहचानें और पूर्ण-ब्रह्म सच्चिदानन्द, आखर-उल-जमा इमाम-मेंहदी, आखरी ईसा का सन्देश सुनें ! इस पुस्तक को जो भी पढ़े वह इन बातों पर अमल करके श्री प्राणनाथ जी को परमात्मा मानकर उनके मन्त्र तारतम का जाप करने के लिए इस श्री प्राणनाथ जी की सम्प्रदाय श्री निजानन्द को ग्रहण करके अपना जीवन सफल बनावें और संसार के सबके एक दीन तथा धर्म को मानते हुए अपनी तमाम शंकाओं को दूर कर अखण्ड मुक्ति को प्राप्त होवें।

पुस्तक में लिखी बातों में यदि किसी को कोई अस्पष्टता दिखलाई दे, कोई शंका उठे या कोई प्रश्न पूछना चाहे, तो वह हमारे धर्मोपदेशक जागनी रतन, श्री जगदीश जी आहूजा, श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी, पोस्ट-रतनपुरी, जिला मुजफ्फरनगर में पधार कर अपनी शंकाओं का निवारण कर सकता है। इस आश्रम में श्री जगदीश चन्द्र जी सब ग्रन्थों द्वारा सबके प्रश्नों का समाधान करते हैं।

इस पुस्तक में आपने संसार के सभी धर्म शास्त्रों द्वारा उस पूर्णब्रह्म परमात्मा को जाना। यह संसार कैसे बनते हैं और किस प्रकार मिट कर कहाँ समा जाते हैं तथा संसार का प्राणी किस प्रकार यहाँ पर जन्म लेता है तथा मरने के उपरान्त कहाँ चला जाता है और उस सच्चिदानन्द पूर्ण ब्रह्म के सिवा कोई परमात्मा नहीं है, यह सब जानकारी आपने प्रमाणों सहित प्राप्त की है।

Nijanand App